समर्पण

भगवन् ! नाई जाति ने अपनी पुस्तक मे नाई
जाति को ब्राह्मण बनाने व अपनी जाति
को ब्राह्मण जाति का चाचा सिद्ध करते
हुये समस्त हिन्दु जाति से अपने पैर
पुजवाने का उद्योग किया है अतएव
हिन्दु जाति के ऐसे अपमान व
धर्म के नाश से दुखित होकर
यह ग्रन्थ आपकी सेवा में
अनन्यभाव व आदर बुद्धि
से समर्पण करता हू आशा
है कि दास की इस
तुच्छ भेंट को आप
स्वीकार करेंगे ।

चरणरज सेवक
श्रोत्रिय छोटेलाल शर्म्मा
फुलेरा जि० जयपुर

❋ भूमिका ❋

जब से 'जाति निर्णय' सम्बन्ध में हमारे जाति अन्वेषण व ब्राह्मण निर्णय ग्रन्थ छपकर प्रकाशित हुये हैं तब से 'सप्तखण्डी' ग्रन्थ की लालसा पबलिक में बहुत कुछ बढ़ी और तत्सम्बन्ध में हजारों ही पत्र मंडल कार्यालय में आये जिनका आशय यही था कि येन केन प्रकार से जातिनिर्णय का सांगोपाङ्ग बृहद् सप्तखण्डी ग्रन्थ तय्यार किया जाय। हमारे ग्राहक अनुग्राहकों की इस इच्छा पूर्ति का हम सदैव प्रयत्न करते रहे परन्तु जाति निर्णय के पूर्ण साधनों की प्राप्ति तथा अनुसन्धान की सामग्री व जाति पञ्चायतों व सभाओं से 'जाति निर्णय विधान' के २५१ प्रश्नों के उत्तरों की प्रतीक्षा ही प्रतीक्षा में इतना विलम्ब हुआ। इतने काल में बहुत थोड़ी सी इनी गिनी जातियों ने इन प्रश्नों के उत्तर दिये अतएव अब हमने इस प्रश्नावलि को भी प्रकाशित कर दिया है ताकि अब भी कोई जाति सभायें उत्तर देना चाहें तो उत्तर दे सकी हैं। अत जिन जातियोंके यहाँ से उत्तर न आवेंगे उन को हम, पर दोषारोपण करने का अवकाश नहीं रहेगा क्योंकि 'जाति निर्णय' सप्तखण्डी ग्रन्थ का विवरण अब क्रमश' प्रकाशित होना आरम्भ कर दिया गया है जिस के फल स्वरूप सप्तखण्डी ग्रन्थ का यह पहिला भाग सेवा में भेंट है।

इस प्रश्नावलि के उत्तरों की प्राप्ति के लिये हम वर्षों तक ठहरे रहे और चाहते थे कि यदि प्रश्नावलि के उत्तर जातियों की ओर से आजावें तो ग्रन्थ में कोई त्रुटि न रहे और किसी की मान मर्य्यादा भंग की जाने का दोष भी हम पर न लगे पर जातियों ने इस पर ध्यान नहीं दिया अत जैसा कुछ अन्वेषण व संग्रह हमने किया है, प्रकाशित करते रहेंगे।

जाति निर्णय की सामग्री में हमारी काशी यात्रा बड़ी उपयुक्त सिद्ध हुई क्योंकि काशी में रह कर काशी के अनेकों विद्वान् महामहोपाध्यायों से हमने जाति निर्णय के अनेकों कठिन व विवादास्पद जटिल विषयों पर परामर्श किया तथा फर्रुखाबाद सनातन धर्म महामण्डल के जलसे पर महामहोपाध्याय स्वर्गवासी पण्डित शिवकुमार जी व हम बुलाये गये थे तहाँ मान्यवर पं० लालमणि जी भट्टाचार्य्य बी० ए० एलएल० बी० वकील ने हिन्दू जातियों के प्रति एक विज्ञापन प्रकाशित किया था जिस का भाव यह था कि वे लोग जो अपनी जाति विषय में कुछ जानना चाहते हों पंडित मंडली से मिलकर निर्णय करलें। क्योंकि उस वक्त कुछ नाई, भुर्जी, जाट, गूजर आदि आदि जातियों के लड़के आर्य्यसमाजकीय गुरुकुल में प्रवेश करके जनेऊ पहिन चुके थे तिससे इस नवीन चाल को देख कर पबलिक में असन्तोष सा फैला हुआ था। इस समय हमने भी स्वर्गवासी महामहोपाध्याय जी से अनेकों विषयों पर परामर्श किया था।

इस भाग में दो अध्याय हैं एक तो "जाति निर्णय निदान" तथा दूसरा 'नाई वर्ण मीमांसा' जिन्हें पढ़कर पाठकगण हमें अनुगृहीत करेंगे।

आजकल भारतवर्ष में जिधर देखो उधर ही छोटी छोटी जातियें ब्राह्मण क्षत्रिय बनने को सिरतोड़ प्रयत्न कर रही हैं पर यह उनकी अनधिकार चेष्टा है। और उन के इस कर्त्तव्य से पबलिक में इन जातियों के प्रति उलटा भाव उत्पन्न होता रहता है।

इस ग्रन्थ में दूसरा अध्याय नाई जाति के विवर्ण का है जिस का नाम 'नाई वर्ण मीमांसाध्याय' रक्खा गया है, नाई जाति के कुछ मनचले, आर्य्यसमाजी लोगों ने अपनी जाति के कतिपय सीधे साधे भोले भाले नाइयों को अपने चक्कर में फंसाने की इच्छा से व हिन्दु पबलिक को भ्रमजाल में डालने को ब्राह्मण बनने का

ढकोसला करीब आठ दस वर्ष से, व आर्य्य समाजों के प्रचार के बहुत पश्चात् निकाला है।

इस सम्बन्ध में नाई जाति ने पुस्तक पुस्तिकाओं द्वारा ब्राह्मण बनने का प्रचार करना आरम्भ भी कर दिया, नाई जाति ने इतने से ही सतुष्ट न होकर अपनी जाति की सभा नियत की जिसका नाम नाई महासभा रखने के स्थान में कुलीन ब्राह्मण महासभा रख कर नाई लोग काम करने लगें। इस नवीनता से लोगों पर यह प्रकट किया गया कि अन्य सब सर्वसम्मत ब्राह्मण जाति सभायें अकुलीन ब्राह्मणों की सभाय हैं और ब्राह्मणत्व का दावा करने वाली जो नाई जाति सभा दस पांच वर्ष से स्थापित हुई है वह कुलीन ब्राह्मणों की सभा है और इस विचित्र मिथ्या कल्पना से दूर २ के रहने वाले लोग भी समझने लगे कि यह सभा भी एक प्रकार के यथार्थ असली ब्राह्मणों की ही सभा होगी।

इसके अतिरिक्त नाई जाति की महासभा ने अपनी जाति के एक दो अक्षर ही जानने वाले किसी व्यक्ति को उपदेशक नियत किया जिसका काम यह रखा गया था कि वह भिन्न भिन्न शहर व गांवों में जाकर लोगों को यह सुनावे कि वेद व शास्त्रों से नाई जाति ब्राह्मण वर्ण में सिद्ध हो चुकी है अतएव सर्व साधारण को चाहिये कि वे नाइयों को ब्राह्मण मानें व समझें।

इन महावाक्यों के सिवाय नाई जाति की श्रीकुलीन ब्राह्मण महासभा भारत इटावा नाम्नी संस्था ने एक अहङ्कार भरा विज्ञापन छपवाकर भारतवर्ष के मुख्य २ शहरों के मुख्य २ विद्वान् व धार्मिक संस्थाओं के नाम भेजा जिसके उत्तेजक वाक्य ये थे :—

"विशेष कर सम्पूर्ण धार्मिक सभाओं श्रीभारत सनातनधर्म महामण्डल आदि को सूचना दी जाती है कि यदि उनको नाई जाति के ब्राह्मण मानने में ननुनच हो तो वे शास्त्र द्वारा निर्णय करलें।"

नाई जाति ने अपने ब्राह्मणत्व समर्थन में छोटी २ पांच सात पुस्तकें प्रकाशित करा कर अन्त में अपने जाति भाई रेवतीप्रसाद जी से 'न्यायी वर्ण निर्णय' नामक पुस्तक रचवा कर प्रकाशित की और इस पुस्तक को भी नाई जाति ने भारतवर्ष के मुख्य २ विद्वान व धार्मिक संस्थाओं के नाम विना मूल्य सम्मत्यर्थ भेजी तदनुसार उपरोक्त विज्ञापन व न्यायी वर्ण निर्णय, दोनों वस्तुयें रेवतीप्रसाद जी ने हमारे पास भी भेजीं साथ ही में पत्र द्वारा इन्होंने अपनी नवीन रचना व कर्तव्याऽकर्तव्य पर हम से सम्मति प्रदान करने की प्रार्थना भी की।

जैसा कि इस अध्याय के आरम्भ में ही हम दिखला आये हैं नाई जाति ने अनेकों बार समय २ पर हम से अपने ब्राह्मणत्व की पुष्टि में व्यवस्था व सम्मति लेने का बहुत कुछ उद्योग किया परन्तु दुःख के साथ कहना पड़ता है कि नाइयों की पुस्तकों में "कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा और भानमती ने कुनबा जोड़ा" के सदृश आंय बांय बांय के अतिरिक्त हमने कुछ तत्व नहीं पाया अतएव हम सदैव मौन्य रहे क्योंकि विरुद्ध सम्मति देकर हम नाइयों का जी नहीं दुखाना चाहते थे।

नाई जाति की पुस्तक 'न्यायी वर्ण निर्णय' पर श्री भारत धर्म महामण्डल काशी ने जो अपनी सम्मति प्रकट की है उसके मुख्य वाक्य ये हैं:—

"भानुमति के पिटारे से कुछ यहां वहां के वचन भी अपने मत की पुष्टि के लिये संग्रह कर लेता है—"सच्छूद्रौ गोप नापितौ" यह जन साधारण की धारणा कुछ मपञ्चियों की कपिचेष्टाओं से बदल नहीं सकेगी।"

जब शास्त्रों के ऐसे मत व श्री भारत सनातनधर्म महामण्डल काशी की ऐसी सम्मति थी तब हम नाइयों को ब्राह्मणत्व की उपाधि किस आधार पर दे सकते थे।

नाई जाति के उपदेशक व न्यायी वर्ण निर्णय के रचयिता रेवती प्रसाद जी ने हमें अपना पोषक बनाने को प्रलोभनयुक्त ये वाक्य लिखे व प्रकाशित किये —

"आप जैसे उदार महानुभावों की कृपा से जो दो चार अक्षर मैं जानता हू उन्हींके आधार पर इस 'न्यायी वर्ण निर्णय'का निर्माण किया है इस कार्य्य में आपके रचित पन्थोंसे भी बहुत कुछ सहायता मिली है जिसके लिये मैं आपका अतीव कृतज्ञ हू, एक प्रकार से आपकी आज्ञाओं का पालन और आपके लेखों का अनुमोदन ही किया है आदि आदि।"

इनके अतिरिक्त नाई जाति ने अपनी 'न्यायी वर्ण निर्णय' में जहां हमारे लेखों को कतर ब्योंत करके यानी लेखों को अपने मतलब के से बनाकर छल कपट युक्त भाव से प्रकाशित किये हैं तहां हमें प्रसन्न करने के हेतु अपनी पुस्तक में लिखा है —

"ब्राह्मणानुग्रह" परन्तु इन के ऐसे २ प्रलोभनों में न फंस कर हम सच्चे समालोचक निर्भीकता पूर्वक बने रहे अतएव नाई जाति ने रुष्ट होकर हमें व्यक्तिगत रूप से शास्त्रार्थ का चेलेञ्ज रजिस्ट्री द्वारा भेजा अतएव उसके उत्तर में हमने भी भारतवर्ष के कतिपय मुख्य २ पत्रों में चेलेञ्ज का उत्तर चेलेञ्ज छपवाकर शास्त्रार्थ की प्रतीक्षा कई महिनों तक की। परन्तु अन्त को शास्त्रार्थ से निराश ही होना पड़ा।

नाई जाति ने अपने मासिक पत्र में विजय पताका भी छाप दी और नाई लोग समझने लगे कि भारतवर्ष में सम्पूर्ण लोगों ने नाइयों को ब्राह्मण मान लिया है और अब नाइयों के समक्ष शास्त्रार्थ के लिये उठने वाला कोई भी विद्वान् नहीं है जो नाइयों को परास्त कर सके।

नाई जाति इन सब कार्य्यवाहियों से ही सन्तुष्ट न हुई किन्तु अपनी पुस्तक के अन्त में लिखा है कि:—

नाई रामजी के भाई और ब्राह्मण रामजी के बेटे

इस के अनुसार नाई जाति ने अपने को ब्राह्मण जाति का चाचा बतलाया इस से ब्राह्मण मात्र के लिये बड़ी भारी गाली व ब्राह्मण जाति के अपमान की वार्त्ता है।

नाई जाति ब्राह्मण जाति का चचा बनकर ही प्रसन्न न हुई किन्तु उसने अनेकों विरोध सूचक व अपमान जनक वाक्य छपवा कर हिन्दु मात्र का जी दुखाया है; यथा:—

"(१) जन्म से लेकर मरण पर्य्यन्त जितने शुभ काम होते हैं हम नाई लोग ही करते हैं।

(२) हिन्दु बिना चोटी के नहीं हो सकता, चोटी रखना नाई का काम है, अर्थात् हिन्दु का बनाना नाई का काम है।

(३) जिन राजाओं और महाराजाओं के चरण छूना कठिन है उनके सिर पर नाई का हाथ प्रति सप्ताह कम से कम दो बार फिरता है।

(४) आधी गादी बैठचो माथा ऊपर हाथ=महाराजाधिराज की आधी गादी पर बैठकर माथे पर हाथ धरता है इसलिये नाई नीच नहीं।

(५) संसार का गुरु ब्राह्मण, ब्राह्मण का गुरु संन्यासी होता है, जो नाई सन्यासी का मुंडन करता है वह नीच कदापि नहीं हो सका।"

इन सब कारणों को देखकर अनेकों भद्र जनों ने नाई जाति के निर्णय सम्बन्ध में हमें कलम उठाने की प्रेरणा की तदनुसार सप्तखण्डी ग्रन्थ का यह पहिला भाग नाई वर्ण मीमांसाध्याय सेवा में भेंट है।

छापाखाना हम से बहुत दूर होने के कारण इस पुस्तक में कई ऐसी भद्दी अशुद्धियें रहगयी हैं जिनके लिये हम दुःख प्रकाश करते हुये आशा करते हैं कि पाठक सुधार कर पढ लेंगे।

हम पाठकों से यह भी विन्ती करते हैं कि इस पुस्तक में यदि कहीं पर कोई बात मिथ्या, व कोई भूल व किसी के जी दुखाने वाली जान पड़े तो पाठक हमें सूचना दें ताकि संशोधन किया जा सके।

निवेदक—
श्रोत्रिय पं० छोटेलाल शर्म्मा

जाति निर्णय निदान

हमारे प्रिय पाठकों को ज्ञात होगा कि पहिले यह निश्चय किया गया था कि हमारे ये २५१ प्रश्न गुप्त रक्खे जाय, और केवल वर्ण व्यवस्था कमीशन व मंडल की धर्म्म व्यवस्था सभा के विद्वान महात्मागण ही इन्हें जानें तथा इनकी प्रति लिपि वर्ण व्यवस्था कमीशन के सदस्यों को ही दीजाय कि जिससे वे जाकर इन प्रश्नों द्वारा जाति निर्णयार्थ अन्वेषण कर के अपनी रिपोर्ट मंडलस्थ धर्म व्यवस्था सभा में पेश करें जिससे उस जाति विशेष को मंडल से व्यवस्था दी जा सके। हमारा जाति अन्वेषण प्रथम भाग निकलने के पूर्व जब हम यत्र तत्र निष्पक्ष भाव से अपने इन प्रश्नों द्वारा जाति अन्वेषण की तहकीकात करते फिरते थे और तत्सम्बन्ध में समाचार पत्रों द्वारा सर्व साधारण को अपनी जाति अन्वेषण की सूचना भी दी थी तथा जाति निर्णयार्थ विज्ञापनों पर विज्ञापनों द्वारा हिन्दु पबलिक को सूचना देने व जाति निर्णय सम्बन्धी हमारे व्याख्यानों का ताता शहरों में बंध जाने से हमारे प्रश्नों की चर्चा सर्व साधारणों के कानों में बड़ी उद्विग्नता व भयभीतिता के साथ पहुंचती थी और प्राय: बड़े २ दिग्गज विद्वानों को भी भयभीत हो जाना पड़ता था और सर्व साधारण मनुष्य तो २५१ प्रश्नों के नाम से ही हौवा की तरह डर जाते थे परन्तु यथार्थ में ये प्रश्न कोई ऐसे कठिन भी नहीं थे कि जिनके लिए इतने इतने सन्देह किये जाय, तथापि ऐसे सरल भी नहीं थे कि कोई चलता फिरता मनुष्य इन प्रश्नों का उत्तर दे सके। हमने जाति निर्णयार्थ प्रश्नों का उत्तर भली

(हाशिया: प्रश्नों की महत्त्वता)

(हाशिया: प्रश्नों की भयभीतिता)

प्रकार पाने के लिये ही समाचार पत्रों में विज्ञापन छपवाये व नोटिस छपवा २ कर शहरों में बांटे थे । तब प्रायःहिन्दु पब्लिक ने हमारी इस विनीत सेवा पर कुछ विशेष ध्यान न दिया और कहीं २ किसी २ जाति के समुदाय व अग्रगन्ताओं ने उत्तर देना चाहा भी तो उन प्रश्नों को अपने पास रखकर कुछ काल पश्चात् उत्तर लिखकर भेज देने को कहा परन्तु ऐसा करना हमने इस कारण उचित नहीं समझा कि प्रश्न इन्हें देकर कालान्तर में उत्तर आने से ऐसा सम्भव हो सक्ता है कि उत्तर देने वाले लोग इन प्रश्नोंके उत्तर विद्या विचक्षण व परम अनुभवी ब्राह्मण विद्वानों से पूछ २ कर ऐसे ढंग से लिख देंगे कि जिससे ये द्विज प्रमाणित हो सकें और ऐसा होने से सब काता पींदा कपास हो जाता अर्थात् जिस प्रकार का तथ्य व यथार्थ निर्णय हम करना चाहते थे उस प्रकार का न होकर विशेष गोलमाल होती अतः हम उन सज्जनों की आज्ञा पालन में असमर्थ हो जाते थे ।

हमारा उद्योग

प्रश्नों की संख्या २५१ जानकर बहुत सी जातियें तो २५१ प्रश्नों के नाम से ही डर गई और चुप हो बैठीं । हां बहुतसी जातियों में से कोई कोई उत्तर भी देना चाहती थीं लेकिन वे भी प्रश्नावलि की प्रतिलिपि लेकर कुछ काल पश्चात् देना चाहती थीं पर यह हमारे नियम विरुद्ध होने से हमने यह प्रश्नावलि किसी को घर बैठे नहीं दी एक दो जातियों के सज्जन उत्तर देने लगे पर दस पांच प्रश्नों के उत्तर देने पर वह भी यह कहकर चुप हो गये कि इतने प्रश्नों का उत्तर देना दो चार की शक्तियों के बाहिर है। हम चाहते थे कि अदालत की तरह प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लिया जाय तथा तर्क वितर्क के साथ प्रश्नोत्तर हों पर ऐसा किसी जाति ने स्वीकार नहीं किया इस तरह सब प्रकार से उदास हो कर हमें चुप हो जाना पड़ा । तब जो कुछ हमने संग्रह किया था उसका फलरूप "जाति अन्वेषण" नामक

निष्पक्ष अन्वेषण

पुस्तक का प्रथम भाग प्रकाशित किया और उसमें साङ्केतिक रूप से हमने अच्छे व बुरे सब ही प्रकार के प्रमाणों का सग्रह निष्पक्ष भाव से कर दिया और प्राय जातियों के निर्णयों के अत में इन २५१ प्रश्नों के उत्तर न आने की भी सूचना हमने दे दी थी हमारी जाति अन्वेषण प्रथम भाग को हाथों हाथ लेकर जिन लोगों ने हमारा साहस बढाया उन के लिये परमात्मा का धन्यवाद व सर्व साधारण की कृपा के हम आभारी हैं हमारी जाति अन्वेषण को देख कर इन २५१ प्रश्नों को देखने व उन के उत्तर देने की लालसा हिन्दु पब्लिक में बढी और पत्रों पर पत्र प्रश्नावलि की कापी भेजने को आने लगे परन्तु प्रश्नावलि लिखित होने व छपी न होने के कारण हम पब्लिक की इस आज्ञा को पालन न कर सके सर्व साधारण की चाह इस प्रश्नावलि को देखने को और भी अधिक बढी तदर्थ कई सभा व जातियों के लोग हमारे मंडल कार्यालय को देखने आये और

जाति हितैषियों का आगमन

प्रश्नावलि को दिखा देने की हमसे याचना की उनकी इस इच्छा की पूर्त्ती हमने अपने समक्ष कर दी अर्थात् अपने सन्मुख ही हमने उनको यह प्रश्नावली दिखला दी। उनमें से बहुतों ने हम से यह भी चाहा था कि वे हमारे यहां से इन प्रश्नों की नकल कर ले जाय परन्तु ऐसा कर देना नियम विरुद्ध था अत ऐसा नहीं किया गया ज्यों २ हमारी जाति अन्वेषण व ब्राह्मण निर्णय ग्रन्थों का प्रचार देश में बढा त्यों २ सर्वसाधारण की उत्कण्ठा हमारी इस प्रश्नावलि को देखने को और भी अधिक बढी और पत्रों पर पत्र मांग के आने लगे क्योंकि लोगों की यह इच्छा थी कि बीस २ पचीस २ कापियां मंगवा कर जाति के मुख्य २ विद्वानों को एक २ दे दी जाय ताकि सब लोग उसे देख कर वर्ण व्यवस्था कमीशन के समक्ष कुछ उत्तर दे सकें परन्तु प्रश्नावलि के लिखित व गुप्त होने के कारण हम सर्व साधारण की इस

आकांक्षा को भी पूर्ण न कर सके अनेकों जाति सभा व जाति पंचा-

मुद्रितार्थ आवेदन निवेदन

यतों के मुखिया लोग प्रायः हम से प्रश्नावलि छपवा देने के लिये आवेदन निवेदन करते थे तदनुसार प्रश्नावलि को छपवा देना हमारे विचाराधीन था।

इतने ही में हम पर आगरा, मथुरा, अलीगढ़, और हाथरस वासी समुदाय, जो विशेष रूप से अजमेरनगर के *Railway Workshap and Office* यानि रेल के दफ्तर व पुतली घर में नौकर हैं। उनकी ओर से हम पर मान हानि जनक अभियोग हमारे ब्राह्मण निर्णय ग्रन्थ के पृष्ठ १६४ से १६८ तक के लेख पर चला जिस में माननीय बाबू गौरीशंकर जी बी० ए० बैरिस्टर पटला तथा पं० मांगीलाल जी शर्मा बी० ए० एल० एल० बी० वकील हाईकोर्ट अजमेर ये दोनों सज्जन हमारे क़ानूनी सलाहकार थे जिन्होंने हमारे २५१ प्रश्नों में घटत बढ़त करके हमारी इस प्रश्नावलि को और भी सुदृढ़ बना दिया जिस ही के कारण मुद्दई से करीब दस पेशियों तक बराबर ज़िरह होती रही और अनेकों हमारी उपयोगी बातें मुद्दई ने स्वयं अपने मुख से कह डालीं अदालत में अभियोग श्रवणार्थ सैकड़ों मनुष्यों की भीड़ हुआ करती थी और जिस समय हमारे माननीय मिस्टर बैरिस्टर जी घुमा फिरा कर मुद्दई से प्रश्न करते थे तब लोग आश्चर्य्य में सुन २ कर रह जाते थे। और लोगबाग हम से आकर यह कहा करते थे कि वादी की ओर तीन तीन वकीलों के होते हुये भी बैरिस्टर साहब व पंडित जी खूब काम करते हैं अतः इस अभियोग के कारण जाति सम्बन्धी अनेकों गूढ़ व महत्वता पूर्ण प्रश्नों का भी पता लगा अतः उन सब को भी इन २५१ प्रश्नों में ही अपने २ उचित स्थानों में सम्मिलित करके हमने इस प्रश्नावलि को सोना व सुगन्ध बना दिया है। क्योंकि हमें इस अभियोग से यह निश्चय हो गया कि प्रश्नावलि के छपवा

देने में कोई हानि नहीं है। तदनुसार ही यह प्रश्नावलि प्रकाशित की गई है।

वर्णाश्रम धर्म विषयक हल चल

पाठक वृन्द! प्रिय सनातन धर्मियों!

आज कल नई रोशनी व आर्य्यसमाज के प्रचार के कारण चहुं ओर प्रत्येक मनुष्य व छोटी २ जाति में जहां उन्हें भिन्न २ विद्यायें तथा शिल्प कलादि की उन्नति तथा जाति सुधार व कुरीति निवारणादि आवश्यकीय कार्य्य करने थे तहां इन सब बातों को लोगों ने एक ओर रख कर सब कोई छोटी से छोटी जातियों तक के लोग अपने यथार्थ वर्ण में से ऊंचे वर्ण में बढ़ने को अग्रसर हो रहे हैं। समय के प्रभाव से अपठित हो या पठित उच्च हो या नीच, शूद्र हो या महाशूद्र तथा अन्त्यज तक भी उच्च वर्ण में बनने की चेष्टा कर रहे हैं सब कोई झट पट अपने नाम के अन्त में शर्म्मा, वर्म्मा, तथा गुप्त लगाने लग जाते हैं तथा "दास" कोई लगाना ही नहीं चाहता ऐसी दशा में सब वर्म्मा, शर्म्मा, गुप्त ही बन जायगे तब शूद्र भी कोई रहेगा या नहीं यह ही विचारणीय विषय है।

हमारे मंडल कार्य्यालय में नित्य प्रति ऐसी २ जातियों के

अनेकों पत्र

अनेकों पत्र हमारे पास आया करते हैं जो यथार्थ में नीच हैं जब उनसे उनकी पैदाइश पूछी जाती है तब झट पट वे कहने लगते हैं कि हम ब्रह्मा से पैदा हुये अथवा चाहे जिस ऋषि का नाम लेकर कह देते हैं "कि हम अमुक ऋषि की सन्तान हैं" कोई व्याकरण का सूत्र लगा कर अपनी जाति के नाम को अपभ्रंश सिद्ध करके उच्च बनने का उद्योग कर रही हैं कई जातियें तो इस समय दूसरी जातियों के अन्तर्गत अपने को कहने लग गई हैं। शिल्पी मात्र ब्राह्मण वर्ण में, गूजर, जाट, अहीर, कुर्म्मी, माली, कहार, आदि २ क्षत्रिय वर्ण में तथा तेली, तमोली,

कोरी, नाई, वारी, आदि २ जातियें वैश्य वर्ण में होने का दावा करती हैं नाइयों का समुदाय ब्राह्मण वर्ण में होने का भी दावा करता है। इस ही तरह कुलवार, कलाल, गड़रियें, कस्योधा, रैन, कोली, विश्नोई, रंगी, रावा, भरतिया, सुनार, दर्जी, छीपा, लोधा, गोंड, गुड़िया, कठेरा, कुम्हार, भड़भूजा, पटवा, लखेरा, चूड़ीहार, मणिआर, नायक, ओढ आदि २ अनेकों जातियें क्षत्रिय होने का दम भरती हैं। और तद्वत् व्यवस्था चाहती हैं। इनमें से किसी किसी का कथन ठीक भी है और किसी का नहीं भी, कहने का भाव यह है कि नीच वर्ण में कोई भी रहने को प्रस्तुत नहीं। यहाँ तक कि मोचियों का कथन है कि:—

"मुच् मोचने रक्षायाम्" धातु से "मोक्षी" शब्द सिद्ध होता है जिसका अर्थ रक्षा करने वाले के हैं और इस ही "मोक्षी" शब्द का अपभ्रंश 'मोची' हो गया इस प्रकार प्रत्यक्ष रूप से जूते बना कर मनुष्य मात्र की हम रक्षा करते हैं और रक्षा करना क्षत्रियों का धर्म है अतः हम मोची लोग क्षत्रिय वर्ण में हैं इस ही से मिलता जुलता सा चमारों का कथन है वे अपना गोत्र 'वाराह' बतलाते हुये अपनी पुष्टि में चर्म पुराण रचवा कर छपवा दिया है और वे क्षत्रियों में अपनी गणना करते हैं, भंगियों का कहना है कि हमारा गोत्र "वाल्मीकि" है अतः हम द्विज क्यों नहीं? धोबियों का कथन है कि सम्पूर्ण प्रकार के मैल हम हिन्दू जाति के धो कर उन्हें सुख पहुंचावें फिर भी हम हिन्दुओं के कूओं व मंदिरों पर चढ़ नहीं सकते। माहौर व महाजन* जाति के प्रति लोग संदिग्ध विचार रखते हैं।

---

*इन्हें हम एक अच्छी जाति समझते हैं फिर भी सर्व साधारण का व्यवहार इन के साथ अच्छा नहीं है पूर्वोक्त जातियों में से अनेकों उत्तम जातियां हैं परन्तु इनको सर्वसाधारण सुदृष्टि से नहीं देखता अतः इन के दुख से हम चिन्तित हैं।

ऐसी ऐसी कठिन समस्याओं युक्त अनेकों पत्र हमारे मण्डल कार्य्यालय में वर्णव्यवस्थार्थ आया करते हैं, इन सब समस्याओं का मूल कारण आर्य्यसमाज है और वर्ण व्यवस्था सम्बन्ध में आर्यसमाजियों में भी एक मत नहीं है अर्थात् आर्यसमाज को बाबू पार्टी का वर्ण

आर्य्य सामाजिक वर्णव्यवस्था क्रम

व्यवस्था निर्णय क्रम अलग है तो ब्राह्मण पार्टी का क्रम निराला ही है क्योंकि आर्य्यसमाज के आचार्य्य श्री दयानन्द के सिद्धान्त वर्ण व्यवस्था विषय में थे उनमें भी अब बडा हेर फेर किया जा कर खेंचातानी से अर्थ निकाले जा कर नये अर्थ लगाये जा रहे हैं। इस प्रकार का विवाद एवं शास्त्रार्थ जो आर्य्यसमाज व कविरत्न प० अखिलानन्द जी के बीच बहुत दिन तक चलता रहा उस से भी सिद्ध है कि वर्ण व्यवस्था विषयक सत्यार्थप्रकाश आदि के लेखों ही से कविरत्न जी निज पक्ष का समर्थन करते थे और ब्राह्मण पार्टी उस का पोषण करती थी तो आर्यसमाज की बाबू पार्टी उन्हीं लेखों द्वारा खेंचातानी से अपना नवीन वर्ण व्यवस्था क्रम स्थापित करती थी। आर्यसमाजों के गुरु स्वामी दयानन्द जी सन् १८८१ में जिन दिनों जयपुर में निवास करते थे तब चौबे कन्हैयालाल जी ने पत्र द्वारा उन से कुछ प्रश्न पूछे थे उनमें से 'कायस्थ' जाति के वर्णनिर्णय विषयक प्रश्न अत्यन्त महत्व का था उसका उत्तर स्वामीजी ने अपने पत्र ता० १६ अप्रेल सन् १८८१ पत्र संख्या (ख) ३४ द्वारा उत्तर दिया है —"कायस्थ अम्बष्ठ हैं शूद्र नहीं इस विषय में सक्षेप से लिखा है विस्तारपूर्वक शास्त्रों के प्रमाण दे कर लिखने को समय नहीं है।" (देखो ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार पृष्ठ ३८५ गुरुकुल कांगडी सन् १९१० का छपा) स्वामी जी के इस सिद्धान्तानुसार आर्यसमाज की बाबू पार्टी 'कायस्थ' जाति को स्वामी जी के लेखानुसार वर्ण में मानती है या नहीं यह तो आर्यसमाजी ही जानें।

हम इस विषय में अपना विचार कुछ भी न लिख कर भविष्यत् में लिखेंगे क्योंकि हमारा मत स्वामी जी के अनुकूल नहीं है। आर्यसमाज में मुसलमान ईसाई शुद्ध किये जा कर भी 'वर्म्मा' में ही रख दिये जाते हैं उन के हाथ का जल व प्रसाद ग्रहण करने को भी बहुत से समाजी प्रस्तुत नहीं रहते हैं। इने गिने आर्य समाजियों के अतिरिक्त यह वर्ण व्यवस्था क्रम सब को पसन्द भी नहीं है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि विशेष रूप से आर्य्य सामाजिक लोग ही अपनी २ जाति सभा में घुस कर इस तरह की हल चल व उलट फेर वर्णाश्रम धर्म्म में कराना चाहते हैं। और इस प्रकार की कठिन समस्यायें आर्यसमाज के प्रचार के साथ २ पैदा हुई हैं परन्तु दुःख से कहना पड़ता है कि हिन्दू जाति के वर्ण निर्णय विषय में समुचित् सर्वमान्य प्रवन्ध न सनातन धर्म्म में है और न आर्य्य समाज में ही तब ऐसी स्थिति में हिन्दू जातियें अपना दुःख किसे सुनावें? अतएव इन के दुःख से आर्द्र होकर ही हम ने मण्डल की स्थापना की है और सनातन धर्म के सिद्धान्तों की रक्षा हो, ब्राह्मण जाति की मान मर्य्यादा रहे और दूध का दूध तथा पानी का पानी निर्णय हो यह समझ कर ही यह प्रश्नावली सेवा में भेंट है।

पाठक! इस प्रश्नावलि द्वारा जातियों के निर्णय सम्बन्धी सम्पूर्ण अङ्ग उपाङ्गों को सिकञ्जे में कस दिया है क्योंकि उत्तर आने पर हम दृढ़ता के साथ प्रत्येक जाति को व्यवस्था दे सकेंगे तथा उन के निर्णय तथा उत्पत्यादि विवर्ण की अलग पुस्तक भी तैयार कर देंगे।

क्योंकि हम जहां उपकार बुद्धि से जातियों का निर्णय करना चाहते हैं तहां सनातन धर्म की रक्षा करना हम अपना कर्तव्य समझते हैं। कारण कि किसी जाति व व्यक्ति विशेष को प्रसन्न करने

के हेतु किसी को किसी प्रकार की व्यवस्था न दे पर हम ऐसी व्यवस्था देना चाहते हैं जो सर्व मान्य हो। निष्पक्ष व सनातन धर्मानुकूल हो। हमने अपने अन्वेषण में ऐसी कई जातियों का पता लगाया है जो वास्तव में उच्च हैं परन्तु द्वेष भाव से जनता उन्हें उच्च वर्ण में नहीं मानती। और ये जातियें भी अन्धकार में सोयी पड़ी हैं उन्हें चाहे कोई भंगी की बराबर माने पर उन के सिर में जू तक नहीं रेंगती है। ऐसी दशा में जब तक उन जातियों के यहां से इस प्रश्नावलि का उत्तर नहीं आवे तबतक उनके उद्धारार्थ कुछ भी नहीं किया जा सकता है यही कारण है कि हमारा सप्तखण्डी ग्रन्थ जिसे "वर्ण व्यवस्था कल्पद्रुम" भी कहते हैं आज पांच वर्ष से नहीं निकल सका, और जातियों ने इस प्रश्नावलि का उत्तर भी नहीं दिया अत हमने जून सन् १९२२ तक प्रश्नावलि के उत्तरों की प्रतीक्षा करते रहना पुन निश्चय किया है, इस छ मास की अवधि पूरी हो चुकने पर हम अपना उपरोक्त सप्तखण्डी ग्रन्थ मासिक रूप से प्रारम्भ कर देंगे और जैसे बुरे व भले प्रमाण हमारे पास होंगे हम उन्हें उस ही रूप में प्रकाशित कर देंगे ऐसी दशा में हम दोष के भागी न होंगे।

देरी क्यों हुई ?

हमारे पास अनेकों पत्र इस आशय के आया करते हैं कि "हमारी जाति का वर्ण, निकास, गोत्र, प्रवर, शाखा व उत्पत्ति आदि आदि लिख भेजियेगा हम आपका बड़ा धन्यवाद करेंगे" इस तरह के हजारों पत्र हमारे पास पड़े हैं, पर शोक के साथ लिखना पड़ता है कि पत्र प्रेरक महाशयों ने विचार बुद्धि को काम में नहीं लिया और एक पैसे का कार्ड उठा कर लिख मारा अन्यथा ऐसे निवेदन पत्र लिखने के पहले उन्हें विचार करना चाहिये था कि उपरोक्त कार्ड का उत्तर दे देना कितनी जिम्मेवारी, कितने महान् परिश्रम, व कितने ग्रन्थों का देखकर कितने काल में

आवेदन निवेदन

एक जाति का हाल लिखा जा सकता है ? लिखने वाले क्लर्क को कुछ देना पड़ेगा या नहीं ? कागज, दवात, कलम, स्याही में कुछ खर्च होता है या नहीं ? लिफाफा व रजिस्ट्री आदि आदि डाकखर्च कुछ होगा या नहीं ? सरकारी रिपोर्ट व अन्य प्राचीन ग्रन्थ उपरोक्त कार्य के उत्तरार्थ मोल मंगवाने में महामन्त्री जी का कुछ खर्च होगा या नहीं अथवा कोरम कोर धन्यवाद से ही उपरोक्त सब खर्च चल जावेगा यह किसी ने विचारा ही नहीं।

मुकद्दमेबाजी

हमने प्रायः यह भी देखा है कि जब किसी जाति विशेष व व्यक्ति विशेष पर "जाति निर्णय" सम्बन्धी किसी के साथ मुकद्दमा चल पड़ता है तब लोग हमें रजिस्ट्रियों पर रजिस्ट्रियें व तारों पर तार देते हैं कि "हमारी जाति निर्णय विधायक लेख प्रमाणों सहित लिख भेजिये अथवा अदालत में साक्षी देने के लिये आप आ सकें तो आपको सैकिंड क्लास किराया भेज दिया जाय" पर यह कार्य्य चन्द मिनटों का नहीं था और उन्होंने पहिले से व्यवस्था प्राप्ति के लिये अथवा जाति विवरण जान लेने का व संग्रह करा लेने का उद्योग नहीं किया अतः वे लोग हमारी सहायता से वंचित रहे, क्योंकि घर में आग लग जाने पर कुँआ खोदकर आग बुझाने का प्रयत्न करना नितान्त मूर्खता है।

प्रश्नावलि के उत्तर दाताओं को निम्नलिखित नियमों की पूर्ति करनी होगी।

——:※:——

नियम।

१—प्रश्नों के उत्तर मन्दिर अर्थात् ठाकुर द्वारे में बैठकर देने चाहियें और उत्तरों पर उस जाति के ५१ प्रतिष्ठित व हैसियतदार सज्जनों के हस्ताक्षर शुद्ध देवनागरी अक्षरों में होना आवश्यक है।

२—उत्तरों पर हस्ताक्षर करने वाले सज्जनों को यह शपथ लेनी पड़ेगी कि "हम अपने ईमान व धर्म पर स्थित रहते हुये परमेश्वर को हाजिर नाजिर जानकर श्री गंगा जी की रूह में स्वजाति पक्षपात को त्याग कर उत्तरों की सत्यता पर हस्ताक्षर करते हैं और विश्वास दिलाते हैं कि मण्डल की निर्मित प्रश्नावलि के उत्तर जो कुछ हमने लिखे हैं वे सर्व सत्य हैं और हमारे सिद्धान्त श्री भारत धर्म महामंडल काशी के अनुकूल हैं अर्थात् हम सनातन धर्मी हैं ?*

३—उत्तर किसी व्यक्ति विशेष की ओरसे नहीं होने चाहियें वरन सभा व जाति पञ्चायतों की ओर से होने चाहियें कि जिससे वे उत्तर उस जाति मात्र के लिये तथा सर्व साधारण के लिये माननीय हों।

४—जहाँ की जाति व सभा उत्तर भिजवावें वहां के माननीय २१ प्रतिष्ठित संस्कृतज्ञ सनातनधर्मी ब्राह्मण विद्वानों के हस्ताक्षर भी करा कर भेजें कि इनके उत्तर में जो कुछ लिखा है वह सत्य है और हम लोग इस जाति को अमुक वर्ण में मानते हैं। यदि उस स्थान पर सनातन धर्म्म सभा हो तो अपने उत्तरों की सत्यता में सनातन धर्म सभा का सार्टिफिकेट ही पर्य्याप्त हो सकेगा।

५—प्रश्नों के उत्तर फुलिस्केप कागज़ पर होने चाहियें और वे शुद्ध देवनागरी अक्षरों में एक ओर लिखे हुये हों।

---

* आर्य्यसमाज के सिद्धान्तानुसार प्रश्नावलि के उत्तर नहीं होने चाहिये क्योंकि वहां तो कोई भी शर्मा, वर्मा व गुप्त बन सकते हैं क्योंकि हमने आर्य्यसमाज के समाचार पत्रादि देखे व हजारों समाजिक भाइयों से मिले पर सब के सब अपने का शर्मा, वर्मा, गुप्त ही लिखते हैं मानों आर्य्यसमाज में कोई दास व शूद्र तथा संकरवर्णी सज्जन हैं ही नहीं। अस्तु।

६—प्रत्येक उत्तर के पूर्व प्रश्न की अङ्क संख्या होनी आवश्यक है कि जिससे हमें यह निश्चय होजाय कि अमुक प्रश्न का अमुक उत्तर है ।

७—इस प्रश्नावलि में जहाँ जहाँ सार्टिफिकेट का नाम आया है तदर्थ यदि किसी जाति को सार्टिफिकेट प्राप्त न हो सके तो वह जाति स्वयान्वेषणार्थ वर्णव्यवस्था कमीशन को अपने यहाँ बुला लेवें

—:※:—

सूचनार्थ निवेदन ।

हमारे प्रिय पाठकगण ! जिन्होंने हमारा "जाति अन्वेषण" ग्रन्थ देखा होगा वे भली प्रकार जानते होंगे कि हमने प्रायः अनेकों जातियों के विवर्ण के अन्त में ऐसा संकेत लिखा है कि "इस जाति के सज्जनों ने व जाति सभा पञ्चायतों ने हमारे २५१ प्रश्नों के उत्तर नहीं दिये हैं" इसी भाव को लिये हुये ही हमने किसी जाति का विवर्ण सूक्ष्म, किसी का सूक्ष्मतर तथा किसी का सूक्ष्मतम लिखा है।

कारण यह है कि हम किसी भी दशा में, किसी जाति अथवा व्यक्ति विशेष का जी दुखाना तथा किसी की मान मर्य्यादा भंग करना अथवा किसी को किसी प्रकार का कष्ट पहुंचाना नहीं चाहते हैं। इस ही कारण से हमने बहुत सी जातियों का विवर्ण थोड़ा सा ही लिखकर छोड़ दिया है । इस पर बहुत सी जातियों ने हमारे पास अनेकों निवेदन पत्र भेजे और हमसे इस बात की प्रार्थना की है कि उनकी जाति का विवर्ण विस्तृत होना चाहिये था ।

हमने जाति अन्वेषणार्थ जब कई वर्षों तक देश देश में भ्रमण किया तब हमने अनेकों जातियों का विवर्ण प्रमाण युक्त विस्तृत संग्रह कर लिया था । परन्तु उस सम्पूर्ण को प्रकाशित करना हमने उचित नहीं समझा । यह समझ कर कि हमारे लेख व संग्रहीत

प्रमाणों से किसी जाति व व्यक्ति विशेष को किसी प्रकार की हानि न पहुंचे यद्यपि हमारी जाति विषयक पुस्तकादि छपने से पूर्व, जब हम जाति निर्णय समझार्थ यत्र तत्र भ्रमण कर रहे थे, उस समय कई जाति सभाओं के अग्रगन्ता व सभा के अधिकारी, तथा पंच सर पंचों से हम मिले और उनसे उनकी जाति विषय में, अपनी शंकाओं का समाधान चाहा पर उनमें से अधिकतर सज्जन ऐसे मिले जो अपनी जातिविषयक निर्णय में नितान्त अनभिज्ञ थे। अधिकतर सज्जन ऐसे मिले जिन्होंने यह कहा कि "हमारी जाति में अमुक पुरुष बडा अनुभवी विद्वान् है उसके समीप जाइये वह आपकी शंकाओं का समाधान तथा प्रश्नोत्तर भली प्रकार दे सकेगा"। तब हम उनके पास पहुंचे तब उन्होंने हमारा वृत्तान्त सुन कर अपने किसी दूसरे स्वजाति बन्धु के पास भेजा। और इस ही प्रकार दूसरे ने तीसरे के पास और तीसरे ने चौथे के पास हमें भटकाया परन्तु यथार्थ में हमारा-उनके पास जाने से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं हुआ। अर्थात् वे हमारे प्रश्नों के उत्तर न दे कर उन्होंने अपनी असमर्थता प्रगट की। अधिक मनुष्य ऐसे मिले जिन्होंने हमारे कथन पर जाति अन्वेषण के कर्तव्य पर श्रद्धा ही प्रकट न की। कारण वे अपने घरू कार्य्यों में संलग्न तथा अवकाश रहित थे। अस्तु!

ऐसी दशा में हमने उन लोगों से कहा था कि—"हमारे इन प्रश्नों के उत्तर दे देने में आपका ही बहुत कुछ लाभ है अन्यथा पुस्तक छपने पर सम्भव है कि कोई बात आपको अप्रिय हो।" इसके उत्तर में केवल एक दो सज्जनों ने तो हमें अदालत की धमकी दी थी। परन्तु हमने उन्हें अपना मन्तव्य समझा दिया था। जाति अन्वेषण की यात्रा के समय

हमारा मन्तव्य

जैसा हमारा मन्तव्य था वैसा ही हमारा मन्तव्य अब भी है अर्थात् जो सज्जन हमारे प्रश्नों में किसी प्रकार की भूल व त्रुटि समझ तो उसका खण्डन व समझाया

समाधान हमारे पास आ जाने पर सत्याग्रह के कारण हम सत्य पक्ष को मानने के लिये उद्यत हैं तथा सदैव रहेंगे और अपनी भूल स्वीकार करने में जरा भी सङ्कोच न करेंगे।

अतएव यह प्रश्नावलि प्रकाशित कर के हम सर्व साधारण जाति सभाओं व पंचायतों से प्रार्थना करते हैं कि वे हमारे इन २५१ प्रश्नों का उत्तर भेज कर हमें अनुगृहीत करें। जिससे भविष्यत् में छपने वाले ग्रन्थों में उनका सुदृढ़ व विस्तृत विवर्ण दिया जा सके।

आज कल देश में विशेष रूप से शिल्पी जातियों के निर्णय सम्बन्ध में बड़ा कोलाहल सुनने में आरहा है जिधर देखो उधर ही शूद्र व संकरवर्णी शिल्पी समुदाय भी विशेषतया ब्राह्मण बनने की धुन में रत सुनायी पड़ रहा है इस पर उनके इस कर्तव्य पर भारत का उच्च हिन्दू समुदाय बड़ा आश्चर्य्य व विस्मय करता है यह उचित भी है क्योंकि हमने अपने अन्वेषण में पता लगाया है कि आज कल भारत में मिल व कारखानों तथा पुतलीघरों की अधिकता होने के कारण अन्त्यज लोग भी शिल्पकर्म यानी लकड़ी लोहे का काम करने लग गये हैं पर वे भी ब्राह्मण बनने की धुन में लगे हुये हैं, हाँ सम्पूर्ण शिल्पी मात्र तो शूद्र व संकर वर्ण में भी नहीं हैं परन्तु आज कल शिल्पी जाति के निर्णय के असली व नक़ली की पहिचान करने में बड़ी कठिन समस्या उपस्थित हो रही है अतएव दूध का दूध व पानी का पानी निर्णय हो इसलिये शिल्पी जातियों के निर्णय के लिये हमने उपर्युक्त २५१ प्रश्नों के अतिरिक्त नीचे लिखे ३५ प्रश्न और नियत किये हैं क्योंकि मण्डल सनातन धर्म के सिद्धान्तों की रक्षा करके ही तदनुसार जाति निर्णय करके ही व्यवस्था देना चाहता है।

प्रिय पाठक वृन्द!

भिन्न भिन्न मत

आज कल शिल्पी जातियों के निर्णय के विषय में भिन्न भिन्न मतों का आवेश प्रवेश हो रहा है जिस से सर्वत्र कोलाहल सुनाई पड़ रहा है। और प्रायः सम्पूर्ण

भारतवर्ष के शिल्पोगण एक स्वर से यह पुकारने लगे हैं कि " ब्राह्मण वर्ण में हैं " परन्तु हिन्दु समुदाय इसे स्वीकार नहीं करता है, यह भी देखने में आता है कि प्रत्येक जाति में आर्य्यसमाजी लोग अपनी अपनी जाति सभाओं में घुसकर व पंच पंच लगाकर व एक आध मंत्र के अर्थ की खेंचा तानी करके व अर्थ का अनर्थ तथा भाव का कुभाव निकाल कर अपनी अपनी जाति निर्णय सम्बन्ध में पुस्तिकाएं रच रच कर कोई अपने को ब्राह्मण तो कोई अपने को क्षत्रिय सिद्ध करने लगे हैं यह उनका कर्तव्य सर्वसाधारण को भुलावा देने व उनकी जाति वालों को फुसलाने मात्र का है इस प्रकार की पुस्तिकायें हमारे पास भी अनेकों आयी हैं उनकी समालोचना हम भविष्यत् में छपने वाले ग्रन्थों में करेंगे।

दो चार शिल्पी जातियों के विषय में हमने अपने विचार परामर्श व अन्वेषण भाव से अपने ब्राह्मण निर्णय ग्रन्थ में लिखे हैं उनकी यथार्थता को बढ़ई, लुहार, खाती, नाई, माली, तेली सुनार आदि आदि अनेकों जातियें सम्यक रूप से न समझ कर कुछ का कुछ भाव निकालती हैं अतएव उन वाक्यों को हमने वापिस लेकर भविष्य में पूर्ण विचार करना निश्चय किया है।

धातु व लकड़ी का काम करनेवाली जातियें जिन में अधिकांश संकरवर्णी व नीच जातियों का समुदाय है वे भी; अपने को ब्राह्मण वर्ण में बतलाती हैं।

अतएव ऐसे लोगों के निर्णय के लिये २११ प्रश्नों के अतिरिक्त २१ प्रश्न और निश्चय किये हैं इसलिये अपने को ब्राह्मण कहने वाली जातियों को इन सब ही प्रश्नों के उत्तर देने की आवश्यकता है।

वे पैंतीस प्रश्न इस प्रकार से हैं यथाः—

१–प्रश्न क्या आपकी जाति ब्राह्मण बनने का दावा करती है?

२–दश विधि ब्राह्मणों में से आप कौन से प्रकार के ब्राह्मण हैं ?

३–क्या तुम अपना जाति विवर्ण जानते हो ? यदि हां, तो पूर्णतया लिखो।

४–जिस प्रकार के ब्राह्मण आप अपने को बताते हैं उसमें प्रमाण क्या है ?

५–तुम्हारा आदि निकास कहां से है तुम कहां से कब व किस विधि से यहां आये प्रमाण सहित लिखो ?

६–जिस प्रकार के ब्राह्मण समुदाय में आप होने का दावा करते हैं उस प्रकार के असली समुदाय के साथ आप किन २ बातों में सम्मिलित हैं ? तथा किन २ बातों में वे आपसे तथा आप उनसे भिन्नता रखते हैं ?

७–जो धन्धा आपकी जाति वाले विशेष रूप से कर रहे हैं वही धन्धा उस असली ब्राह्मण समुदाय का है वा नहीं कि जिसके कि अन्तर्गत आप अपने को बतलाते हैं ?

८–लकड़ी व लोहे का कार्य्य आपकी जाति में ही क्यों प्रचलित है और अन्य मैथिल ब्राह्मणों में क्यों नहीं ?

९–क्या आप मिथला के मैथिल ब्राह्मणों की तरह मांस मदिरा खाते पीते हैं ?

१०–मिथिला देश के ग्रामों व शहरों में आप लोगों में से किस २ की क्या २ ज़मीन व ज़ायदाद उदक व जागीर तथा मुवाफी आदि हैं ? यदि हों तो प्रमाण पत्र सहित लिखो ?

११-यदि मांस मदिरा इस देश में आकर नहीं खाते हो तो क्या नहीं खाते कान्यकुब्ज, कशमीरी, बंगाली व पंजाबी कैसे खाते पीते हैं?

१२-सम्पूर्ण शिल्पी जातियें जो मैथिल ब्राह्मण होने का दावा करती हैं वे मैथिल ब्राह्मण हैं या आप?

१३-लकडी लोहे के कार्य्य करने वाली सम्पूर्ण जातियें जो ब्राह्मण होने का दावा करती हैं वे आप में सम्मिलित हैं या नहीं?

१४-आप विश्वकर्म वंशी हैं या नहीं?

१५-क्या संयुक्तप्रदेश तथा राजपूताना के पञ्चगौड ब्राह्मण आपको ब्राह्मण मानते हैं? यदि मानते हैं तो संस्कृतज्ञ २१ विद्वानों की साक्षी भेजो?

१६-पचगौडो के संग आपका कच्चा पक्का (सखरा निखरा) भोजन एक है या अलग अलग?

१७-ब्रह्मभोज व श्राद्धादिकों में आप ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्यों के यहां बुलाये जाते हैं या नहीं? यदि हां तो पांच हैसियतदार रईसों के सार्टीफिकेट अपने उत्तरों के साथ लगाओ? आपके पैर धोकर कौन कौन जातियें पूजतीं हैं?

१८-तुम्हारे में काष्ट व धातु के कार्य्य करने वाले कितने हैं?

१९-तुम्हारा खानपान व बेटी व्यौहार किस समुदाय में होता है? मिथिला देश में किस किस के यहां आपका बेटी रोटी व्यवहार है?

२०—मिथिला के कौन कौन मैथिल ब्राह्मण आपके यहां की सखरी याने दाल रोटी खा लेते हैं? उनके नाम पते लिखो और ग्यारह संस्कृतज्ञ विद्वानों के हस्ताक्षर युक्त पत्र अपने उत्तरों के साथ लगाओ।

२१—आपकी तरह और शिल्पी जातियें जो अपने को मैथिल ब्राह्मण नहीं कहतीं उनके साथ आपका क्या क्या व्यवहार है?

२२—आप उनके साथ बेटी व्यवहार कर सक्ते हैं या नहीं ?

२३—ब्राह्मणत्व की पहिचान क्या है ?

२४—तुम सनातन धार्मिक क्रम से अपने को ब्राह्मण मानते हो या आर्य्यसमाज की रीति से ?

२५—आप अपने गोत्र अवटंक, प्रवर, वेद, शिखा, शाखा, सूत्र, शिव, गणपति, देवी, शर्मा और कुल बताओ क्योंकि लिखा है:—

गोत्र. शर्मावटंकश्चकुलश्च प्रवरा शिखा ।
देवि गणपति, यस्य नवैते ब्राह्मणास्मिता ॥

२६—तुमको कोई बढ़ई लोहार आदि २ भी कह कर पुकारते हैं या नहीं ?

२७—तुमको कोई बसूला पंडित कह कर भी पुकारते हैं या नहीं ?

२८—तुम्हे कोई खुट खुट महाराज भी कहते हैं या नहीं ?

२९—तुममें ब्राह्मणत्व के क्या क्या लक्षण हैं ?

३०—किसी नाम के साथ पण्डित शब्द जोड़कर लिखने पढ़ने व बोलने से क्या कोई मनुष्य ब्राह्मण हो सकता है ?

३१—ओझा, बढ़ई लुहार भी होते हैं ओझा ब्राह्मण भी होते हैं ? ओझा जादूगर भी होते हैं ? ओझा झाड़ा फूंकी करनेवाले भी होते हैं ? अतएव तुम ओझा ब्राह्मणों में से ही हो इसका क्या प्रमाण है ? तुम्हारी जाति में संस्कृतज्ञ विद्वान् कितने व कहां कहां हैं उनका विस्तृत विवरण लिखो ?

३२—तुम्हें चारों वर्णों के यहां से दान दक्षिणा मिलती है या नहीं ? यदि हां तो तद्विषयक प्रमाण पत्र लगाओ ।

३३—तुम सनातनी पञ्चगौड़ों के साथ में श्रावणी कर्म करते हो या नहीं ?

३४—तुम्हारी जाति में परस्पर मिलने जुलने के समय अभिवादन क्रम से आप क्या करते हैं ?

३५—क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र आप से अभिवादन किस प्रकार करते हैं?

नोट—लकड़ी का काम करने वाली जातियों को २५१ तथा उपरोक्त ३५ प्रश्नों के उत्तर देने के अतिरिक्त नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर और देना चाहिये।

१—आपकी जाति में कमीण कितने होते हैं?

२—हिन्दुओं के जो नौ कमीण* हैं उन में आपकी गणना है या नहीं?

३—उच्च हिन्दुओं के यहां से आप लोगों का कमीणों के नेग मिलते हैं या नहीं?

४—हल बनाई, विवाह शादियों में खूंटे व मेख बनवाई तथा पट्टे व वेदी की खूंटियें व श्रुवा तथा मृतक के तीये के लिये टिकटी आदि आदि बनाई का नेग आप लेते हैं या नहीं? तथा उन के यहां की त्योहारी की रोटी, लापसी, चावल आदि लेजाते हो या नहीं?

५—आप जब उन लोगों के यहां जीमते हो तो क्या ब्राह्मणों के साथ एक पंक्ति में बैठ कर जीमते हो? उपरोक्त पांचों प्रश्नों के उत्तर देते समय अपने उत्तरों की पुष्टि में आपकी जन्मभूमि के किसी प्रसिद्ध सनातनधर्मी रईस, लम्बरदार तथा ताल्लुकेदार व जमींदार का सार्टीफिकेट लगाओ।

प्रश्नावलि।

१—जाति का अंग्रेजी व देशी भाषा में मुख्य नाम दूसरे नाम और ये नाम जिन शब्दों से वे बने हों यदि जानते हो तो लिखो?

२—यदि जाति के एक से अधिक नाम हैं तो उन नामों का अर्थ बतलाओ और यह भी बतलाओ कि कौनसा नाम आपकी जाति वाले काम में लाते हैं और कौनसा दूसरे लोग?

---

*१ नाई, २ धोबी ३ मनिहार, ४ कुम्हार, ५ चमार व रैगर, ६ खाती, बढ़ई, सुनार, लुहार ७ पनिहारा, ८ भर्ती, ९ कहार,

३—भिन्न २ देश वा भिन्न प्रान्त की भिन्न भिन्न भाषाओं के कारण अथवा किसी कारण विशेष से आपकी जाति वाले आपकी जाति के नाम को काम में लाते हैं क्या ?

४—जाति के नामों में क्या कुछ भेद उन लोगों के धन्धा, उत्पत्ति स्थान, रहने की जगह व धर्म इत्यादि के कारण से है जिन के लिये वे नाम काम में लाये जाते हैं ?

५—क्या किसी नाम को केवल आपकी ही जाति के लोग काम में ला सकते हैं ?

६—यदि जाति की उत्पत्ति के विषय में व उस स्थान के विषय में जहां से जाति आई थी और फिर जहां २ वह जाति गई है उसके विषय में कोई कथा कहानी हो कहावत हो तो स्पष्ट रूप से वर्णन करो ?

७—क्या जाति वाले अपने को सदा के लिये, जिले में बसे हुए विश्वास करते हैं तो उनके आने के समय में कौनसी ऐतिहासिक घटना हुई थी उस समय किस राजा व बादशाह का राज्य था ? उसको लिखो और यह भी लिखो कि तब से अब तक कितनी पीढ़ियों का बीतना जातिवाले विश्वास करते हैं ? व कुरसी-नामे से जान पड़ता है, यदि उस समय के पट्टे, ताम्रपत्र, शिलालेख, कीर्तिस्तम्भ, व पुरानी लिखतम, दस्तावेज़ स्टाम्प, आदि आदि सरकारी कोई सनद हो तो उसकी अविकल नक़ल उसके साथ लगाओ ?

८—क्या जाति वाले किसी स्थान को अपना उत्पत्ति स्थान व निकास स्थान समझते हैं ?

९—विशेष कर उस स्थान का नाम लिखो जहां से सीधे जाति वाले अपना या अपने पुरुषाओं का आना वर्तमान स्थान पर विश्वास करते हैं ?

इस के सम्बन्ध में कोई किताबी सबूत हो तो लिखो ?

१०—क्या जाति वाले उस स्थान को तीर्थ करने जाते हैं जो आदि में उनके रहने की जगह थी व जिससे उनके आदि में रहने की जगह का पता लगता है ?

११—क्या आपके मृतक जलाये जाते हैं, गाडे जाते हैं अथवा जल में फेंक दिये जाते हैं जहां जिस विधि से ऐसा होता है उस विधि को उस देश के नाम सहित लिखो ?

१२—क्या कोई ऐसा स्थान है जहां पर जातिवाले गाडे जाते हैं व गाडे जाने चाहिये जलाये जाते हैं व जलाये जाने चाहियें अथवा जलमें फेंक दिये जाते हैं व जलमें फेंक देना चाहिये ?

१३—पुरोहित, भाट, चारण, बडवा, जागा, राय, कापडी तथा शुक्र इन में से किसको किस उत्सव पर बुलाते हैं इनमें से जिसको जिस उत्सव पर विशेषतया आप बुलाते हों तो उसका नाम लिखो ?

१३ अ-क्या जातिवाले अपने को किसी पहिले पुरुष व किसी ऋषि की सन्तान बतलाते हैं तो वह मनुष्य वास्तव में कोई था व कोई मनुष्य जाति की उत्पत्ति बतलाने के लिये मान लिया गया है अथवा किसी ऋषि विशेष की सन्तान आप अपने को मानते हैं ?

१४-यदि सजरा (कुरसीनामा) हो तो पहिले पुरुष से वर्तमान पुरुषा तक का वंश वृक्ष लिखो उस पहिले पुरुष का क्या कोई मन्दिर गांव में उस के आस पास में बना है व किसी पहाड पर बना है व किसी अन्य स्थान से लाये हुए पत्थरों से यदि कहीं से लाये हुए पत्थरों से बना है तो कहां व कैसे ?

१५-क्या आप किसी दूसरी जाति को अपनी जाति से,बनी हुई शाखा की नांई निकली हुई समझते हैं या यह कि आप और किसी दूसरी जाति के लोग एक ही देश से आये हैं ?

१६-क्या आप लोगों में धर्म के बदलने व नई रस्मों के जारी होने के विषय में कोई कहावत व कहानी है?

१७-क्या कोई ऐसी कहानी है कि जिससे आपकी जाति वालों का किसी स्मारक चिन्ह, डीह, किला, गांव, की जगह से जिले में कोई सम्बन्ध जान पड़ता है?

१८-जाति का भिन्न २ स्थानों में पूर्वकाल में जाने का पता गांवों के नामों से लगता हो तो लिखो? जैसे छोटा नागपुर के प्लेटो के मुण्डा जाति वालों का पता वहां से बहुत दूर २ के स्थानों तक मुण्डरी गांवों के नामों से और समाधियों से जिसे अब छोटी जाति के हिन्दू पूजते हैं लगता है।

१६—अंग्रेजी व देशी भाषा में उन उपजातियों का नाम लिखो जिन की लड़कियां आपके समुदाय में व्याही जाती हैं? या व्याही जा सक्ती हैं?

२०—उन उप जातियों के नाम लिखो जिनके बाहर आप की जाति के पुरुष अपना विवाह नहीं कर सक्ते हैं?

२१—दोनों प्रकार की उपजातियों के नामों का अर्थ लिखो यदि वे नाम किसी जीव व खाद्य पदार्थ का नाम है तो यह बताओ कि उस नाम की उपजाति के लोग उस जीव का खाद्य पदार्थ का नाम लेने से खाने से हिंसा करने से काटने से जलाने से व किसी अन्य प्रकार के काम में लाने से रोके गये हैं?

२२-ऐसा भी हो सकता है कि क्या किसी उपजाति का नाम किसी वस्तु का नाम हो कि जिसका काम में लाना जाति के लिये मना है व इस का उल्टा उस जाति के लोग यदि किसी पेशे के मनुष्य हैं तो उस औज़ार को पीढ़ी दर पीढ़ी से काम में लाने को व पूजने को बाध्य है?

२३-क्या आपकी जाति से मिलती जुलती कोई दूसरी जातियों के नाम भी हैं?

२४-क्या किन्हीं उपजातियों का नाम किन्ही दूसरी उपजातियां से मिलता है यदि मिलता है तो क्या कारण है और उससे आपका क्या सम्बन्ध है ?

२५-जैसे यदि बड़ी जाति की सेवा किसी छोटी जाति ने की और अपनी जाति का नाम बड़ी जाति के सदृश ही रख लिया तो क्या ऐसा हो सका है ?

२६-यदि ऐसा हो तो क्या कोई ऐसा चिन्ह मिलता है जिससे जान पड़े कि उन्होंने अपनी बड़ी जाति की क्या व किस प्रकार सेवा की जिससे उन्हें यह नाम मिला ?

२७-क्या आपकी जाति में कोई प्रतिनिधि पञ्चायत व शासक सभा है?

२८-उसको क्या कहते हैं और उसका सगठन किस प्रकार से होता है ?

२९-उस के कार्य्य क्या हैं और वह क्या क्या कर सकी है ?

३०-उस के अधिवेशनों में सभापति कौन होता है ?

३१-उस की आज्ञाय किस प्रकार प्रवृत्त की जाती हैं ?

३२-क्या उसका सभापति चिरस्थाई (मुस्तकिल) होता है या समयानुसार बदला जाता है ?

३३-यदि चिरस्थाई होता है तो उसकी उपाधि क्या है ?

३४-सभापति के पद का कार्य कौन करता है जब पैतृक या सभापति बालक हो या अनुपस्थित हो ?

३५-व्यापारी और कारीगर जाति के विषय में पञ्चायत का काम विशेष कर उपयोगी है उसे भली भांति लिखना चाहिये सब से अधिक वहां जहां पर कि उस पेशे को भिन्न २ जाति के लोग करते हों और आपस में व्यापार के कार्य्यों में एका किये हों उनकी पञ्चायत व व्यौपारी समाज में जो सम्बन्ध व झगड़ा होता हो उसको लिखो ?

परस्पर विवाह।

३६–उस सीमा को बतलाओ कि जिसके बाहर या भीतर आपकी जाति के पुरुष अपनी जाति को छोड़ कर अन्य किन २ जातियों की लड़कियां के साथ विवाह कर सक्के हैं ?

३७—आप अपनी लड़कियां को अपनी जाति के बाहर किस २ जाति के पुरुष के साथ विवाह कर सक्के हैं ?

३८—आप अपने लड़के का सम्बन्ध किन २ नातेदारों की लड़कियों के साथ कर सक्के हैं ?

३९–आप अपनी लड़की का सम्बन्ध किन २ नातेदारों के लड़कों के साथ कर सक्के हैं ?

४०–आप अपने लड़के व लड़की का सम्बन्ध करते समय किन किन निषेध बातों को देखते हो ? यदि उन निषेधों का कोई उल्लंघन करना चाहे तो क्या वह कर सक्ता है ?

४१–क्या ये जो निषेध आप अपने में बतलाते हो वे सामाजिक दशा, एक ही स्थल में निवासस्थान व धर्म विरुद्धता व एक ही पेशे के होने के कारण से हैं ?

४२–किन २ धर्म व पंथ की लड़की को आप ब्याह सकते हैं और किस किस की को नहीं ?

४३–आपकी जाति का बींद तोरण मारने किस २ सवारी पर चढ़ कर जा सकता है तथा तुर्रा कलंगी व मोड़ तथा सेहरा इन चारों में से क्या धारण करता है ?

४४—वे कौन कौनसी दशायें हैं कि जिनमें आप दूसरी २ उपजातियों को लड़कियें दे नहीं सकते ?

४५—दुलहिन को दूल्हे के घर में गांव, नातेदारी में पहिले पहल ले जाने की क्या कोई रीति विशेष है जैसे लड़की को कुछ देकर, कौतुकीय युद्ध कर, दोनों को एक साथ भोजन कराकर अथव

किसी अन्य प्रकार विशेष से, भिन्न २ प्रकार के विवाहों की रीति लिखो और यह भी बतलाओ कि ८ प्रकार के विवाहों में से आप की जाति में कौन कौन से विवाह प्रचलित हैं? और यह कहां पर तथा किस विधि से होता है? *

४६-प्रत्येक प्रकार के विवाह में मुख्य सम्बन्ध करने वाला भाग कौन है?

४७-क्या विवाह की रस्म या विधि में ऐसी कोई बात होती है जिससे जान पड़े कि पहिले जबरदस्ती पकड़ कर विवाह प्रचलित था? विवाह के पूर्व जो रस्म या विधि होती है उसम या जो पीछे से किया जाता है उसे भी बतलाओ?

४८-क्या विवाह में ऐसा कोई चिन्ह पाया जाता है जिससे जान पड़े कि पहिले दुल्हिन किसी वृक्ष के साथ ब्याही जाती है व किसी दूसरी प्राकृतिक वस्तु से?

४९-क्या आपकी जाति में कोई पुरुष एक से अधिक विवाह कर सकता है?

५०-आप की जाति में विना ब्याह घर में डाली हुई स्त्री को घर में रख सके हैं या नहीं? यदि रख सके हैं तो किस २ जाति की, तथा किस २ जाति की स्त्री के हाथ की रसोई आप खा सकते हैं?

५१-क्या आपकी जाति में कोई स्त्री पति के जीते जी दूसरा पति कर सक्ती है, यदि कर सक्ती है तो किन २ दशाओं में?

५२-वह पति किस विधि से किया जाता है?

५३-आपके यहां विवाह कौन व किस विधि से कराता है?

---

* भारतवासी हिन्दू जातियों में निम्नलिखित ८ प्रकार के विवाह प्रचलित हैं—

१ ब्राह्म, २ दैव, ३ आर्ष, ४ प्राजापत्य, ५ आसुर, ६ गान्धर्व, ७ राक्षस, ८ पैशाच,

५४–आपकी जाति में कोई स्त्री विधवा होकर पुनः देवर की स्त्री हो सक्ती है क्या? तथा व अन्य किसी भी स्वजाति पुरुष के साथ नाता कर सक्ती है या नहीं?

५५–क्या आपकी जाति में एक स्त्री आपके एक पुत्र को विवाही जाकर अपने उस पति के जीते जी अपने पति के भाई को भी गुप्त रूप से व प्रकट रूप से पति कर सकती है क्या?

५६–क्या आपके यहां कोई कुंवारी लड़की स्वेच्छानुसार किसी भी पुरुष को अपने आप अपना पति मान कर उसके साथ रह सक्ती है?

५७–आपकी जाति में यदि कोई कुंवारी लड़की व कोई स्त्री अपने संरक्षकों की इच्छानुसार किसी पुरुष के साथ गुप्त मैत्री करे तो कर सकती है या नहीं?

यदि कर सक्ती है तो उसके करने की दशा में आपकी जाति वाले उस लड़की व स्त्री के साथ क्या २ व्यौहार करेंगे?

५८–आपकी जाति में विवाह आदि कर्म कौन कराता है? यदि ब्राह्मण कराता है तो उस ब्राह्मण की जाति का नाम लिखो?

५९–विवाह हो चुकने पर किन २ दशाओं में आपके यहां पुरुष स्त्री को तथा स्त्री पुरुष को त्याग सकती है?

६०–आपकी जाति में आपके यहां की स्त्रियां नथ व बिछुए पहिनती हैं या नहीं? यदि पहिनती हैं तो सब से प्रथम ये दोनों गहने स्त्री के लिये कहां व किस प्रकार आते हैं? तथा ये दोनों गहने किस २ समय पहिने जाते हैं और किस किस समय नहीं?

६१–आपकी जाति में विवाह व मंगनी को पक्का करने वाले क्या कोई खास मनुष्य होते हैं?

६२–विवाह पक्का करने में किस २ की मंजूरी की आवश्यकता होती है?

६३-क्या आपकी जाति में लडके-वाले को लडकी के मूल्य स्वरूप में अथवा और किसी बहाने से लडकी के माता पिताओं को कुछ द्रव्य देना होता है ?

६४-आपकी जाति में लडके-वाले की ओर से लड़की के लिये शकुन की कौन २ सी चीजें हैं कि जिन को देना आवश्यक है ?

६५-आपकी जाति में लडकी वाले की ओर से लडके के लिये शकुन की वे कौन २ सी चीज हैं कि जिनको देना आवश्यक है ?

६६-आपकी जाति में स्त्री धन कौन २ वस्तुयें समझी जाती हैं ?

६७-विवाह हो चुकने के उपरान्त क्या कोई ऐसे शारीरिक विकार होते हैं जिन के होने से लड़के व लडकी का विवाह रद्द समझा जाता है ?

६८-आपकी जाति में वे कौन कौन से काम हैं जिन के करने से स्त्री त्याग दी जाती है ?

६९-आपकी जाति में वे कौन कौन से काम हैं जिन के करने से स्त्री पुरुष को त्याग देती है ?

७०-क्या आपकी जाति में तलाक दी हुई स्त्री पुन स्त्री हो सकती है ?

७१-आपके यहां लडकी की विवाह योग्य आयु कम से कम व अधिक से अधिक क्या मानी जाती है तथा उस अवधि के उल्लङ्घन हो जाने पर तत्सम्बन्ध में जाति नियम क्या है ?

७२-विवाह में फेरों के समय आपके यहां विरदावलि कौन पढता है ? आपके यहां राय, भाट, कापडी, चारण रडवे, जागे, डूम व ढाढी तथा शुक्र कौन आते हैं और आपकी जाति की वंशावलि का विवरण किस तरह से बतलाते हैं।

७३-आपके यहां विरदावलि पढी जाती है व शाखोच्चार।

७४-क्या आपके यहां कोई लडकी आजन्म कुवारी रह सक्ती है यदि हां तो किस भेष व नियम से ?

७५-विवाहित स्त्री की सन्तान, नाते लाई हुई की सन्तान, रखुई रखी हुई की सन्तान, विजातीय दोस्ती पुरुषों की सन्तान तथा विधर्मी दो स्त्री पुरुषों की सन्तान आदि आदिकों में परस्पर क्या सम्बन्ध है तथा दाय भाग के समय उनके परस्पर बटवारे में किस २ के क्या २ हक होते हैं?

७६-इन सब प्रकार की सन्तानों की जाति माता के समान होगी व पिता के समान अथवा कोई भिन्न नाम से?

७७-उचित क्रम से पैदा हुई सन्तान अर्थात् सजातीय स्त्री पुरुषों के द्वारा पैदा हुई सन्तान में तथा इन उपरोक्त प्रकार के सन्तानों में क्या भेद है?

७८-क्या आपकी जाति में विधवा स्त्रियों का पुनर्विवाह होता है?

७९-यदि होता है तो किस विधि से और किस किस के साथ?

८०-क्या आपके यहां बड़े भाई के मरने पर छोटा भाई उस अपनी विधवा भावज को अपनी स्त्री कर सकता है?

८१-यदि कर सकता है तो किस विधि व क्रम से?

८२-क्या आपकी जाति में छोटे भाई के मरने पर बड़ा भाई उसकी विधवा भावज को अपनी स्त्री बना सकता है।

८३-आपकी जाति में विधवा स्त्री को अपने श्वसुर की मौरूसी जायदाद पर क्या अधिकार है? क्या वह उसे प्राप्त करके बेच खोच सकती है?

८४-आपके यहां विधवा स्त्री को उसके पति की सञ्चित की हुई जायदाद पर क्या क्या अधिकार है?

८५-यदि आपके यहां कोई विधवा स्त्री अपना पुनर्विवाह नहीं कराना चाहे तो उसको बापौती जायदाद में क्या क्या अधिकार हैं? और यदि पुनर्विवाह कराले तो क्या क्या?

८६-यदि वह विधवा स्त्री अपने कुटुम्ब से बाहिर पुनर्विवाह व नाता करके कहीं चली जाय तो वह अपने श्वसुर तथा पति की सम्पत्ति में से क्या क्या पा सकती है ?

८७-यदि वह अपने कुटुम्ब में से ही किसी को अपना पति मानले तो ऐसी दशा में वह अपने श्वसुर तथा पति की सम्पत्ति में क्या क्या पा सकेगी ?

८८-यदि किसी विधवा के अपने पूर्व पति से कोई सन्तान हो और वह किसी दूसरे को अपना पति करले तो वह सन्तान किस के पास रह सकेगी ?

८९-आपके यहां विधवा स्त्री पति के मरने के कितने समय पश्चात् पुनर्विवाह व नियोग तथा नाता कर सकती है ?

९०-आपकी जाति में विधवा स्त्री अपने आप पति के मरने पर कोई लड़का गोद ले सकती है या नहीं है ?

९१-स्त्री के गर्भाधान के समय क्या कोई धार्मिक क्रिया विशेष की जाती है ?

९२-गर्भाधान के होने के पीछे लड़का व लड़की होने के पूर्व नौ महिने के समय में कब कब व क्या क्या रस्म किये जाते हैं ? क्या इन नौ महिने के काल में कोई पूजन पाठादि भी होता है ? यदि हां तो किस तरह का ?

९३-गर्भावस्था में जो रीति भांति की जाती हैं उनको स्पष्ट रूप से वर्णन करो ? और यह भी लिखो कि उन का असर बच्चे और माता पर क्या होता है ?

९४-लड़का लड़की होते समय स्त्री किस प्रकार बैठती है और सोते में मुख किस ओर तथा पांव किस ओर रक्खे जाते हैं ?

९५-माता की सेवा सौर में कौन करता है और जब बाहिर होती है तब कौन ? कौन कौन से रसूमात लड़का होने पर किये जाते हैं ?

९६–क्या लड़का लड़की होने के कारण, बाप के साधारण कामों में कुछ विघ्न पड़ता है व उस दिन वह काम करना बन्द कर देता है जन्म व मरण का स्यावड़ सूतक आपकी जाति में कितने दिन का माना जाता है ?

९७–ऐसा विघ्न पड़ने का क्या कारण बतलाया जाता है ?

९८–रजस्वला स्त्री के साथ आप क्या व्यौहार करते हैं ?

९९–गोद बैठाने के भिन्न भिन्न रस्मों को स्पष्ट रूप से वर्णन करो किस किस के बालक आप गोद ले सक्ते हैं ?

१००–क्या गोद लेना किसी रीति विशेष से ही पक्का समझा जाता है?

१०१–गोद लिये हुए बालक की प्रतिष्ठा किस रस्म की रीति पर निर्भर है ?

१०२–वह कौनसी रस्म तथा रीति है जिससे बालक का गोद लिया जाना पक्का समझा जाय ?

१०३–जब लड़का व लड़की युवावस्था को प्राप्त होते हैं तो क्या क्या रस्म की जाती हैं ?

१०४–क्या लड़कों की दशा में कोई ऐसा रस्म किया जाता है जिसका अर्थ उनकी जाति के स्याने लोगों में मिलाना होता है ?

१०५–मंगनी की रीति को स्पष्ट रूप से वर्णन करो ?

१०६–इस रीति रस्म में सम्बन्ध कराने वाला भाग कौनसा है ?

१०७–क्या कोई रीति ऐसी हैं कि जिसके होने से मंगनी बदल सकती है ? और कोई ऐसी है जो बिलकुल सम्बन्ध कराने वाली है ?

१०८–आप अपने लड़के व लड़की का किया हुआ सम्बन्ध छोड़ सकते हैं यदि छोड़ सकते हैं तो किन किन दशाओं में ?

१०९–आपके यहां किस उमर में मगनी होती है ?

११०–किसकी स्वीकृति बहुत आवश्यक है ?

१११-मंगनी यदि छोड दी जाय तो क्या जो खर्च पडा है उसको फिर देने की रीति है ? क्या छोडने वाले को दूसरे की हानि स्वरूप कुछ देना पडता है ?

११२-क्या आपके यहां मृतकों के जलाने व गाडने का कोई स्थान विशेष नियत है ? अन्त में मृतक शरीर व राख कहां फेंकी जाती है ?

११३-मृतक के जलाने व गाडने के समय जो विधि की जाती है उसको लिखो ?

११४-क्या कोई रीति पित्रों को साधारण प्रसन्न करने के लिये व निस्सन्तान पित्रों के लिये अथवा उन पित्रों के लिये जो अकाल मृत्यु से मरे हैं की जाती है ? यदि की जाती है तो किस प्रकार की और कब ?

११५-श्राद्ध की रीति का स्पष्ट रूप से वर्णन करो और यह लिखो कि आपकी जाति के लोग श्राद्ध करते हैं या नहीं और आपके यहां श्राद्ध किस किस का किस किस को खिलाते हैं ?

११६-मृतक क्रिया में पुरोहित का कर्म और मन्त्रादि कौन पढता है व कराता है ? आपके यहां निपुत्रा मृतक पुरुष व स्त्री की क्रिया कर्म कौन करता है ?

११७-उन जातियों के यहा जिनके ब्राह्मण क्रिया कर्म नहीं करात उन्हें यह बतलाना चाहिये कि बहिन का बेटा या दूसरा नातेदार लडकियों की ओर का ब्राह्मणों की जगह पर काम करता है क्या?

११८-आप अपने किसी अपवित्र विधर्मी मनुष्य को पवित्र करके अपने में मिला सकते हैं या नहीं यदि हां तो किस विधि से ?

११९-क्या कोई व्यक्ति किसी समय अपवित्र है और पवित्र होने की आवश्यकता पडती है जैसे बच्चा होने के पीछे रजस्वला के समय अथवा मृतक को दग्ध करने पीछे ?

१२०-कितने दिनों तक वह अपवित्रता रहती है और फिर किस प्रकार पवित्र हो जाती है ?

१२१-क्या आप हिन्दुओं के मंदिरों के अन्दर सभा व मंडप तक जा सकते हैं यदि हां तो किन किन मन्दिरों में यदि नहीं तो किनकिन मन्दिरों में नहीं ?

१२२-हिन्दुओं के मुख्य देवताओं में से किस देवता की पूजा करना आप उत्तम समझते हैं और इस उत्तम समझने का क्या कोई कारण है और आप किस किस देवता की मूर्ति को स्वयं छू सक्ते हैं ?

१२३-आपकी जाति के लोग जिस धर्म व मत में आज कल हैं इस धर्म के ही सदा रहे हैं वा इस धर्म में सब एक दम आ गये हैं वा धीरे धीरे कब व कैसे इस धर्म में आये उनके वर्त्तमान रहने की जगह में आने के पहिले व पीछे सो सब वर्णन करो।

१२४-क्या आपकी जाति के लोग आस पास की जगहों में दूसरे धर्म की शिक्षाओं को मानते हुये पाये जाते हैं यदि हां तो किस किस धर्म व मत की। हिन्दुओं की चारों सम्प्रदायों में आप किस सम्प्रदाय में से हैं।

१२५-गांव के छोटे छोटे देवताओं का स्थानिक रक्षक सन्तों का जिन को जाति वाले पूजते हैं लिखो यदि सम्भव हो तो उनके मन्दिरों की रूप रेखा यदि विशेष दशा की हो तो लिखो।

१२६-आपके देवताओं को जो भोग चढ़ाया जाता है उसको लिखो किसी ऋतु व समय विशेष मे कोई विशेष भोग चढ़ाया जाता हो तो उसको भी लिखो।

१२७-आपके मन्दिर की पूजा कौन जाति का मनुष्य करता है तथा मन्दिर का चढ़ावा कौन लेता है।

१२८-आपकी जाति का कोई खास मन्दिर कहीं पर हो उसका विवरण लिखो।

१२६–विशेष रूप से आपकी जाति में किस देवता का पूजन होता है ?

१३०–आपकी जाति का मुख्य त्योहार कौनसा है ?

१३१–आपके यहां पितरों का पूजन कब २ व किस विधि से होता है ?

१३२–क्या आपके यहां वृक्ष की और सांप की पूजा होती है ?

१३३–क्या आपकी जाति का नाम किसी धर्म से सम्बन्ध रखता है ? यदि हां तो उस धर्म का नाम लिखो ?

१३४–वामरहस्य पंथियों का, पञ्चमकारियों का, उत्पन्न करने वाली गुप्त इन्द्रियों का पूजन आप में होता हो तो लिखो ?

१३५–बपतिस्मा, खतना तथा शंख चक्र त्रिशूल से दागने की भांति क्या कोई रीति आप में अपनी जाति व धर्म में मिलाने की है ?

१३६–हिन्दुओं के जिन २ देवी देवताओं के मन्दिरों में आप जहां तक अन्दर जा सक्ते हैं लिखिये तथा किस किस देवता की प्रतिमा को आप अपने हाथों से स्पर्श कर सक्ते हैं ?

नोट—इस उत्तर के साथ पुजारी का सार्टिफिकट लगाइयेगा।

१३७–क्या आपकी जाति वाले कर्मकाण्ड, संस्कार, धर्म व कर्म तथा अन्य पूजन पाठादि के समय ब्राह्मणों को बुलाते हैं ? यदि हां तो उन्हें आप अपने हाथ की बनायी हुयी कौन कौन वस्तु खिला सक्ते हैं ? इस के साथ किसी परीक्षोत्तीर्ण व सुप्रसिद्ध विद्वान् का सर्टिफिकेट लगाइयेगा।

१३८–जो ब्राह्मण आपके यहां बुलाये जाते हैं उनकी जाति व उप० जाति का नाम लिखो। तथा वह ब्राह्मण जाति हमारे ब्राह्मण निर्णय ग्रन्थ के किस पृष्ठ व किस संख्या में वर्णित है ?

१३९–आपके पुरोहित और गुरु का नाम ग्राम पता ठिकाना और उस की जाति का नाम लिखो।

१४०–जिन जिन कामों में आपके यहां ब्राह्मण नहीं आते उन कामों को आपके यहां कौन जाति का मनुष्य करना कराता है ?

१४१-क्या आपके यहां कोई कुटुम्ब का अथवा नातेदार रिश्तेदारों का कोई मनुष्य पुरोहित व गुरू का काम कर सक्ता है ?

१४२-आपके यहां का गुरू व पुरोहित पीढ़ी दर पीढ़ी से चला आरहा है व वह समय पड़ने पर नियत कर लिया जाता है ?

१४३-क्या आपकी जाति में ऐसा कोई स्थान, घर व मन्दिर होता है जहां केवल आपकी जाति वाले ही जा सक्ते हों ?

१४४-यदि हां तो क्या उस की बनावट में कोई विशेषत्व है जैसे गिरजों के त्रिशूल, मन्दिरों के शिखिर तथा मस्जिदों के बुर्ज़।

१४५-क्या उस पूज्य स्थान का कोई विशेष रूप से कोई विशेष नाम होता है ? क्या वहां कोई मूर्तियें रक्खी जाती हैं ? यदि हां तो वे मूर्तियें किस धातु, लकड़ी, मिट्टी तथा पत्थर की बनी हुयी होती हैं ?

१४६-जब आप अपने उस पूज्य स्थान में जाते हैं तब आप वहां किस विधि से क्या करते हैं ?

१४७-वे सब विधि प्रकाश्यभाव से सब के सन्मुख करते हो या गुप्त रीति से ? यदि गुप्त रीति से तो किस किस जाति के मनुष्यों से गुप्त रखकर करते हो ?

१४८-देवता के सन्मुख आप स्वयं बलिदान चढ़ा सक्ते हैं या केवल पुरोहित गुरू अथवा पुजारी ही चढ़ा सक्ता है ?

१४९-आपके यहां किस तरह तथा कब कब बलिदान चढ़ाया जाता है ? तथा बलिदान में किस जीव की बलि दी जाती है ?

१५०-बलिदान के उपरान्त उस बलि के शेष भाग को आप लोग खा डालते हैं व फेंक देते हैं अथवा उसका क्या करते हो ?

१५१-जीव के स्थान में क्या आप बलि में चढ़ने वाले पशु पक्षी का पुतला [आटा आदि का] बनाकर लेते हैं व साक्षात जीवित पशु पक्षी को ।

१५२–क्या आपके यहां बलिदान की पूजा में अपने शरीर का कोई भाग जैसे लहू की बूंद, केश, नख आदि भी चढ़ा सके हैं ?

१५३–क्या ऐसी कोई कहावत है जिस से जान पड़े कि पूर्वकाल में आपके यहां कोई स्त्री पुरुष और बालक बलि चढाये गये थे ?

१५४–यदि है तो उस देवता का नाम आदि पूर्ण विवरण लिखो कि किस तरह व कैसे वह नरबलि चढ़ी थी ?

१५५–आपके यहां पहिले किसी काल में मनुष्य का बलिदान हुआ हो तो लिखो ?

१५६–यदि वर्तमान काल में बंद कर दिया गया है तो क्यों बंद किया गया ?

१५७–वर्ष भर के त्यौहारों में आपके यहां क्या २ किया जाता है ? जैसे ईश्वराराधन, खेल कूद, नाचरंग, कूदफांद आदि आदि जो होता हो लिखो ?

१५८–कौन २ से त्यौहार आपके यहां अनियत तिथि व दिन पर किये जाते हैं ?

१५९–धर्म सम्बन्धी त्यौहार महिना ऋतु रात दिन की समानता मकर की संक्रान्ति और बीज बोने के समय पर आपके यहां क्या क्या किया जाता है ?

१६०–क्या मृतकों का श्राद्ध करते हो ? पिण्डदान किनके व कब २ देते हो ? तथा पिण्ड किस चीज के बनाते हो ?

१६१–आपके यहां कौन से प्रकार के ब्राह्मण श्राद्ध में जीमते हैं ? व क्या क्या वस्तु आपके हाथ की बनी वे खा सकते हैं ?

नोट.–इन दोनों १६० और १६१ प्रश्नों का उत्तर लिखते समय किसी संस्कृतज्ञ विद्वान् का जो आपके यहां श्राद्ध जीमते हैं उनका शपथ पूर्वक सार्टिफिकेट इस के साथ लगाओ ?

१६२–क्या आपके यहां स्वयंवर की प्रणाली प्रचलित है ?

१६३–क्या आपकी जाति में कोई ऐसा त्यौहार है जिसे केवल आपकी जाति के लोग ही मानते हैं ?

१६४–आपके यहां जो त्यौहार माने जाते हैं उनमें क्या कोई रीति खान पानादि सम्बन्ध में विशेष रूप से की जाती है ?

१६५–क्या आप भूत, प्रेत, डाकिनी शाकिनी तथा ऊपरी परायी का आना पुरुष तथा स्त्री व वालकों पर मानते हैं ?

१६६–क्या आपके यहां लकड़ी, हड्डी, शमसान की राख आदिकों का पूजन होता है ?

१६७–यदि होता हो तो कव व किस विधि से ?

१६८–भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी आदि का स्थान आप कहां मानते हैं ?

१६९–क्या इन का स्थान वृक्ष, कूवे, वावड़ी, तालाव आदि आदि पर माना जाता है ?

१७०–माने जाने की दशा में क्या उन का पूजन आपके यहां होता है यदि होता है तो उसकी विधि लिखो ?

१७१–क्या कुञ्ज व वन तथा कोई वृक्ष व कूए पूजा के विशेष पवित्र स्थान माने जाते हैं ?

१७२–वे कौन कौन से जीव जन्तु हैं जो आपकी जाति में देवता की तरह माने जाते हैं ?

१७३–क्या आपके यहां पितर पूजा होती है ?

१७४–यदि होती है तो उस पूजन की विधि लिखो ?

१७५–सुवर्ण की पातड़ी व चौकी पितर के अर्थ पहिन्ते हो क्या ?

१७६–क्या आपकी जाति में किसी खास देवता की मानता है ?

१७७–क्या मृतकों की आत्मा की सद्गति के लिये मृतक क्रिया में कोई दान पुण्य दिया जाता है यदि हां तो किस किस को कव कव क्या ?

१७८-क्या भोजन, द्रव्य, गहने व जल आदि मृतक के पास शमसान भूमि में मृतक के अर्थ रक्खे व गाडे जाते हैं ?

१७९-क्या आप मृतकों की आत्माओं का आना जाना उनके जलाये व गाडे जाने के स्थान पर मानते हैं ? यदि हां तो तुम कैसे जान सकते हो ?

१८०-मृतकों की क्रिया कर्म्म करने के, दिन से १२वें दिन तक की विधि लिखो ?

१८१-क्या आप लोग गया जा कर श्राद्ध करते हैं ?

१८२-आप श्राद्ध पिंड कितने व किस के देते हो ?

१८३-क्या आप मास के पिंड भी बनाते हैं यदि हां तो किस किस के मांस के ?

१८४-क्या आप मास मछली खाते हैं यदि हां तो किस किस जीव का तथा वह कहां से व कैसे प्राप्त हो सकता है ?

१८५-क्या आपकी जाति में किसी खास वस्तु के जलाने, खाने व स्पर्श करने की आन है ?

१८६-क्या आपके यहां ऐसा कोई देवता व मन्त्र है जिसे जाति वाले अपने शरीर पर खुदवा लेते हैं ?

१८७-यदि हां तो उसकी विधि व विवरण लिखो।

१८८-क्या आपके यहां की स्त्रियें किसी वृक्ष व पौधे को अपने इष्टदेव के तुल्य मानती हैं ?

१८९-क्या आपके यहां वृक्ष व पौधा तथा कोई जानवर विवाह में पूजा जाता है ?

१९०-आपके यहां ख़ास शकुन अशकुन क्या व किस का माना जाता है ?

१९१-आप ग्रह दशा मानते हैं कि नहीं ?

१९२-आपकी जाति में किस किस तारे व ग्रह के दर्शन अदर्शन से सम्

व कुफल माना जाता है ? उस का विस्तृत विवरण लिखो ।

१९३–जल का लांघना जल में मूत्र पुरीषादि के त्यागने की रीति आप में है या नहीं ?

१९४–अन्न का पूजन आपके यहां होता है या नहीं यदि होता है तो कब व कैसे ?

१९५–वे कौन सी दशायें हैं जब आपके यहां की स्त्रियें बहुत जल में स्नान नहीं करती हैं ?

१९६–क्या आपकी जाति में ऐसी कोई दशायें हैं जब स्त्री को उसका पति भी स्पर्श नहीं करता है ? ऐसी दशायें हों तो उस में स्त्री के साथ क्या क्या विशेष व्यवहार होता है ? इस उत्तर का विस्तृत विवरण लिखो ?

१९७–रजस्वला स्त्री के साथ आपका क्या व्यवहार होता है ? तथा उस समय में वह क्या क्या कर सक्ती है ? तथा क्या क्या नहीं और कब तक ।

१९८–आप अपनी जाति को किस वर्ण में मानते हैं ? तद्विषयक प्राचीन पत्र स्टाम्प, तमस्सुक, प्रतिज्ञापत्र, दस्तावेज, कचेहरी के फैसिले व पट्टे ताम्र पत्र तथा शिला लेख आदि आदि अपने उत्तर की पुष्टि में जो कुछ आपके पास हो उसकी अविकल नकलें अपने उत्तर के साथ लगाओ तथा असली महा मन्त्री जी को दिखलाओ ?

१९९–ऐसे गहनों व वस्त्रों के नाम बतलाओ जिन्हें आपकी जाति के स्त्री व पुरुष नहीं पहिन सक्ते हैं ?

२००–आपकी जाति में लड़के के पैदा होने से २४ वर्ष तक के समय में जो जो प्रसिद्ध कर्म होते हों उन को संकेत मात्र लिखो ।

२०१–लड़के का नाम करण कैसे करते हो ?

२०२–आप लड़के तथा लड़कियों के संस्कार क्या क्या करते हो ।

२०३-आपकी जाति में शपथ प्रणाली कैसी है? अर्थात् आवश्यका पड़ने पर आप लोग क्या शपथ लेते हैं?

२०४-आप नजर लगना मानते हैं या नहीं?

२०५-आपकी जाति में कोई जादू टोना तथा करतूत मारण मोहन और उच्चाटन आदि क्रियायें करे करावे तो आप उसके साथ क्या व्यवहार करते हैं।

२०६-स्त्रियों के तथा बालक बालिकाओं के नख केश उतरने पर उन नख केशों का क्या होता है।

२०७-आपके यहां हरी तरकारियों में से कौन कौन तथा धान व अन्नों तथा फलों में से कौन कौन नहीं खाये जाते हैं।

२०८-आप दाल व तरकारी में छोंकन अर्थात् बगार किसका देते हैं?

२०९-आप हरे वृक्ष में से किस किस को काट सक्ते हैं तथा किस किस को नहीं?

२१०-आपकी जाति वाले जिस जिस जाति व उप जाति के यहां की धनी कच्ची (सखरी) रसोई खा सक्ते हैं तथा जिस जिस का छुआ पानी पी सक्ते हैं उन का नाम लिखो?

२११-आप एक पंक्ति में बैठ कर कच्ची [सखरी] रसोई तथा पक्की (निखरी) किस २ के साथ खा सकते हैं?

२१२-आपकी जाति वाले किस २ जाति के साथ छूने बोलने, दर्शन करने, व उन्हें पुकारने में पाप समझते हैं?

२१३-किस २ वस्तु के नाम लेनेमें ही आप पाप समझते हैं?

२१४-आपके यहां की स्त्रियं तथा कुंवारे लड़के लड़कियें पूजनादि के कौन २ से कार्य्य को नहीं कर सक्ते हैं?

२१५-मकान बनाने व खेती बोने के आदि तथा अन्त में धार्मिक क्रिया क्या २ की जाती हैं?

२१६-यदि आपके यहां मांस खाया जाता है तो बन्दर, मोर, सुअर, कुत्ता, बारहसिंगा, रोज, मुर्गा तथा कौआ और सुरकटे पशु

छिलके दार व बिना छिलकेदार मछलियां, मगर, सांप, सियार, चूहे, मेंडक, ऊंट, कबूतर, और फाख़्ता तथा बतक आदिकों में से किस २ का मांस खाया जा सकता है? तथा मुसल्मान के हाथ का आप मांस खा सकते हैं या नहीं?

२१७-इन में से जिन का मांस आपकी जाति में खाना वर्जित है वह किस कारण से?

२१८-आपके यहां भोजन गृह में सब एक ही थाल में खाते हैं अथवा अलग अलग?

२१९-भोजन के आदि में धर्म सम्बन्धी क्या कृत्य आपके यहां किया जाता है?

२२०-मादक द्रव्यों में से आपकी जाति में कौनसा वर्जित है; और उसका क्या कारण है?

२२१-आपके यहां स्वजातियों तथा विजातियों में परस्पर अभिवादन करने की क्या रीति है!

२२२-प्रणाम् विधि में नातेदारी के कारण यदि कुछ भिन्नता होती हो तो लिखो?

२२३-परस्पर कुटुम्बी जन व नातेदार तथा मित्रों के साथ सम्मेलन के समय आप क्या उच्चारण करते हैं?

२२४-अन चीन्हे अज्ञात् जनों के साथ अभिवादन विधि आपके यहां किस प्रकार की है?

२२५-आपके यहां चिट्ठियों पर औनामा [पते] में क्या विधि वरती जाती है?

२२६-आपके यहां आतिथ्यसत्कार के क्या नियम हैं?

२२७-अपने से छोटे वड़े व पूज्यजनों के लिये सम्बोधन वाचक किन किन शब्दों का आप प्रयोग करते हैं?

२२८-आपके यहां जव स्त्रियां चूड़ा पहिनती हैं तव धर्मसम्बन्धी क्या बात देखी दिखाई जाती है?

२२९-आपकी जाति में किस वस्तु का बना चूड़ा पहिना जाता है ?

२३०-आपकी जाति में क्या चूड़ा नहीं भी पहिना जाता है ? यदि हां तो कब कब ? व किस किस दशा में ?

२३१-आपकी जाति का पैतृक धंधा क्या है ?

२३२-यदि आपकी जाति का पैतृक धंधा शिकार है तो शिकार पकड़ते हो ? अथवा पकड़वाते हो ? उसे क्रमबद्ध लिखो।

२३३-आपकी जाति में स्त्रियें कुंवारी रहने की दशा में व्यभिचार कर सकती हैं ?

२३४-यदि आपका स्वजाति बन्धु ईसाई मुसलमान हो जाय तो आप उसके साथ क्या क्या व किस प्रकार का व्यवहार करेंगे।

२३५-यदि आप अपना पैतृक धंधा छोड़ कर अन्य अवलम्ब करते हैं तो आपकी बिरादरी वाले उसे कैसा समझते हैं ?

२३६-यदि आपकी जाति का धंधा कृषि है तो कौन कौन सी चीजों की ?

२३७-यदि आप जमींदार हैं तो किस भांति के ? अर्थात्, माफींदार, ठेकेदार, मौरूसी, गैर मौरूसी और शिकमी ?

२३८-जो मौरूसी हैं तो आपके स्वत्व क्या क्या हैं ?

२३९-जंगली खेतीदारी तो बंटाव व हिस्से के क्या नियम हैं ?

२४०-यदि पट्टेदार हैं तो किस प्रकार के ?

२४१-आपके यहां ग्राम्य तथा जाति पञ्चायत किस प्रणाली पर हैं व उन्हें क्या अधिकार प्राप्त है ?

२४२-आपके धर्मानुकूल कौन कौन सी रीतियां प्रचलित हैं ?

२४३-आपकी जाति तथा कुल का वंश वृक्ष हो तो लिखो ?

२४४-आपके यहां यज्ञोपवीत होता है या नहीं ? यदि होता है तो प्रति संख्या कितना ? और नहीं होता है तो कितना ?

२४५-आपके यहां यज्ञोपवीत कब पहना तथा उतारा जाता है ?

२४६-यदि आपके यहां यज्ञोपवीत सब का होता है तो अगर कोई उससे रहित हो तो क्या व्यवहार उसके साथ आप करेंगे ?

२४७-यदि प्राचीन काल में यज्ञोपवीत होता था तो उस का प्रमाण लिखो ?

२४८-यदि प्राचीन काल में आपकी जाति में यज्ञोपवीत की प्रणाली थी और अब नहीं है तो उसका कारण लिखो ?

२४९-यदि आपकी जाति में २४ वर्ष तक किसी का जनेऊ न हो तो उसके साथ आप कैसा व्यवहार करेंगे ?

२५०-जाति में जो जनेऊ पहना जाता है वह काहे का बना तथा किस नाप का होता है ?

२५१-क्या आपकी जाति वाले किसी मंदिर के पुजारी हैं ? और वेद पुराणों को मानते हैं या नहीं ?

नाई वर्ण मीमांसा

—:o:—

(चेलेन्ज का उत्तर चेलेन्ज)

विदित हो कि अनुमान दस बीस वर्ष से आर्य्य समाज के प्रचार के साथ साथ नाई जाति के कुछ लोग पुस्तक व पत्रादि द्वारा अपनी जाति को 'ब्राह्मण वर्ण' में कहने व कहलवाने, मानने व मनवाने का उद्योग करने लगे थे और तदनुसार पुस्तक छपवाकर हम से व्यवस्था व सम्मति भी चाहने के उद्योग में थे अतएव नाई जाति की ओर से छोटी मोटी सात पुस्तकों का एक रजिस्टर्ड पेकेट व निवेदन पत्र अप्रैल सन् १६१८ में हमारे पास सम्मत्यर्थ आया था, पुस्तकों को देखकर हमें निश्चय हुआ था कि पुस्तकों में, आंय शांय, बांय और टिस फिस के अतिरिक्त कुछ भी तत्व ब्राह्मणत्व पोषक नहीं है परन्तु ऐसी सम्मति हमने उन्हें उस समय नहीं दी और मौन्य हो जाना ही उचित समझा।

दूसरा निवेदन पत्र व एक पुस्तक तारीख २४-६-२१ को हमारे पास नाई जाति सभा की तरफ से सम्मत्यर्थ आई, उसे देख कर भी हमने नाई जाति को उनके ब्राह्मणत्व के विरुद्ध सम्मति देकर नाई जाति को कष्ट पहुंचाना नहीं चाहा अत इस समय भी हम मौन्य हो रहे।

इसके पश्चात् नाई जाति की ओर से " न्यायी वर्ण निर्णय" नामक पुस्तक निवेदन पत्र सहित हमारे पास सम्मत्यर्थ आयी।

साथ ही में एक मुद्रित विज्ञापन भी हमारे पास नाई जाति के यहां से आया जो सम्पूर्ण धार्मिक सभाओं तथा श्री भारत

सनातन धर्म महामण्डल काशी आदि को शास्त्रार्थ कर लेने के लिये खुल्लम खुल्ला चेलेञ्ज था ।

पुस्तक व विज्ञापन को देखकर हमें निश्चय हुआ था कि यह सब नाई जाति का प्रलाप मात्र व छल कपट का खाका है और जिस Policy पोलिसी के साथ यह काम किया गया वह एक विद्वान् मनुष्य व सुधारक जाति सभा के योग्य न था ।

इन्हीं पुस्तकादि व निवेदन पत्रों के अनुसार ही नाई जाति के लोग हमारी जाति यात्रा में हमारे सन्मुख अपनी जातिका दावा पेश किया करते थे अतएव उन्हीं के दावे का सारांश मण्डल की धर्म व्यवस्था सभा के निर्णयार्थ जैसे का तैसा हमने अपने जाति अन्वेषण ग्रन्थ में छाप दिया था और वह हमारा ग्रन्थ मण्डल के Final Decission अन्तिम निर्णय के लिये मण्डलस्थ धर्म व्यवस्था सभा की सेवा में अर्पण किया गया था न कि वह हमारा मन्तव्य व सिद्धांत था । तिसपर भी शोक ! नाई जाति ने उसका Advantage लाभ तो उठा लिया सो उठा लिया पर हमारे लेख को कतर ब्योंत करके लेख में से मतलब मतलब के वाक्यों को अपनी पुस्तक में छाप दिये और लेख में के विरुद्ध विरुद्ध वाक्यों को छोड़ दिये इससे हिन्दू पबलिक को यह समझाने का उद्योग किया गया कि:—

"श्रोत्रिय पं० छोटेलाल शर्म्मा महामंत्री हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था मंडल फुलेरा ने भी अपने ग्रन्थों में नाई जाति को ब्राह्मण वर्ण में मान लिया है" इससे पबलिक को इन्होंने धोके में डाला— क्योंकि यदि हम ने नाई जाति को ब्राह्मण वर्ण में मानी होती तो नाई जाति को हम अपने ब्राह्मण निर्णय ग्रन्थ में लिख देते पर हमने नहीं लिखा

परन्तु नाई जाति की ऐसी कार्यवाही से पबलिक का भ्रम हमारी ओर बढ़ा और हमारे इष्ट मित्र लोग हमें उलहना देते हुये कहने लगे कि "आप चाहे जिस किसी को ही ब्राह्मण बना देते हैं" उन सब के सन्तोषार्थ हमारा उत्तर यह है कि नाई जाति को न हमने कभी ब्राह्मण, क्षत्रिय मानी और न अब मानते हैं क्योंकि हमारा जाति अन्वेषण ग्रन्थ सन् १९१४ में छपा था उसके पांच वर्ष पूर्व सन् १९०९ में फर्रुखाबाद आर्य्यसमाजकीय गुरुकुल में नाइयों के लड़कों के यज्ञोपवीत किये जा चुके थे तिसके भी पूर्व दो चार नाइयों व कहारादिकों के यज्ञोपवीत आर्य्यसमाज की ओर से किये जा चुके थे।

पबलिक का भ्रम

हमारे जाति अन्वेषण के प्रकाशन से दो वर्ष पूर्व सन् १९१२ में तुलसीप्रसाद जी नाई ठाकुर ने अपने नाई भाइयों के हितार्थ "नायकुल की उत्पत्ति" प्रकाशित कर दी थी तदनुसार नाई जाति के लोग अपने को ब्राह्मण मानने लग गये थे।

हमारी जाति यात्रा के भ्रमण में जाति अन्वेषण के समय नाइयों ने अपने ये ही प्रमाण हमारे सामने पेश किये थे। हां किन्हीं किन्हीं अन्य लोगों ने नाइयों के विरुद्ध भी कुछ किम्बदन्तियें व प्रमाणादि हमारे सन्मुख पेश किये थे उन सब का सार हमने निष्पक्ष भाव से निज सम्मति स्वरूप में नाइयों का दावा मण्डलस्थ धर्म्म व्यवस्था सभा के सन्मुख पेश कर दिया था।

यदि हमारे जाति अन्वेषण ग्रन्थ का लेख आद्योपान्त अक्षरशः नाइयों की ओर से प्रकाशित कर दिया जाता तो पबलिक को हम पर सन्देह करने व हमें बुरा भला कहने का अवसर न मिलता अस्तु!

हमारे जाति अन्वेषण के प्रकाशन से पांच वर्ष पूर्व जब फर्रुखाबाद आर्य्यसमाजकीय गुरुकुल में नाइयों के लड़कों के

यज्ञोपवीत हुये तब सन् १६०१ में हमने रजिस्ट्री पत्र देकर आर्य्य-समाज फर्रुखाबाद से कई प्रश्न पूछे थे पर दो रजिस्ट्रियें हमने दीं और आर्य्यसमाज ने कुछ उत्तर नहीं दिया तब गुरुकुल के जल्से पर उस प्रश्नावलि को छपवाकर उत्तरार्थ आर्य्य पवलिक से "अपील" नामक ट्रैक्ट द्वारा उत्तरों की याचना की थी और उस ट्रैक्ट की सैकड़ों कापियें हमने मुफ्त बांट दी थीं उस में के कति-पय प्रश्न नीचे दिये जाते हैं जिससे पवलिक को हमारी ओर से विशेष सन्तोष होगाः—

१६—क्या गुरुकुल में शूद्र जाति के लड़के हैं ? यदि हैं तो कौन कौन सी जाति के हैं ?

१७—क्या गुरुकुल में नाई, मुर्जी, जाट, गूजर, और महाजन आदि के लड़के हैं ?

१८—यदि कहो हैं तो क्या इनका यज्ञोपवीत करा दिया है ? यदि करा दिया है तो इन प्रत्येक को किस किस वर्ण में स्थापित किये ? गुण कर्मानुसार उनको द्विज संज्ञा की व्यवस्था देने वाले कौन कौन वेदों के ज्ञाता महान् पुरुष हैं और द्विज संज्ञा होने के लिये उन प्रत्येक में क्या क्या गुण थे ?

क्योंकि पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराज ने सत्यार्थप्रकाश तृतीय समुल्लास के पृष्ठ ३२ की पंक्ति २० व २१ में केवल द्विज ही का यज्ञोपवीत करना लिखा है ।

१९—यदि अभी उनका वर्ण निश्चय नहीं हुआ है तो शूद्र का यज्ञोपवीत कराना कहां लिखा है ? और स्वामी जी ने कहां माना है ? देखो सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास पृष्ठ ३९ पंक्ति २० से २५ तक में श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज ने लिखा है कि जो कुलीन शुभ लक्षण युक्त हो तो उसको सब शास्त्र पढ़ावे शूद्र पढ़े पर उसका उपनयन न करे ।

२१—क्या यह भी सत्य है कि आपने नाई के लडके का असली नाम बदल कर ' सर्वमित्र" मुर्जी के लडके का नाम "ज्ञातेन्द्र" गूजर के लडके का "सत्यव्रत" जाट के लडके का नाम "देवराज" और सुनार के लडकों का नाम "धर्मेन्द्र" और "रत्नाकर" आदि रख लिये हैं ? आदि आदि।

जब आर्य्य समाज फर्रुखाबाद व गुरुकुल कमेटी ने हमारे प्रश्नों के उत्तर नहीं दिये तब प्रश्नावलि के "अपील" नामक ट्रैक्ट को हमने आर्य्य प्रतिनिधि सभा युक्तप्रदेश आगरा और अवध के पास भेजा जिन के यहां से यह उत्तर आया'—

कार्य्यालय श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभा
युक्त प्रदेश आगरा और अवध-फतेहगढ ।

नं० १४८७ ता. २०-१-१०

श्रीमान् पं० छोटेलाल जी शर्म्मा
स्टेशन फर्रुखाबाद

भ्रातृवर नमस्ते।

आपका पत्र तारीख २८-१२-१९०९ अपील नामक पैम्फलेट के प्राप्त हुआ, उत्तर में श्री प्रधान जी सभा ने आज्ञा दी है कि आपको उपरोक्त पेम्फलेट का उत्तर न देकर हम स्वयं अपने हानि लाभ पर ध्यान देंगे।

भवदीय
G G Gupta
मन्त्री सभा।

नाई जाति के कृत्य से हिन्दु पबलिक में बड़ी सनसनी फैली और प्रायः हमारे इष्ट मित्रगण भी नाई जाति का निर्णय हम से पूछने लगे। परन्तु नाई जाति को एक उपयोगी जाति समझ कर हम उनकी उन्नति में बाधक नहीं होना चाहते थे यही कारण

था कि नाई जाति के कई वर्षों के उपरोक्त उद्योग करते रहने पर भी हमने मौन्य रहना श्रेयस्कर समझा और किसी भी प्रकार की सम्मति हमने उन्हें नहीं दी और देश की स्थिति के अनुसार शास्त्रार्थ करके परस्पर वैर भाव बढ़ाना भी हमने उचित नहीं समझा था और ऐसा ही भारत के अन्य प्रसिद्ध नेता विद्वानों ने भी समझा होगा यही कारण है कि किसी भी धार्मिक संस्था व विद्वान् ने नाई जाति के साथ शास्त्रार्थ नहीं किया।

इस सब के प्रतिफल स्वरूप में नाई जाति गर्वान्वित होकर 'न्यायी ब्राह्मण पाक्षिक पत्र' के अङ्क १-२ के पृष्ठ २५ से २६ में नाई जाति ने एक विजय पताका सी छापी है कि "अल खामोशी नीम-रजा" के सिद्धांतानुसार सब ही ने नाइयों के ब्राह्मणत्व को नेम नेम स्वीकार कर लिया है।

उपरोक्त प्रकार से जब हमने नाई जाति को किसी भी प्रकार की सम्मति नहीं दी तब नाई जाति ने हमारे नाम पर भी नैमित्तिक रूप से शास्त्रार्थ का नोटिस छापकर तारीख १० मार्च सन् १९२२ को रजिस्ट्री द्वारा भेज दिया और उनसे शास्त्रार्थ करने को हमें विवश किया। इस लिये शास्त्रार्थ के "चेलेञ्ज का जवाब चेलेञ्ज" हमने श्री वेङ्कटेश्वर समाचार मुम्बई, आर्य्यमित्र और तिलक कार्य्यालय आगरा, बंगवासी और भारतमित्र कलकत्ता को भेजा कि "नाई जाति जब चाहे तब नियम निश्चय करके लेखबद्ध शास्त्रार्थ कर ले हम सर्वथा सर्वदा उद्यत हैं और रहेंगे।" वह हमारा चेलेंज अखबार में छप भी गया।

जब इस प्रकार श्रीवेङ्कटेश्वरादि समाचार पत्रों में नाई जाति के प्रति हमारा चेलेंज छप चुका तब प्रायः हमारे इष्ट मित्रगण हम से पूछा करते थे कि "नाइयों के साथ आपका शास्त्रार्थ कब होगा?" इसके उत्तर में हम प्रायः यही कहा करते थे कि "नाइयों

साथ आपका शास्त्रार्थ कब होगा ?" इसके उत्तर में हम प्राय: यही कहा करते थे कि "नाइयों के यहां से उत्तर आने की हम प्रतीक्षा कर रहे हैं"। इसी प्रकार मुशीलाल जी नाई ने जब यह देखा कि श्रोत्रिय जी का चेलेंज नाई जाति के प्रति छपे डेढ मास से ऊपर होगया पर शास्त्रार्थ की कोई चरचा नहीं सुनी तब उन्होंने हमें पत्र द्वारा पूछा कि —

"आप का नाई जाति के निर्णय सम्बन्ध में शास्त्रार्थ कब होगा" इनको भी हमने यही उपरोक्त उत्तर दे दिया।

पर जब प्रतीक्षा ही प्रतीक्षा में १० मास से अधिक समय व्यतीत होगया तब शास्त्रार्थ से निराश होकर यह "नाई जाति मीमांसा" नामक सूक्ष्मसा विवर्ण प्रकाशित करना पडा है जिससे हिन्दु पबलिक को ज्ञात हो जाय कि हमने अपने ग्रन्थों में नाई जाति को ब्राह्मण नहीं माना है। अन्यथा शास्त्रार्थ के अनन्तर ही हम "नाई वर्ण निर्णय" नामक पुस्तक अलग निकालना चाहते थे।

देश की स्थिति व अन्य कारण विशेषों से जब भारत के विद्वान् व नेतागणों ने नाई जाति के चेलेंज की ओर ध्यान नहीं दिया तब नाई जाति ने अपनी विजय पताका इस प्रकार छापी —

"इस महान् कार्य्य की सफलता का श्रेय भी कुलीन ब्राह्मण महासभा भारत इटावा को है। इस सभा ने विज्ञापन द्वारा सम्पूर्ण भारत के विद्वानों व धर्म सभाओं को नाइयों के ब्राह्मण होने के विरुद्ध शास्त्रार्थ करने के लिये आह्वान (चेलेंज) किया परन्तु कोई भी सन्मुख न आया —

१ श्री भारतधर्म महामण्डल काशी को जो सनातन धर्म की सब से बडी महासभा है रजिस्ट्री द्वारा " न्यायी वर्ण निर्णय " और शास्त्रार्थ का चेलेंज भेजा गया पर कुछ उत्तर नहीं दिया!

२ श्री धर्म व्यवस्था महामण्डल (मौज मन्दिर) जयपुर को भी दोनों वस्तुएं रजिस्ट्री द्वारा भेजी गईं उत्तर नदारद है।

३—जब्बलपुर से एक श्रीरामचन्द्र जी दीक्षित वैद्य ने ८-१२-२१ ई० के पत्र में शास्त्रार्थ के लिये इच्छा प्रकट की और "न्यायी-वर्ण निर्णय" की एक प्रति मांगी पुस्तक भेज दी गयी। १८-१२-२१ के पत्र में आप ने लिखा कि मैं यहां से ता० २३-१२-२१ को अहमदाबाद जाऊंगा खेद है कि मैं उपस्थित न हो सकूंगा।

४—खुर्जा के एक महाशय नत्थीलाल जी टेलर मास्टर खुर्जा निवासी के द्वारा शास्त्रार्थ की इच्छा प्रकट की परन्तु १६-१२-२१ के पत्र में उक्त नत्थीलाल जी ने लिखा कि यहां से जो पंडित शास्त्रार्थ के लिये तय्यार हुये थे उन्होंने "न्यायीवर्ण निर्णय" का अवलोकन करके शास्त्रार्थ को मना कर दिया और वे कहने लगे कि हम न्यायी वर्ण को ब्राह्मण मानते हैं परन्तु वे अपने कर्म ठीक रक्खें।

५—मेंडू [जि० हाथरस] एक श्री पं० बद्रीप्रसाद जी शर्म्मा ने शास्त्रार्थ की इच्छा प्रकट की, उनको सम्मेलन के अवसर पर पधारने को लिखा गया परन्तु न पधारे।

६—फर्रुक्खाबाद से एक श्री लक्ष्मीनारायण जी ने चढ़े ताव के साथ शास्त्रार्थ की उत्सुकता पौष कृ० ५ के पत्र में प्रकट की।

आपको भी २१ दिसंबर को पत्र लिखा गया कि आगरा पधार कर शास्त्रार्थ कर लीजिये परन्तु आप भी न पधारे और रजत मुद्रा की वाट जोहते रहे।

इनके अतिरिक्त न तो किसी विद्वान् ने शास्त्रार्थ की इच्छा प्रकट की और नहीं सन्मुख आया। श्री भारत धर्ममहामण्डल आदि सनातन धर्म सभाओं ने मौन धारण करते हुये:—

अल् खामोशी नीम रज़ा

नाइयों के ब्राह्मणत्व को नेम नेम स्वीकार किया और भी कुलीन ब्राह्मण महासभा भारत का पूर्ण विजय हुआ आदि आदि"।

पाठक! यह उपरोक्त नाई जाति की विजय पताका है। इस विजय पताका में कहां तक सत्यता है यह तो परमात्मा ही जाने परन्तु इसकी सत्यता में हमने जयपुर के कई राजमान्य विद्वानों से पूछा तो उनमें से विशेष ने यह कहा कि "यदि नाई जाति ब्राह्मण बनती है तो बनने दो उसमें हमारी क्या क्षति है? और हमारे क्या अटकी पडी है कि हम आगरे जाकर नाई जाति से शास्त्रार्थ करें क्योंकि हमें राज के सरकारी व निज के कामों से ही अवकाश नहीं है" किसी किसी विद्वान् ने यह भी कहा कि "जब नाई जाति के लोग हमें शास्त्रार्थ के लिये आगरे बुलाते हैं तो नाई जाति के लोग जयपुर में आकर ही शास्त्रार्थ क्यों नहीं करलें?" किन्हीं किन्हीं विद्वानों ने यह भी कहा था कि "आजकल का समय तेर मेर करने व छुटाई बडाई का विवाद करके वैर बढ़ाना देशकाल के अनुकूल नहीं है अतएव मौन्य रहना ही श्रेयस्कर है।"

इस ही कारण को लेकर हम भी मौन्य हो बैठे थे पर नाई जाति ने उपरोक्त विजय पताका के साथ साथ हमें भी हमारे नाम से शास्त्रार्थ का चेलेंज दे डाला, इसलिये हमने भी चेलेंज का उत्तर चैलेंज कई समाचार पत्रों में मुद्रितार्थ भेजा जिसके छप चुकने के कई महिनों बाद तक शास्त्रार्थ से निराश होकर यह "यह नाई जाति मीमांसा" अन्वेषण स्वरूप में प्रकाशित करके आशा की जाती है कि नाई जाति इसका उत्तर प्रकाशित कर देगी जिससे पबलिक व हम सत्याऽसत्य का निर्णय कर लेंगे तब तक नाई जाति के निर्णय को हम विचार कोटि में छोडते हैं।

नाई जाति पर विचार करने के लिये मुख्यतया हमारे सन्मुख 'नायकुल की उत्पत्ति' और "न्यायी वर्ण निर्णय" नामक दो पुस्तकें हैं और ये दोनों ही पुस्तकें नाई जाति के ही दो विद्वानों की रची हुई हैं, इन दोनों ही पुस्तकों में खिचड़ी सिद्धांत है अर्थात् ये पुस्तकें न तो पूर्णतया सनातन धर्मानुसार और न आर्य्य सामाजिक सिद्धान्तानुसार ही रची गयी हैं वरन् खैंचा तानी से दोनों ही प्रकार के सिद्धांतों का समावेश है ।

इन्हीं दोनों पुस्तकों के आधार पर नाई जाति ने अपना ब्राह्मणत्व निर्भर रक्खा है इसलिये इन दोनों ही के मुख्य मुख्य अङ्गों पर विचार करके यह "नाई जाति मीमांसा" अन्वेषण स्वरूप में रचकर मण्डल व नाई जाति तथा सर्व साधारण पवलिक की सेवा में भेंट करके आशा की जाती है कि इस में जहां कहीं हमारी भूल प्रतीत हो हमें सूचना दी जाय ताकि निश्चित रूप से निर्णय हो सके क्योंकि अभी हमने तब तकके लिये नाई जाति निर्णयको विचाराधीन छोड़ दिया है ।

नापित मीमांसा ।

नापित शब्द का भावार्थ नाई व नायी होता है जिस की व्युत्पत्ति * एक महाविद्वान् ने अपने ग्रन्थ में लिखी है कि "न आप्नोति सरलतामिति" अर्थात् जिसमें सरलता है ही नहीं वह नापित कहाता है । (न + आप "न्याप् इटच" † इति तन् इट् च) कोषकार ने नाई जाति के निर्णय पर लिखा है "वर्ण संकर जाति विशेषः" अर्थात् यह जाति वर्ण संकर विशेष है । फिर यह भी लिखा है कि "सतु पट्टिकायां कुवेरिणो जातः" ‡ अर्थात् पट्टिकार के

* श. क. सं. ३६-३७ Page 861 † उणां ३ । ८७
‡ पां० पद्धतिः

वीर्य्य व कुवेरिणी स्त्री द्वारा जो सन्तान पैदा हुई वह नाई कहायी विवादार्णव सेतु में लिखा है कि—

शूद्रायां क्षत्रियाज्जातः

अर्थात क्षत्रिय पुरुष व शूद्रा स्त्री द्वारा जो सन्तान पैदा हुई वह नाई कहायी।

नाई की वृत्ति और कर्म विवाहादि मंगल कार्य्य में तथा देव पितृ कर्म में परिचर्य्या करना है।

शब्द रत्नावलि कोप के अनुसार-क्षत्री, धातूसीसुत नखकुट्ट और ग्रामणी ये नाम नाई के हैं।

जटाधर कोप के अनुसार-चन्द्रिल मुण्ड और भाण्डपुट- ये नाम नाई के हैं।

पुन —

क्षुरी मुण्डी दिवाकीर्त्ति नापितान्तावसायिनः।

अ० कोप का० २ व० १० शूद्रवर्ग

अर्थ-कोपकार ने नाई जाति को शूद्र वर्ग में माना है और क्षुरिन्, मुण्डिन्, दिवाकीर्ति, नापित और अन्तावसायिन् ये पांच नाम नाई के लिखे हैं।

अर्थ-कोपकार ने मुख्य करके पर्य्यायवाची शब्द वर्णानुकूल विभक्त करके अपने अपने वर्ग समूह में लिखे हैं अर्थात् जातिवाचक शब्दों को कोपकार ने वर्ण निर्णय क्रमानुसार याने सम्पूर्ण ब्राह्मण जातियों को ब्रह्मवर्ग में, सम्पूर्ण क्षत्रिय जातियों को क्षात्र वर्ग में, सम्पूर्ण वैश्य जातियों को वैश्य वर्ग में और सम्पूर्ण शूद्र जातियों को शूद्रवर्ग में लिखी हैं तदनुसार नाई जाति शूद्र वर्ग में लिखी गयी है।

परन्तु "नाई वर्ण निर्णय" नामक पुस्तक के ग्रन्थकर्त्ता ने कोप के उपरोक्त शूद्रवर्ण प्रमाण को छिपा कर अपने को ब्राह्मण

सिद्ध करने की इच्छा से नानार्थ वर्ग का यह प्रमाण लिखा है कि:-

ग्रामणीर्नापितेपुंसि श्रेष्ठे ग्रामाधिपे त्रिषु

अर्थ-परन्तु कोषकार ने निश्चित रूप से नाई जाति को शूद्र वर्ग में लिखकर फिर उन उन शब्दों को "नानार्थ वर्ग" में लिखा है जिनका प्रयोग काव्यकारों ने भिन्न भिन्न स्थलों में किया है तहां नानार्थ वर्ग के आरम्भ में ही कोषकारने इस विषय को इस प्रकार लिखकर विवेचन किया है कि:—

नानार्थाः केऽपिकान्तादि वर्गेष्वे वात्र कीर्तिताः
भूरि प्रयोगा ये येषु पर्य्यायेष्वपितेपुते ॥ १ ॥

अर्थ—इन कहे जाने वाले कान्तादिक वर्गों के विषय कोई शब्द नानार्थ कहे हैं वे पहिले कहे हुये पर्य्यायों में नहीं कहे, जैसे:—

[मारुते वेधसि वध्ने पुंसि कः कं शिरोम्बुनोः]

और जो कि भूरिप्रयोग अर्थात् जहां कहीं भी काव्यादिक में कवियों ने बहुधा करके प्रयुक्त किये हैं उन्हीं शब्दों को इन कान्तादिक वर्गों के विषे भी कहे हैं।

कोषकार के इस उपरोक्त आदेशानुसार ही नानार्थ वर्ग के णान्त समुदाय में नाइयों का माना हुआ श्लोक यह है:—

ग्रामणीर्नापिते पुंसि श्रेष्ठे ग्रामाधिपेत्रिषु ।

अर्थ—नापित नाम नाई के लिये पुंलिङ्ग में ग्रामणी शब्द तथा श्रेष्ठ नाम मुख्य और ग्रामाधिप नाम ग्राम के मालिक में ग्रामणी शब्द तीनों लिङ्गों में होता है।

पाठक ! ऊपर जो अर्थ लिखा गया वह तो कोष के टीकाकार का है परन्तु (नाई) न्यायी वर्ण निर्णय के रचयिता ने इस ही श्लोक का अर्थ लिखा है कि—" ग्रामणी, नापित, श्रेष्ठ ग्रामाधिप समानार्थ वाची हैं"

समीक्षकः—इस अर्थ से व प्रमाण से यह कहीं नहीं प्रमाणित होता है कि नाई जाति शूद्र वर्ग में नहीं है और ब्राह्मण वर्ग में है। हाँ हमारे लिखे कोष के पूर्व प्रमाण से यह अवश्य तथा स्पष्टतया प्रमाणित होता है कि नाई जाति शूद्रवर्ग में है पुनः कोशलागम में लिखा है कि —

तावद्दीच वृपलो, नापितो रजकस्तथा।
दासोनह पादुकारः सप्तशूद्रा प्रकीर्तिता॥

अर्थ —सात शूद्रों में नाई का नाम भी आया है।

नापितोत्पत्ति

न्यायी धर्म निर्णय पृष्ठ २० पंक्ति १ से ५ तक का लेख—

शूद्रकन्या समुत्पन्नो ब्राह्मणेनतु संस्कृतः।
असंस्काराद्भवेद्दासः संस्कारादेव नापितः॥

पाराशर स्मृति॥

शूद्र कन्या से उत्पन्न, ब्राह्मण से जन्म लेकर यदि संस्कार न हो दास कहलाता है और संस्कार हो जावे तो नापित।

समीक्षकः—यहां तो ब्राह्मण बनने की इच्छा से श्लोक को ही बदल डाला और पबलिक को खूब धोका दिया, कहिये पाराशर स्मृति में आपके लेखवत् श्लोक का पाठ कहां है? देखिये शुद्ध श्लोक पाराशर धर्म शास्त्र में ऐसा है:—

शूद्र कन्या समुत्पन्नो ब्राह्मणेनतु संस्कृतः।
संस्कृतस्तु भवेद्दासो ह्यसंस्कारैस्तुनापितः॥

पा० स्मृ० अ० ११ श्लो० २३

जा० भा० १७७, और ध० स० २३४

अर्थः-ब्राह्मण से शूद्र की कन्या में जो सन्तान पैदा हो उसका संस्कार यदि ब्राह्मण ने कराया हो तो वह दास

[कहार] माना जावे और यदि संस्कार न हो तो वह नाई होगा [यहां संस्कार पद से ब्राह्मण द्वारा पालन पोषण अर्थ लेना चाहिये]

देखो ब्रह्म प्रेस इटावा की छपी पाराशर स्मृति पृष्ठ ७७ वेद व्याख्याता पं० भीमसेन जी द्वारा अनुवादित।

समीक्षकः—पाठक! दोनों श्लोकों को मिलाइयेगा, मूल श्लोकों की अन्तिम पंक्ति को अदल बदल करके अर्थ का अनर्थ कर दिया गया याने श्लोक को अपने मतलब का सा बना लिया गया क्योंकि उपरोक्त धर्मशास्त्र की आज्ञानुसार नाई का पद कहार से नीचा है याने कहार ब्राह्मण द्वारा संस्कार युक्त था तो नाई संस्कार विहीन था। पर फक्कड़ कहता है कि नाइयों को कहार से नीचे रहना कब पसन्द होता जब कि वे ब्राह्मण बनकर हिन्दूमात्र की चोटी पर बैठना चाहते हैं।

यदि नाई जाति यह कहे कि "भूल से संस्कृत पद अदल बदल हो गया और अर्थ भी तद्वत ही कर दिया गया" तो यह भी उत्तर ठीक नहीं क्योंकि फक्कड़ नाई जाति से फिर पूछता है कि आपने न्यायी वर्ण निर्णय के पृष्ठ ३४ में पुनः इस श्लोक को जैसे का तैसा कैसे लिख दिया? इस से प्रमाणित होता है कि ब्राह्मण बनने की इच्छा से यह सब कुछ जान बूझ कर किया गया है।

शूद्र कन्या में ब्राह्मण द्वारा व्यभिचार करने से व संस्कार रहित हो जाने से नाई जाति उत्पन्न हुई इससे लिखा है कि:—

व्यभिचारेण वर्णानां मवेद्यावेदनेनच।
स्वकर्मणाञ्च त्यागेन जायन्ते वर्णसंकरा॥

अर्थः—व्यभिचार करने से, विवाह के अयोग्य सगोत्रादि में विवाह कर लेने से और उपनयनादि स्वकर्मों को त्यागने से वर्ण-संकर पैदा होते हैं।

पुन·——

उग्राः मागश्च संयोगाज्जातः कुन्तलकाभिधः।
स नापित इति प्रोक्तः क्षौर कर्म विधानकृत ॥
श्मश्रुकृन्तन कृचैव नख कृन्तन् को विदः।
वृत्यानयाग्राममध्ये तिष्टन् वर्णेषु सेवकः ॥ ११६ ॥

जा० भा० १८८ ११५ से ११६

अर्थ—उग्रा स्त्री में मागध के संयोगसे कुन्तल होता है जिसे नापित या नाई कहते हैं यह हजामत बनाने का काम करे,डाढी मूंछ बनाने, नाखून काटने का काम करे इस वृत्ति से यह चार वर्णों की सेवा करता हुआ ग्राम के मध्य में निवास करे। अब प्रश्न यह है कि उग्र व मागध कौन होते हैं?

उत्तर—

उग्राःशूद्रा समुत्पन्ना क्षत्रिया देव केवलात्।

जा० भा० १८४२१२

अर्थात् क्षत्रिय पुरुष द्वारा शूद्रा स्त्री की सन्तान उग्र कह-लाती है।

क्षत्रिणी वैश्य संयोगाज्जातो मागध काभिधः।

अर्थात् वैश्य के संयोग से क्षत्रिया में मागध जाति उत्पन्न हुयी अतएव उग्र व मागध दोनों वर्ण संकर जाति हुये और इन दोनों वर्ण संकर जातियों द्वारा पैदा हुयी सन्तान "नाई जाति" महावर्ण संकर हुयी।

जा० भा० १६२ १७२ १७०

गोपनापित भिल्लाश्च तथा मोदक कूबरौ ॥२२२॥
इत्येव माद्या विप्रेन्द्र सच्छूद्राः परिकीर्त्तिता ॥२२३॥

अर्थ—गोप, नाई, भील, मोदक, कूबर, आदि ये सत शूद्र जातियें हैं।

पुनः—

वैश्यायां विप्रतश्चौर्यात्कुम्भकारः स उच्यते।
कुलाल वृत्त्या जीवेतु नापिता वा भवन्त्यतः॥

औशन स्मृ० ॥३२-३३

अर्थः—चोरी से वैश्या में ब्राह्मण द्वारा पैदा हुयी सन्तान नाई कहाती है। जो जन्म सूतक, रण सूतक तथा दीक्षा के समय केशों को काटते हैं।

ध० सं० २३४ फुट नोट तथा पृ० २३५-३२-३३

एक स्मृतीकार ने तो नाइयों के लिये यहां तक भी लिखा है किः—

ब्राह्मण्यां शूद्र जनितश्चाण्डाल स्त्रिविधःस्मृतः।
वर्धकी नापितो गोप आशायाः कुम्भकारकः॥

व्या० अ० १ श्लो० १०-१२ जा० भा० १५८

भावार्थः—ब्राह्मणी मा और शूद्र पिता से तीन प्रकार के चाण्डाल पैदा हुये हैं बढ़ई, नाई और अहीर आदि आदि जातियों को लिख कर अन्त में ऋषि जी ने लिखा है किः—

एतेन्त्यजाः समाख्याता ये चान्ये च गवाशनाः।
एषां सम्भाषणात्स्नानं दर्शना द्रवि वीक्षणम्॥

अर्थः—ये सब अन्त्यज हैं इनसे व दूसरे गो मांस भक्षियों से बात करने पर स्नान व सूर्यदर्शन से शुद्धि हो सकती है अर्थात् पवित्र हुआ जा सका है।

पुनः—न्यायी वर्ण निर्णय पृष्ठ १४ पं० १८ का लेखः—

(१) "वेद में तो नापित शब्द का पता नहीं"

पुनः—नायकुल की उत्पत्ति पृ० ५ पं० १८ में भी लिखा हैः—

(२) "नापित" शब्द वेदों में कहीं नहीं पाया जाता, नापित

शब्द का अर्थ है जिनका पता नहीं लगा। इस से यह उस समयका शब्द प्रतीति होता है कि जिस समय वंशानुगत जातियाँ ठहराई गयी थीं।

समीक्षक —जब वेदों में नापित शब्द ही नहीं है तो नापित जाति की उत्पत्ति वैदिक काल की नहीं कही जासको, जब ब्राह्मणादि चारों वर्णों की उत्पत्ति वेद के ब्राह्मणोऽस्य मुख मासीत्यादि मन्त्रों से सिद्ध है और नापित का पता नहीं तो सिद्ध होता है कि नापित जाति चारों वर्णों के अतिरिक्त किसी अन्य वर्ण में, व किसी अन्य नियम विरुद्ध क्रम से पैदा हुई हुयी है - और जिस जाति का पता ही नहीं लगा तो उसकी उत्पत्ति क्रम व ब्राह्मणत्व निर्णय कैसे हो गया ? जब वैदिक काल में नापित जाति थी ही नहीं तो क्षौर कर्म वैदिक कर्म कैसे बताया जाता है ? और जब वेदों में तक्षा, रथकार, बढ़ई, कुम्हार, लुहार, निषाद आदि आदि अनेकों जातियों के नाम मिलते हैं तो "नापित" नाम ही क्यों नहीं मिला ? और जब ये जातियां वेदों में मिलती हैं और नापित जाति का वेदों में पता नहीं लगा तो ये सब जातियें नापित जाति से बड़ी व नापित जाति इन बढ़ई लुहारादि जातियों से छोटी हुयी या नहीं ? ऐसी स्थिति में नापित जाति आधुनिक काल की होने से ब्राह्मण कैसे मानी जा सकी है ?

हिन्दू धर्म शास्त्रों में नाई जाति की उत्पत्ति विषय आचार्यों के भिन्न भिन्न मतों से निश्चय होता है कि जिस जिस ऋषि के समय में जिस जिस क्रम से नाई जाति पैदा हुई तदनुसार उस उस ऋषि ने नाई जाति की उत्पत्ति लिख मारी इसलिये सब ही के मत ठीक हैं।

नाई जाति की पुस्तक, 'नायकुल की उत्पत्ति' के पृष्ठ ४ में ऐसा लिखा है कि—

नायी तो पुराणों में अपने वर्ण से गिराया जाके सतशूद्र वा व्यवसागत जाति में परिगणित कर दिया गया, और इसकी उत्पत्ति पुराणों में कहीं तो क्षत्री पिता व शूद्रानी माता से,

जैसेः—

क्षत्रिया च शूद्र कन्यायाम् जातो नापित मोदकौ ॥

ना० कु० उ० पृ० ४ तथा बृहद्धर्म पुराणे

और कहीं ब्राह्मण पिता व वैश्यानी माता से ठहराई गयी है।

समीक्षकः—जब पुराणों के रचयिता व्यास जी नाई जाति को सतशूद्र ठहरा चुके तो नाई जाति के कहने व सिद्ध करने से नाई जाति को ब्राह्मण कौन मान सक्ता है? और व्यास जी की बात मानी जावे या नाई जाति की? इस ही की पुष्टि मिस्टर क्रुकसाहिब भी करते हैं यथाः—

According to one account they are descended from a Kshattriya father and a Sudra mother; according to Parashar from a Kuvery father and a Pattikar mother.

इस का भाव पूर्वोक्त श्लोकों में आ चुका है।

पुनः—न्यायी वर्ण निर्णय पृ० १५ पंक्ति १ से ७ तक

सूतके मेतके वापि दीक्षा कालेथ वापनम्।
नाभेरूर्ध्वं तु वपनं तस्मान्नापित उच्यते ॥

औश० ३४

अर्थः—सूतक, पातक और दीक्षान्त संस्कार के समय वपन करने और नाभि के ऊपर ऊपर वपन * करने से "नापित" कहाता है। नाभि से ऊपर का कर्म शूद्र कर्म नहीं हो सकता यह नाई के शूद्र न होने पर प्रकाश डालता है।

समीक्षकः—नाई के शूद्र होने से आप क्यों डरते हैं? नाई को शूद्र सिद्ध करने वाले प्रमाण तो आप ही अपनी 'न्यायी वर्ण

* हजामत ।

निर्णय' के पृष्ठ २५ में व्यास स्मृति तथा पाराशर स्मृति के हवाले देकर दो श्लोक लिख आये हैं और उन्हीं दोनों श्लोकों से मिलता हुआ मनु० अ० ४ श्लोक २३५ भी देख लीजिये कि मनु भगवान् नाई जाति को शूद्र बतलाते हैं या नहीं ? फिर जब आप औशन स्मृति का ३४ वां श्लोक अपने पक्ष में मानते हैं तो विचारे ३३ वें श्लोक ने आप का क्या बिगाड़ा ? जो नाई जाति को वर्ण संकर याने व्यभिचारसे पैदा हुयी बतलाता है *कहिये इस श्लोक को आपने अपनी न्या० व० नि० के पृष्ठ १८ में क्यों नहीं माना ? मित्र जी ! यह तो आपका कृत्य मीठा मीठा गप्प और कडुवा कडुवा थू के समान है।

फिर यह कहना कि "नाभि से ऊपर का कर्म शूद्र कर्म नहीं हो सक्ता" अतएव इस पर प्रश्न यह होते हैं कि नाभि से ऊपर ऊपर पेट मसलना, तेल लगाना, पीठ मसलना, पीठ दाबना, सिर दाबना सिर में तेल लगाना नाभि से ऊपर के अंग में उबटना लगाना, नाभि से ऊपर के अंग को मल मल कर निहलाना, स्त्रियों के सिर चोटी गूथना, सिर में से जू व लीख निकालना आदि आदि नाभि से ऊपर के कर्म शूद्र कर्म हैं या नहीं ? यदि कहो नहीं तो प्रमाण द्वारा सिद्ध कीजिये और यदि कहो ये कर्म शूद्र कर्म हैं तो आपका लिखना व मानना मिथ्या सिद्ध हुआ।

यदि किञ्चित काल के लिये यह ही मानलिया जाय तो नाभि से नीचे का कर्म शूद्र कर्म हुआ अतएव पैर दाबना, पगधोई करना (पैर धोना) पैरों में तेल लगाना, पैरों में उबटना लगाना, पैरों के नाखून काटना, पैरों को निहलाना, सुन्नत करना आदि आदि नाभि से नीचे के कर्म करने वाली जाति आपही की तर्क से शूद्र सिद्ध हुयी।

---

* वैश्यायां विप्रतश्चौर्यात् कुम्भकार स उच्यते।
कुलाल वृत्त्या जीवेत्तु नापिताचा भवन्त्यतः॥
देखो न्यायी व नि पृ० १६ तथा औश० ३३

पुनः—न्यायी वर्ण निर्णय पृष्ठ २५ की पंक्ति १६ से २५ तक का लेख

नापितान्वय मित्रार्ध सीरिणो दास गोपकाः।
शूद्राणामप्यमीषां तु भुक्त्वान्नंनैव दुष्यति॥

व्या० स्मृ० ३।५१

शूद्रों में से न्यायी, प्यारा मित्र, खेती का सीरी (साझीदार) दास और गोप इनका अन्न खाकर दूषित नहीं होता॥

दास नापित गोपाल कुल मित्रार्ध सीरिणः।
एतेशूद्रेषु भोज्यान्ना यश्चात्मानंविधीयते॥

पाराशर ११।२२

दास, न्यायी, गोप, मित्र खेती का सीरी और जो आत्म समर्पण कर दे इन शूद्रों का अन्न भोज्य है।

समीक्षक:—नाई जाति के वर्ण निर्णय विषय में नाइयों के माने हुये ये उपरोक्त दोनों श्लोक ही पर्य्याप्त हैं जिनमें नाई जाति की गणना शूद्रों में हुयी है। इन्हीं दोनों श्लोकों की पुष्टि मनु धर्म शास्त्र से भी होती है यथा:—

आर्धिकः कुलमित्रं च गोपालो दास नापितौ।
एतेशूद्रेषु भोज्यान्ना यश्चात्मानं निवेदयेत्॥

मनु० अ० ४ श्लो० २५३

यह श्लोक भी ऊपर के श्लोकों के समान ही है और इन सब ही आचार्य्यों ने नाई जाति को शूद्रों में मानी है।

परन्तु न्यायी वर्ण निर्णय कर्ता जी ने उपरोक्त दोनों श्लोकों को इस आशय से लिखे हैं कि "नाई का धान्य खाने में ब्राह्मणों को दोष नहीं लगता है अतएव नाई ब्राह्मण हैं" पर यह आशय उचित नहीं है क्योंकि किसी का अन्न ग्रहण करलेने व न करलेने मात्र पर उसका ब्राह्मण व अब्राह्मण होना शास्त्रीय व्यवस्था द्वारा नियमित नहीं है तिस पर भी न्यायी वर्ण निर्णय कर्ता जी ने इन श्लकों के

अर्थों में व भाव में ही फेर फार कर दिया है अतएव यथार्थ अर्थ इस प्रकार है —

भाष्यम्ः—आर्धिक इति ॥ आर्धिकः कार्षिकः। सबन्धि शब्दाश्चैते। यो यस्य कृषिं करोति स तस्य भोज्यान्नः। एव स्वकुलस्य मित्र, यो यस्य गोपालो, यो यस्य दासः यो यस्य नापितः कर्म करोति, यो यस्मिन्नात्मान निवेदयति दुर्गतिरहं त्वदीय सेवा कुर्वन्निति च त्वत्समीपे वसामीति यः शूद्रस्तस्य भोज्यान्नः ॥ २५३ ॥

भावार्थ—खेती में आधे का साझीदार, अपना कुल मित्र, अपना ग्वाला, अपना दास, अपना नाई, और जो अपने आप को अर्पण करदे शूद्रों में से इनका अन्न भोज्य है ॥ २५३ ॥

इस अर्थ से यह कहीं नहीं निकलता है कि ब्राह्मण नाई मात्र का अन्न ग्रहण कर लेवे वरन इसका भाव यह है कि जो नाई जिस ब्राह्मण के घर का नाई है कुल परम्परा से चला आ रहा है, जो आदि से उसकी ही सेवा सुश्रुषा करके अपना निर्वाह करता है जो उसके घर का कमीण है और जो उसके ही अन्न से पलता है ऐसे नाई का अन्न उसके यजमान ब्राह्मण को ग्रहण कर लेना चाहिये न कि नाई मात्र का।

क्योंकि ऐसे नाई के घर में जो कुछ समृद्धि है वह सब उसके यहाँ ब्राह्मण यजमान के घर से ही आयी हुयी है अतएव उस नाई का अन्न उसके यजमान ब्राह्मण के लिये मानों उसके ही घर का अन्न है इस ही लिये टीकाकारों ने भी "अपना नाई" ऐसा अर्थ किया है इस से सिद्ध होता है कि अन्य जाति के नाई का अन्न ब्राह्मण को वर्जनीय ही है।

शूद्रेषु दास गोपाल कुल मित्रार्ध सीरिणः।
भोज्यान्नाःनापितश्चैव यश्चात्मानं निवेदयेत॥

याज्ञ० अ० १ श्लो० १६६ छापा थो वेङ्के० मुम्बई सम्वत् १९५१ पृ०७४

भाष्यः—दास गोपाल कुल मित्रार्द्ध सीरिणः । च पुनः नापितः च पुनः यः आत्मानं निवेदयेत् एते शूद्रेषु भोज्यान्नः भवित ॥

भावार्थः—दास, गोपाल, कुलमित्र, अर्द्धसीरी नाई और जो अपनी आत्मा को समर्पण करे शूद्रोंमें इनका अन्न भोजनके योग्य है ।

पुनः—

पाराशर स्मृति के उपरोक्त श्लोककी टीका करते हुये स्वर्गीय पं० भीमसेन शर्म्मा जी वेदव्याख्याता लिखते हैं कि " दास नाई आदि आदि ये सब शूद्रों में भोजन करने योग्य हैं" और नाई जाति ने भी इस श्लोक के अर्थ में " इन शूद्रों का " ऐसा लिखा है अतएव न्यायी वर्ण निर्णय रचयिताके लेख से ही नाई जाति शूद्र सिद्ध है:—

फिर पंडित भीमसैन जी लिखते हैं कि 'इनका व शरणागत शूद्र का सूखा अन्न आटा दाल आदि भोजनार्थ लेने में ब्राह्मण को दोष नहीं लगता है ।

वे० व्याख्या० का अनुवाद पृ० ७७

पुनः—

नापितान्वय मित्रार्द्ध सीरिणो दास गोपकाः ।
शूद्राणां मप्यमीषान्तु भुक्त्वान्नं नैव दुष्यति ॥

व्य० ३-५१ पृ० २५

भावार्थः—नाई वंशपरंपरा से मित्र, अर्द्ध सीरी, दास, अहीर इतने शूद्रों के भी अन्न को खाकर दोष भागी नहीं होता है ।

पुनः—न्यायी वर्ण निर्णय पृष्ठ २७ पंक्ति ५ से १२ तक में लिखा है:—

" नाई दाई वैद कसाई इन का सूतक कभी न जाई *

---

* यह मिस्टर क्रूक साहब की Tribes and Castes Page 45, मा० म० रिपोर्ट पृष्ठ ४५९ और जाति अन्वेषण पृष्ठ २८२ में लिखा मिलता है ।

परन्तु यह शास्त्र विरुद्ध है देखो—

शिल्पिनः कारुका वैद्या दासी दासश्च नापिताः।
राजानः श्रोत्रियाश्चैव सद्यः शौचाः प्रकीर्तिताः॥

पाराशर १। २२॥

शिल्पी (दस्तकार), कारीगर, वैद्य, दासी, दास, न्यायी, राजा और श्रोत्रिय (वेद पाठी) इनके सूतक पातक तत्काल दूर हो जाते हैं—

समीक्षक—नाई जाति निर्णयकर्ता जी से हम पूछते हैं कि उपरोक्त श्लोक के अर्थ में जो आपने "सूतक पातक" अर्थ किया है वह पातकवाची शब्द श्लोक में कौनसा है? यदि कोई नहीं है तो आपने "पातक" शब्द लिखकर सर्व साधारण को भ्रम में डाल दिया है ऐसा स्वार्थवश नहीं करना चाहिये था—जब नाई आदिकों के पातक आपके लेखानुसार तत्काल दूर हो जाते हैं तब तो धर्मशास्त्रों की आज्ञा में जिनमें पातकों के प्रायश्चित्त लिखे हैं वे सब व्यर्थ सिद्ध हुये?

धर्मशास्त्रों के श्लोक का आदि अन्त के प्रकरण को बिना विचारे अर्थ करना अर्थ का अनर्थ करना है इसका यथार्थ अर्थ धर्म० सं० के पृष्ठ ३०५ में ऐसा किया गया है कि शिल्पी (बढ़ई लुहारादि) कारुक, चित्रकार, वैद्य, दासी, दास नाई, राजा और श्रोत्रिय ब्राह्मण (अपने अपने कार्य्य के लिये) अशौच के आरम्भ में ही शुद्ध हो जाते हैं॥

ब्रह्मचारी यतिश्चैव मन्त्रेपूर्वे कृते तथा।
यज्ञे विवाहकालेच सद्यः शौचविधीयते॥

अ० स्मृति० श्लो० ८५, ध० सं० ३०८

ब्रह्मचारी, संन्यासी और अशौच के पहिले मन्त्र के जप का संकल्प करने वाले को तथा यज्ञ और विवाह के समय अशौच नहीं लगता है और तत्काल शुद्धि हो जाती है।

पाठक! यह ही भाव नाइयों के माने हुये श्लोक का भी है कि विवाह यज्ञादिकों की सेवा विशेष के लिये नाई आदिकों की आवश्यकता हो और उनके बिना विवाह यज्ञादिकों में विघ्न पड़ने की सम्भावना हो और उस समय नाई आदिकों के यहां किसी प्रकार का अशौचविशेष होगया हो तो उस समय उनकी तत्काल शुद्धि मानी जा सक्ती है और उनसे काम लिया जा सक्ता है अतएव 'न्यायी वर्ण निर्णय' कर्ता जी का यह भाव कि "नाई आदि सदा पवित्र हैं और ब्राह्मण हैं" बिलकुल मिथ्या है और "नाई दाई वैद्य कसाई इन का सूतक कभी न जाई" इस किम्वदन्ति को कई विद्वानों ने लिखी है अतएव सच्ची है, पर नाई जाति को ब्राह्मण जाति का चचा बनाने की किम्वदन्ति जो न्यायी वर्ण निर्णय में लिखी है बिलकुल मन घड़ंत है क्योंकि इस किम्वदन्ति को किसी अन्य प्रसिद्ध विद्वान् ने नहीं लिखी है।

पुनः—न्यायीवर्ण निर्णय पृष्ठ २७ पंक्ति २२ से २६ तक प्रत्येक शुभ कर्म में ब्राह्मण के समान न्यायी भी दक्षिणा प्राप्त करता है। इस समय अनेक प्रदेशों में ब्राह्मणों को किसी शुभ अवसर पर दान मिलता है तो उसका आधा न्यायी को दिया जाता है जैसे यदि कोई सेठ १) जनेऊ ब्राह्मण को दे तो ॥) व्यक्ति न्यायी जनों को मिलेंगे।

समीक्षकः—श्याबास बहादुर! श्याबास!! खूब सूझी!!! अब तो सेठ लोग नाइयों को ॥) व जनेऊ देने लगे तब कसर क्या रही? इसकी सत्यता के लिये क्या आप सेठों के पुराने बहीखाते दान पत्र, पट्टे, परवाने व स्टाम्प आदि ऐसे दिखला सक्ते हो जिससे

यह प्रमाणित हो कि नाइयों को दक्षिणा व दान स्वरूप में अमुक द्रव्य मिला था? व अमुक अमुक प्रसिद्ध प्रसिद्ध सेठ साहूकार, रईस व जागीरदारों ने नाइयों के पैर पूजे थे? भला यह क्यों नहीं कहते कि "नाइयों को उनकी चाकरी के बदले में कमीणी का नेग मिलता है?"

इससे अब हमें तो यह निश्चय हो गया है कि छोटी श्रेणी के ब्राह्मणों की तरह, व खड़िया मिट्टी धारी सम्प्रदाय की तरह आप नाई जाति के हाथों में लुटिया देकर भीख मंगवावेंगे। संसार जानता है कि नाई लोग धर्म पुण्य का खाने वाले नहीं बल्कि अपने खून का पसीना करके चाकरी का पैसा लेते हैं फिर भी उन बेचारों को वही पुराने जमाने की रेट (दस्तूर) के अनुसार नेग मिलते हैं जिससे उनका निर्वाह भी कठिनता से होता है।

पुनः—न्यायी वर्ण निर्णय पृष्ठ २८ पंक्ति १६ में लिखा है कि.—

"न्यायी का कर्म (क्षौर कर्म) वैदिक है"

समीक्षक—नाई जाति के अनकों प्रकार के छोटे छोटे व सेवा वृत्ति के दास कर्मों में से मुख्य प्रचलित कर्म "क्षौर कर्म" है याने हजामत करना व नखून काटना है इस ही को न्यायी वर्ण निर्णय कर्ता जी ने वैदिक कर्म अर्थात् एक पवित्र कर्म लिखा है पर यह सरासर भूल व सर्वसाधारण की आंखों में धूल झोंकना है क्योंकि एक कहावत प्रचलित है कि:—

आंखों देखी परसराम कभी न झूठी होय।

अर्थात् जो बात आंखों देखी होती है वह कभी भी झूठी नहीं होती है अतएव हम देखते हैं कि हिन्दु मात्र हजामत कराकर स्नान कर लेते हैं तब किसी पवित्र वस्तु को छूते हैं अन्यथा नहीं, इसलिये यदि हजामत करना कोई पवित्र वैदिक कर्म होता तो हिन्दु जनता क्षौर के पश्चात् स्नान न करती

होती, लिखा, भी है कि:—

दुःस्वप्नं यदि पश्येत्तु वान्तेवा क्षुर कर्मणि।
मैथुने प्रेत धूम्रे च स्नान मेव विधीयते॥

पा० १२-१ तथा ध० सं० ३७३-१३

अर्थः—यदि दुःस्वप्न देखे, वान्त करे, क्षौर कर्म करावे, मैथुन करे अथवा चिता के धूम्र से स्पर्श हो जाय तो स्नान करना चाहिये।

अतएव क्षौर कर्म यदि वैदिक कर्म याने कोई पवित्र कर्म होता तो क्षौर के किये जाने से अपवित्रता न आजाती और जब अपवित्रता आगयी और स्नान करने से शुद्धि हुयी तो ऐसा कर्म वैदिक कर्म नहीं कहा जा सक्ता है। और वह उच्च कर्म भी नहीं माना जा सक्ता है।

हमारे जाति अन्वेषण काल में हमारा मिलना ब्रजवासी पं० चिरंजीवलाल जी शर्म्मा चतुर्वेदी गौड़ से हुआ था तिन्होंने हमारी नाई जाति मीमांसा के लिखित विवर्ण को देख कर अपनी कलम से शास्त्रीय यह श्लोक और लिख दिया था:—

विना यज्ञं विना तीर्थं, मातृ पितु मरणं विना।
केशनं वपनं कुर्यात् ब्रह्महत्या समाचरेत्॥

अर्थः— विना यज्ञादिक कर्म विशेषों के, विना तीर्थ यात्रा के और माता पितादि के देहान्तादि समयों के विना जो हज़ामत करे तो ब्रह्महत्या के बराबर है। अतएव जो नित्य हजामत मूंड मूड कर व स्त्रियों की सिर चोटी करके सैकड़ों जीवों की नित्य हत्या करते हैं क्या वे ब्राह्मण हो सक्ते हैं? हमें यह सन्देह है। और क्या ऐसा हत्या युक्त कर्म वैदिक कर्म कहा जा सक्ता है?

पुनः—न्यायी वर्ण निर्णय पृष्ठ ३३ पंक्ति ४ और १४ से २४ तक का लेख.—

न्यायी को वेदाधिकार।

समीक्षक—इस की पुष्टि में आर्य्य सामाजिक सिद्धान्त लिखा है अतः इस पर कुछ वक्तव्य नहीं है क्योंकि आर्य्य सामाजिक क्रम से तो भंगी भी वेद पढ़ सका है। आर्य्य सामाजिक सिद्धांत के अतिरिक्त न्यायी के वेदाधिकार में न्यायी वर्ण निर्णय कर्ता जी ने ये प्रमाण दिये हैं यथा—

(१) आचान्तोदकाय गौरिति नापितस्त्रिर्ब्रूयात् ॥

गोभिल प्र० ४ खं० १० सू० १२०

यजमान के आचमनादि कर लेने पर नापित तीनवार "गौ" बोले ।। तिस पर यजमान.—

(२) मुञ्चगां वरुण पाशाद्द्विषन्त मेऽभिधेहीतित जह्य मुष्य चोभयोरुत्सृज गामत्तु तृणानि पिबतूदक मिति ब्रूयात् ॥

गोभिल अ० ४ खं० १ सू० १८

इस मन्त्र को बोलकर गौ छुडावे, अर्थात् नापित मन्त्र बोलने और सुनने दोनों का अधिकारी है।

समीक्षक—उपरोक्त लेख से नाइयों को वेदाधिकार सिद्ध नहीं होता है अर्थात् नाई जो तीन बार गौ गौ गौ बोले तो गौ का नाम लेना कोई वेद मंत्र नहीं है। हां जो मंत्र है उसे "यजमान" बोलता है अतएव नाई जाति के लेख से ही नाइयों को वेदाधिकार सिद्ध नहीं होता है।

देखिये न्यायी वर्ण निर्णयकर्ता जी के गुरु स्वामी दयानन्द

जी क्या लिखते हैं:—

ओं अमृतापिधानमसि स्वाहा।
ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।

इन दो मन्त्रों से दो आचमन अर्थात् एक से एक और दूसरे से दूसरा वर करे तत्पश्चात् वर पृष्ठ २२ में लिखा प्रमाण चक्षुरादि इन्द्रियों का जल से स्पर्श करे पश्चात् कन्याः—

ओं गौ गौ गौः प्रतिगृह्यताम्

इस वाक्य से वर की विन्ती करके अपनी शक्ति के योग्य वर को गोदानादि द्रव्य जो कि वर के योग्य हों अर्पण करे और वर—

ओं प्रतिगृह्णामि।

इस वाक्य से उसको ग्रहण करे। सं० वि० पृ० १२२

पाठक! गुरू जी के लेख से भी नाइयों को वेदमंत्र पढ़ने का अधिकार सिद्ध नहीं होता क्योंकि "गौः गौः गौः" यह वाक्य है मन्त्र नहीं और इसको भी कन्या बोले—नापित का तो इस में कहीं नाम मात्र भी नहीं है। कहिये गुरू जी सच्चे व चेला जी?

पुनः प्रचलित पद्धित देखियेः—

मधुपर्क के अनन्तर अंगन्यास करे अर्थात् वर आचमन कर के इन्द्रिय स्पर्श करे तत्पश्चातः—

ततो यजमान द्वारा गौ गौ गौरिति पाठः॥ अत्र वर-यजमानाभ्यां तृणच्छेदन माचारोनतु विधिः। अतएव पद्धतिषु ततो वर स्तृणं यजमाने न सह गृहीत्वाऽग्रिम मंत्रं पठेत्॥ ओं माता रुद्राणामिति।

अर्थः—तदन्तर यजमान द्वारा (गौ गौ गौः) यह तीन बार कहाना। यहां वर यजमान का तृण छेदन आचार है विधि नहीं है

इसलिये पद्धतियों में वर यजमान के साथ अग्रिम मन्त्र पढ़े (माता-रुद्राणामिति)

देखो नवरत्न विवाह पद्धति पृष्ठ १३९-१४०

समीक्षक—आजकल इस ही पद्धति के अनुसार सर्वत्र विवाह कर्म कराया जाता है और इस में नाई का कहीं नाम भी नहीं है यहां तीन बार गौः का उच्चारण यजमान करे ऐसा विधान है न कि नाई।

विवाहादि संस्कारों में विशेष क्रियायें तो शास्त्र विधि के अनुसार की जाती हैं परन्तु कोई कोई क्रिया लोक प्रथा याने लौकिक व्यवहारानुकूल भी की जाती हैं तदनुसार ही पद्धतिकार लिखते हैं कि यह आचार है विधि नहीं है अर्थात् कर्मकाण्ड में जो विधि होती है वह तो अवश्य ही सर्वत्र करनी व माननी पडती है परन्तु जो विधिवाक्य नहीं और लोकाचार आधुनिक क्रिया है वह सर्वत्र नहीं किन्तु किसी देश व समुदाय विशेष में की जाती है तदनुसार पद्धतिकार भी लिखते हैं कि—" ततो यजमान द्वारा गौ गौं गौं रिति पाठ, अत्र वर यजमानाभ्यां तृणच्छेदन माचारो नतु विधि." अतएव यह क्रिया हमारे देखने में तो नहीं आयी।

थोडी देर के लिये ऐसा मान भी लिया जाय कि नाई को गौ गौ गौ बोलने का विधान है तो हम पहिले ही कह आये हैं कि गौ गौ गौ कोई मन्त्र नहीं है अस्तु।

पर जहां कहीं यह प्रथा प्रचलित है वह विशेष रूप से मांस भक्षी, वाममार्गी तान्त्रिकों में प्रचलित होगी और यह विधान प्रक्षिप्त प्रतीत होता है क्योंकि यवनात्याचार के समय व तान्त्रिकों की प्राधान्यता के समय आर्षग्रन्थों में ऋषियों के नाम पर लोगों ने अनेकों अनर्थकारी बातें मिला दीं जो आजकल कलियुग में त्याज्य हैं।

यह प्रकरण जो चल रहा है मधुपर्क व अंगन्यास का है तहां मधुपर्क के विधान में ऐसे अनर्थकारी प्रक्षिप्त लेख आर्ष ग्रन्थों में मिले हैं जैसेः—

धेन्वनडुहोर्भक्ष्यम्

यह आपस्तम्बीय धर्म सूत्र प्रथम प्रश्नके पंचमी पटल कंडिक १८ में लिखा है इसकी टीका हरदत्त जी ने ऐसी की है कि—"धेन्वनडुहोर्मांसं भक्ष्यम्" अर्थात् गाय और बैल का मांस खाने योग्य है। इसही का अङ्गरेजी अर्थः—

Translated by George Buhler Edited by F. Max muller Page 64 में लिखा है कि The meat of milch-cows and oxen may be eaten.

नोटः—अङ्गरेजों का किया अर्थ यों लिखा है कि नाई जाति की श्रद्धा अङ्गरेजों के किये अर्थ पर विशेष है तदनुसार न्यायी व० नि० कर्ता ने मिस्टर विल्सन के किये अर्थ को प्रमाण माना है।

और भी देखियेः—

आश्वलायन गृह्य सूत्र अध्याय १ कंडिका २४ में मधुपर्क का स्वरूप वर्णन किया है उस में लिखा है किः—

नामांसो मधुपर्को भवति भवति ॥ २६ ॥

भाष्यम्ः—मधुपर्कांगं आश्वलायन गृह्य सूत्रे भोजनम् मांसं न भवतीत्यर्थः। कुतः। मांसस्य भोजनांगत्वेन लोके प्रसिद्धत्वात्। अनेनाभ्युपायेन भोजनमप्यत्र विहितं भवति। पशुकरण पक्षे तन्मांसेनं भोजनम्। उत्सर्जन पक्षे मांसांतरेण। अध्यायांत लक्षणार्थं द्विवचनं मंगलार्थं च ॥२६॥

पुनः—"न्यायी वर्ण निर्णय" के पृष्ठ ३८ में लिखा है कि नाई राजाओं के गुरु रहे हैं और इसकी पुष्टि में आपने (Professor Wilson) प्रोफेसर विल्सनका लेख दियाहै इसही तरह "नाय कुलकी

उत्पत्ति" के पृष्ठ १२ के फुट नोट में Wilson Rig Veda IV 233X142-4 का प्रमाण भी दिया है अतएव सिद्ध होता है कि नाई जाति के सज्जन लोग अगरेजों के किये वेद भाष्य पर विशेष श्रद्धा रखते हैं अतएव उनके सन्तोषार्थ उपरोक्त मधुपर्क सम्बन्धी मत्रों का भाष्य अङ्गरेज महाशयों का किया ही हम भी यहां देते हैं —

Asvalayan Grihya Sutra Page 199 Translated by Hermaun Oldenberg, Edited by F MaxMuller(30)

When he has sipped water, they anounce to him the cow (31) Having Murmured "Destroyed is my sin, my sin is destroyed" he says, "Om do it" if he chooses to have her killed

(32) Having murmured, 'The mother of the Rudras, the daughter of the vasus,' (Rig Veda VIII 90—15) (he says) 'Om let her loose,' if he chooses to let her loose (33) Let the madhuparka not be without flesh, without flesh

भावार्थ —यही है कि मधुपर्क गौ मांस विना नहीं होता है। पारस्कराचार्य्य का मत भी ऐसा ही है।

आश्वलायन गृह्य सूत्र अध्याय १ कण्डिका २४ में मधुपर्क का स्वरूप वर्णन किया है उसमें लिखा है कि गौ देकर "हतो मे पाप्मा" इत्यादि मत्र का जाप करके उसको मारे और यदि छोड देने की इच्छा होवे तो " माता रुद्राणां " इत्यादि मन्त्रका जाप करके छोड़ देवे परन्तु उसके स्थान पर और दूसरा मांस अवश्य होना चाहिये। " गौर्गौर्गौः " नाई द्वारा उच्चारण करना कराना भी एक आचार्य का मत है परन्तु यह एक महापापमयी प्रसंग है जिसके नाम लेने में भी सच्चा हिंदु पाप समझता है पर ये विवाह में मधुपर्क से सबध रखनेवाली किया है।

आश्वलायन गृह्य सूत्र की अध्याय १ कंडिका २५ में मधुपर्क का स्वरूप वर्णन किया है वहां लिखा है कि गौ देकर 'हतोमे पाप्मा' इत्यादि मंत्र का जाप करके उसको मारे और यदि छोड़ देने की मरज़ी होवे तो " माता रुद्राणां " इत्यादि मन्त्र का जाप करके छोड़ देवे परन्तु उसके स्थान पर और दूसरा मांस अवश्य होना चाहिये क्योंकि मधुपर्क सम्बन्धी भोजन विना मांस के नहीं होता है। तथा च तत्पाठः ॥

आचांतको दकाय गा वेदयंते ॥२३॥

हतो मे पाप्मा पाप्मा मे हत इति जपित्वोङ्कुरुतेति कारयिष्यन् ॥ २४ ॥

(गार्ग्य नारायणीय वृत्तिर्यथा—इमं मंत्रं जपित्वा ओं कुरुतेति ब्रूयात् यदि कारयिष्यन् मारयिष्यन् भवति तदा च दाता आलभेत् । तत्र देवताः प्रागुक्ताः)

माता रुद्राणां दुहिता वसुना मिति जपित्वो मुत्सृजते त्युत्स्रक्ष्यन् ॥२५॥

वृत्तिः–मधुत्स्रक्ष्यन् तदा एतां जपत्वा ओं मुत्सृजतेति ब्रूयात् ॥२५॥

समीक्षकः—अब हम नाई जाति के अग्रगन्ताओं से कहते हैं कि जब प्राचीन ऋषि प्रणीत ग्रंथों में गाय का मारना गाय व बैल का मांस खाना आदि आदि पापमय प्रक्षिप्त विधान मिलते हैं तब यदि किसी देश विशेष में नाई से गौर्गौर्गौः विवाह में कहलवा कर तृण छेदन करा दिया तो इस से नाई जाति ब्राह्मण सिद्ध नहीं हुयी, कदाचित यह रीति इस कारण पड़ी होगी कि—"पहिले मधुपर्क में गौ मारी जाती थी तो अब उसकी नकल नाई से गौर्गौर्गौः कहलवा कर तृण छेदन करा देते हैं अर्थात् साक्षात् गौ को न मरवा

कर क्षुधा रूपी तृषा को नाई द्वारा तुड़वा डालते हैं ऐसा करने कराने वाले इस कृत्य के भावार्थ को न समझ कर लीक के फकीर बन कर कहीं कहीं अन्ध परंपरा के अनुसार करते कराते चले चले आ रहे हैं।

दूसरी बात यह भी जान पड़ती है कि कलियुग में गौ का मारना तो दूर रहा नाम मात्र से ही पाप लगता है तब इस पापमय अंध परंपरा की पृथा को करने के लिये नाई द्वारा इस कृत्य को कहा कर सब पाप का भार उस पर डाल दिया गया अतएव ऐसे पाप मय कर्म को करने से नाई जाति का ब्राह्मणत्व सिद्ध न होकर उलटा नीचत्व सिद्ध होता है।

पुनः न्यायी वर्ण निर्णय पृष्ठ ४१ पंक्ति २० से पृ० ४२ की पंक्ति १ से ३ तक का लेख

वेद ने न्यायी को ब्राह्मण कहा वेद भगवान् ने तो न्यायी को स्पष्ट ही ब्राह्मण कहा है। देखो —

ओं येनावपत्सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान्।
तेन ब्रह्माणो वपतेदमस्य गोमानश्ववानयं मस्तु प्रजावान्॥

अथर्व का० ६ सू० ६८

अर्थ —जिस क्षुर से विद्वान् सविता (सर्व प्रेरक) ने सोम, राजा और वरुण का क्षौर किया उससे ब्राह्मण (न्यायी ब्राह्मण) इसके केश काटे और यह गौ वाला, घोड़े वाला और सुसन्तान वाला हो।

समीक्षक—पाठक! देखा आपने विचित्र अर्थ व ब्राह्मण बनने की युक्ति? क्या न हो नाइयों की उपरोक्त पुस्तक किसी ब्राह्मण विद्वान् की तो बनायी हुयी है ही नहीं किन्तु दीपचन्द जी नाई के पुत्र रेवतीप्रसाद नाई आर्य्यसमाजी की बनाई हुई है। ये दोनों

पिता पुत्र जयपुर राज्यान्तर्गत जोबनेर ठिकाने में बहुत वर्ष रहे हैं। वहां के रईस मान्यवर ठाकुर नरेन्द्रसिंह जी के यहां दीपचंद जी किसी नौकरी पर थे तहां के स्कूल में रेवतीप्रसाद पढ़े और तहां से ही पठनार्थ आर्य्य समाजी गुरुकुल ज्वालापुर में आप चले गये थे कहने का भाव यह कि आप पक्के आर्य्य समाजी हैं और गुरुकुल से आकर ही यह नवीन आविष्कार किया गया है।

परन्तु आप तो अपने गुरु स्वामी दयानन्द जी से भी दो कदम आगे बढ़ गये अर्थात् स्वामी जी ने संस्कार विधि पृष्ठ ६८ के अन्त में इस ही उपरोक्त मंत्र को लिख कर लिखा है कि " इस मंत्र को बोलकर कुश सहित (पिता) उन केशों को काटे" इसके पश्चात् स्वामी जी ने लिखा है "ओं येन धाता, ओं येन भूयश्च, येन-पूषा, ओं येन भूरिश्च और ओं त्र्यायुषं" इन पांच मंत्रों से लड़के का पिता बाल समूहों को काटे तत्पश्चात् बालक का पिता मंत्र पूरा हुये पश्चात् छुरा नाई के हाथ में देके:—

"ओं यत्क्षुरेण मर्चयता" इस मंत्र को बोल कर नापित से पथरी पर छुरे की धार तेज कराकर नापित से बालक का पिता कहे कि इस शीतोष्ण जल से बालक का शिर अच्छे अच्छे कोमल हाथ से भिगो सावधानी और कोमल हाथ से क्षौर कर कहीं छुरा न लगने पावे।

अब कहिये गुरु जी सच्चे व चेला जी? गुरु जी ने तो नाइयों को ब्राह्मण नहीं लिखा तब चेला जी का लिखना कौन माने? क्या अन्य आर्य्य समाजी नाई जो रेवतीप्रसाद जी के साथ हैं वे रेवतीप्रसाद के इस कृत्य से स्वामी दयानन्द का अपमान नहीं समझते? जिस प्रकार कोई स्वामी अपने शूद्र सेवक को शिक्षा करता है तैसे ही श्री स्वामी जी महाराज ने नापित को शिक्षा लिखी है इससे ब्राह्मण बनने वाली नाई जाति का अपमान होता है अतएव उचित

तो यह है कि या तो आर्य्यसमाजी नाई लोग रेवतीप्रसाद जी का साथ छोड़ दें और पक्के आर्य्यसमाजी बन जांय या स्वामी दया-नन्द के मत को छोड कर सनातनधर्मी बन जांय। क्योंकि जहाँ जहाँ मुंडन संस्कार में मंत्रोक्त क्रिया है वह सब बालक का पिता करे और बाकी बचे खुचे बालों को नाई काटे तब नाई ब्राह्मण कहाँ हुआ? क्योंकि नाई को मन्त्र पढ़ने की आज्ञा नहीं दियी।

श्री स्वामी जी ने तो साफ २ लिख दिया है कि "मन्त्र पूरा हुये पश्चात् छुरा नाई के हाथ में देके "ओं यत् क्षुरेण" मंत्र को बोल के नापित से पथरी पर छुरे की धार तेज कराके इत्यादि।

देखो संस्कार विधि० चूडाकर्म पृ० ७०

समीक्षक—इससे भी साफ साफ यह ही सिद्ध होता है कि मंत्रोक्त सम्पूर्ण क्रिया ब्राह्मण व बालक का पिता करे और गौण सेवा सम्बन्धी कार्य्य नाई से लिया जाय यदि स्वामी जी नाई जाति को ब्राह्मण मानते तो ऐसा लिख देते कि "ओं यत्क्षुरेण मर्चयता इत्यादि मन्त्र को बोल कर नायी पथरी पर छुरे की धार तेज करे" अस्तु।

यदि यह कहा जाय कि मुंडन संस्कार में द्विजाति के बालक का पिता क्षौर करता है और क्षौर करना नाई का काम है जिसे हमारी जाति कर रही है अतः हम द्विजाति हैं पर यह युक्ति ठीक नहीं क्योंकि बालक का मल मूत्र भी माता पिता उठाते हैं पर वे भंगी नहीं हो सकते तदनुसार बाल काटने से कोई नाई भी नहीं हो सकता है। अतएव क्षौर कर्म ब्राह्मण कर्म त्रिकाल में भी नहीं हो सकता है।

प्रश्न—यदि नाई जाति यह कहे कि "बालक के पिता को मंत्र पढ़कर मुंडन संस्कार में क्षौर कर्म करने का विधान है तब क्षौर कर्म ब्राह्मण कर्म क्यों नहीं है?"

उत्तर—प्रथम यह सब कुछ आर्य्य सामाजिक संस्कार विधि का आधार होने से सनातन धर्मावलम्बियों के किसी काम का नहीं।

फिर भी यदि स्वामी जी का लेख सच ही मान लिया जाय तो "नाई दाई वैद कसाई इनका सूतक कभी न जाई" तथा ब्राह्मण सर्वस्व में माननीय पं० ब्रह्मदेव मिश्र शास्त्री काव्यतीर्थ जी की सम्मत्यानुसार नाई जाति अछूत होने से कदाचित श्री स्वामी दयानन्द जी ने अपने विचार से व अन्य किन्हीं ऋषियों के मतानुसार सर्व प्रथम बालक के मस्तक पर अछूत याने सूतकी जाति का हाथ रखवाना उचित नहीं समझा होगा अथवा शास्त्र विधि अनुसार ऐसा देखा भी जाता है कि कर्मकाण्डादि शुभ कर्मों के समय शूद्र को पास रखने, छूने व वेद मंत्र सुनाने का निषेध जानकर ही ऐसा लिखा गया होगा कुछ भी हो—पर ऐसे प्रश्न का उत्तर श्री स्वामी दयानन्द जी से मांगा जाना चाहिये। "बालक का पिता मंत्र पढ़कर बालक का बाल काटे" यह आर्य्य सामाजिक सिद्धान्त है सनातन धर्मानुसार ब्राह्मण आचार्य्य शनैः २ मंत्र पढ़ता जाय और दूर बैठा हुआ नाई बालक का मुण्डन करता जाय। स्वर्गवासी वेद व्याख्याता पंडित भीमसेन जी ने भी अपनी संस्कार चन्द्रिका में इस मंत्र के विधान में "मुण्डन कराओ" ऐसा लिखा है और मन्त्रार्थ भी ऐसा ही होता है तथा पं० छुट्टनलाल स्वामी ने भी ऐसा ही अर्थ किया है संस्कार चन्द्रिका में "वपत" का मुण्डयत अर्थात् मुंडवावो ऐसा अर्थ किया है। और सायणाचार्य्य ने भी "वपत" का अर्थ "मुण्डयत" ही किया है अतएव नाइयों का माना हुआ विचित्र अर्थ स्वार्थ सिद्धि के भाव से किया गया माननीय नहीं हो सकता।

भाई रेवतीप्रसाद जी ! मंत्र में 'ब्राह्मण' शब्द देख कर उसका अर्थ "नायी ब्राह्मण" ऐसा कहां से व कैसे करते हो ?

स्वामी दयानन्दजी ने संस्कार विधि पृष्ठ ६७,६८ में लिखा है—

इतनी क्रिया करके कर्म कर्त्ता परमात्मा का ध्यान करके नाईकी ओर प्रथम देखके—

" ओं आयमगन्त सवितादि " इस मन्त्र का जप करके पिता बालक के पृष्ठ भाग में बैठ के-

समीक्षा।—पाठक! विचारिये कि यदि आर्य्य समाजी नाइयों के गुरु श्री स्वामी दयानन्द जी नाइयों को ब्राह्मण मानते होते तो ऐसा लेख न लिखते और कर्मकर्त्ता यानें बालक के पिता को मंत्रका जप करने की आज्ञा न होती किंतु वे स्पष्ट लिख सक्ते थे कि " इस मंत्र को नाई बोले " पर यथार्थ में श्री स्वामी जी महाराज ने नाई को शूद्र ही समझ कर कर्मकर्ता को मंत्र जपने की आज्ञा दी जिसे "शूद्र नाई" सुनने न पावे अन्यथा स्वामी जी लिख सक्ते थे कि "कर्मकर्त्ता इस मन्त्र को बोले" क्योंकि 'जप' तो मन ही मन में होता है और बोलना प्रकाश्य रूप से सबको सुना कर होता है। अस्तु। प्रिय रेवतीप्रसाद जी!

जब नाय कुल की उत्पत्ति नामक पुस्तक जो आप ही के स्वजाति भाई तुलसीप्रसाद जी की बनायी हुयी है और जिसके ही आधार पर आपने "न्यायी वर्ण निर्णय" पुस्तक रची है वे आपके भाई तो नाय कुल की उत्पत्ति के पृष्ठ ५ की पंक्ति १८ से १९ में लिखते हैं —

नापित शब्द वेदों में कहीं नहीं पाया जाता नापित शब्द का अर्थ है जिसका पता नहीं लगा।

अब कहिये आपकी बात सच्ची या आपके स्वजाति भाई तुलसीप्रसाद जी की? जब वेदों में नापित शब्द ही नहीं है तो आप खेंचातान करके वेदों में नापित जाति का क्या पता लगाते हैं? और मंत्रों के प्रयोगों में ब्राह्मण का "नायी ब्राह्मण" अर्थ कैसे करते हैं? और जब वेदों में नापित जाति का पता ही नहीं है तब आप नापित जाति का "ब्राह्मणत्व" निर्णय कहां से व कैसे करते हैं? क्या अर्थ का अनर्थ व भाव का कुभाव करने से कोई नाई जाति को ब्राह्मण मान सका है? कदापि नहीं।

आपके किये इस मंत्र के विचित्र अर्थ को देखकर मान्यवर पं० ब्रह्मदेव मिश्र ने ये शङ्कायें उत्पन्न की हैं:—

१ वह कौन सा छुरा था जिससे सविता देवता ने सोम और राजा वरुण का क्षौर कर्म किया था?

२ क्या वही छुरा नाइयों के पास है?

३ क्या बहुत से नाई मिलकर एक ही हजामत बनाते हैं?

४ क्या सब नाइयों के बाल बनाने से मनुष्य पुत्र पौत्रादि वाला तथा गौ और घोड़े वाला हो सक्ता है?

नाइयों के प्रसिद्ध कर्म हजामत करना कराना, झूंठ उठाना, झूंठे बर्तन मांजना, तेल लगाना, उबटना मसलना, न्हिलाना, धोती धोना आदि आदि अनेकों प्रकार की सेवाओं को देखकर मान्यवर पं० छुट्टनलाल स्वामी ने लिखा है कि जब तक किसी स्मृति में—

क्षपनं वापनं चैव उच्छिष्टोत्थापनं तथा।
पाद मर्दन क्षालंवा ब्राह्मणानाम कल्पयत् ॥१॥

ऐसा श्लोक नहीं दिखाया जाय तब तक नाई ब्राह्मण नहीं कहा सक्के।

यदि नाई जाति यही कहे कि बाल काटना ही ब्राह्मण का काम है और बाल काटने वाला ब्राह्मण होता है तो आज कल सम्पूर्ण बाबू-लोग अपना अपना उस्तरा कैंची अपने पास रखते हैं और नित्य अपने अपने बाल बना लेते हैं-ऐसे ही मुसलमान लोग भी हजामत बनाते हैं, अंग्रेज भी अपनी अपनी व अपने मुल्क में दूसरों की भी हजामत बनाते हैं, भंगी चमार भी परस्पर अपनी व अन्य नीच जाति वालों की हजामत बनाते हैं अतएव नाइयों के कथनानुसार तो ये सब ही ब्राह्मण हो जाने व माने जाने चाहियें पर हम ऐसा नहीं देखते हैं अतएव बाल काटना व क्षौर करना ब्राह्मणत्व प्रतिपादक कर्म नहीं है।

मन्त्रार्थ

रेवती प्रसाद जी का किया हुआ उपरोक्त मंत्र का अर्थ भी गलत है क्योंकि माननीय प० छुट्टनलाल जी स्वामी के यथार्थ अर्थ को सुनिये —

भाष्यम्ः—येन (हेतुना) क्षुरेण सविता सोमस्य राज्ञो वरुणस्य अपवत् तेन (हेतुना) अस्य (पुत्रस्य) वपते (येन) गोमान् अश्वमान् प्रजावान् अस्तु ॥

भाषार्थ —जिस लिये उस्तरे से विद्वान् सविता ने सोम राजा के वरुण को मूडा उसीलिये इस (पुत्रादि) का वपन करा बाल कटवा जिससे गौ घोड़े सन्तान वाला हो।

भावार्थ.—सविता सूर्य्य अपनी तेज किरणों से वृक्षोंको पत झड़ कर देता है। फिर उस वृक्षपर फल पुष्प आते हैं। इस ही हेतुसे हे विद्वान्! तुम भी अपने पुत्रादि का तेज उस्तरे से मुण्डन कराओ जिससे यह सम्पन्न हो।

नाई लोग एक दम उछलकर येन केन प्रकारसे ब्राह्मण बनना चाहते हैं यह उनका अज्ञान है क्योंकि ब्राह्मण योनि सहज में ही सहसा नहीं मिलती है यथा —

बह्वीस्तु संसरन् योनीर्जायमानः पुनः पुनः।
पर्याये तात कस्मिंश्चिद्ब्राह्मणो नाम जायते॥

म० स० भ० १६ अ० १२ तथा महा भा० अनुशा० अ० २७ श्लोक ६

भीष्म जी युधिष्ठिर से कहते हैं कि यह जीव अनेक योनियोंमें जन्म लेता हुआ और पुन पुन मरकर फिर उत्पन्न होता हुआ किसी पर्याय में जाकर ब्राह्मण होता है। इसके कुछ ही आगे इस ही विषय को और भी स्पष्ट किया गया है यथा —

तिर्यग्योनिगतः सर्वो मानुष्यं यदि गच्छति।
स जायते पुल्कसो वा चाण्डालो वाप्यसंशयः॥६॥

पुक्कशः पापयोनिर्वा यः कश्चिदिह लक्ष्यते।
स तस्यामेव सुचिरं मतङ्ग परिवर्तते ॥७॥
ततो दशशते काले लभते शूद्रतामिति।
शूद्रयोनावपि ततो बहुशः परिवर्तते ॥८॥
ततस्त्रिंशद्गुणे काले लभते वैश्यतामिति।
वैश्यतायां चिरंकालं तत्रैव परिवर्तते ॥ ९ ॥
ततः षष्टि गुणे काले राजन्यो नाम जायते।
राजन्यत्वे चिरंकालं तत्रैव परिवर्तते ॥ १० ॥
ततः षष्टि गुणे काले लभते ब्रह्म बन्धुताम् ॥

आ० स० भा० १६ अं० १२ पृ० ३६२ तथा महा अनुशा० अ० २८

भा०—पशु पक्षी आदि नीच योनियों की जब कर्म भोगकी अवधि समाप्त होती है और जब इन्हें मनुष्य जन्म मिलता हैं तब वे मनुष्य जाति की सब से नीच कक्षा में अर्थात् चाण्डाल का जन्म पाते हैं, फिर बहुत जन्मों तक वह चाण्डाल ही होता रहता है, इसके बाद फिर १०० जन्म व्यतीत हो जाने पर वह शूद्र होता है, शूद्र जातियों में जन्म लेकर उस ही में फिर बार बार जन्म लेता है तब ३३ जन्म के बाद वैश्य होता है अर्थात् शूद्र यदि अपने वर्णोचित कर्मों का पालन करता रहे तो ३३ बार जन्म मरण के बाद वैश्य हो जाता है, फिर वैश्य होकर बार बार उसी जाति में जन्म लेता है फिर ६० जन्म के बाद क्षत्रिय होता है और क्षत्रिय जाति में जन्म लेकर बार बार उस ही में जन्म लेता रहता है तब ६० बार जन्म मरण के बाद ब्रह्म बन्धु अर्थात् ब्राह्मण होता है।

इस क्रम से यदि नाई जाति अपना वर्णोचित धर्म पालन करती हुयी अपनी उन्नति करना चाहे तो २५३ जन्म याने २५३०० वर्षों के बाद ब्राह्मण हो सक्ती है। इसलिये रेवती प्रसाद जी को चाहिये कि अपनी जाति को सन्मार्ग में प्रवृत्त

रते चले जांय अन्यथा एक दम उछलने से व शास्त्र मर्य्यादा उलङ्घन करने से बडी हानि उठानी पडेगी।

महाभारत में मतङ्ग की कथा से सिद्ध है कि नाई शूद्र हैं अनुशासन पर्व में लिखा है कि किसी द्विजाति का मतङ्ग नामक एक पुत्र था, वह एक बार अपने पिता की आज्ञा से यज्ञ सामग्री लेने के लिये चल दिया उसने रथ में गधे जोते एक तरफ रथ में गधी थी और दूसरी तरफ उसी गधी का बच्चा। रास्ते में मतङ्ग बार बार प्रतोद (पेना) से उस गधी के बच्चे की नासिका में छेदने लगा, नाक में बडा घाव होगया तब गधी ने अपने बच्चे से कहा कि तु शोक मत कर,यह जो रथ पर बैठाहै यह ब्राह्मण नहीं है चाण्डाल है जिस जातिमें इसने जन्म लिया है वैसे ही आचरण तो यह करेगा यह सुन कर मतङ्ग रथ से उतर पडा और गधी से पूछने लगा कि बता मैं कैसे चाण्डाल हू तब गधी ने कहा कि —

ब्राह्मण्यां वृषलेन त्वं मत्ताया नापितेन हः ।
जातस्त्वमसि चाण्डाली ब्राह्मण्य तेनतेऽनशत्॥

महा० अनु प० अ० २७

अर्थात् तू नाई से अपनी व्यभिचारिणी ब्राह्मणी माता में उत्पन्न हुआ है अत चाण्डाल है। शूद्र से ब्राह्मणी में उत्पन्न हुआ पुत्र चाण्डाल होता है। इसके बाद वह चाण्डाल मतङ्ग घर लौट आया और फिर तप करने लगा, तपसे बाद इन्द्र प्रकट हुए और कहा क्या चाहता है? मतंग ने कहा मैं ब्राह्मण होना चाहता हू— इन्द्रने कहा यह असम्भव है और वर मांगो इसके बाद फिर मतङ्ग ने दो बार घोर तप किया पर उसे ब्राह्मणत्व नहीं मिला इन्द्र ने कह दिया कि सैकडों बार जन्म मरण होने के बाद कहीं ब्राह्मण के यहां जन्म मिलता है, इस जन्म में तू कहीं ब्राह्मण नहीं हो सका अन्त में मतङ्ग ब्राह्मण न हो सका।

इसका परिणाम यह निकला कि यदि नाई ब्राह्मण होता तो उसका पुत्र उस समय चाण्डाल क्यों कहलाता अतएव नाई जाति ब्राह्मण नहीं हो सक्ती है ।

पुनः—न्यायी वर्ण निर्णय पृष्ठ ४२ पंक्ति ८ से

क्षत्रियत्व

कई लोगों का विचार है कि नाई लोग क्षत्रिय हैं इसके समर्थन में कुछ युक्तियें हैं ।

(१) न्यायी शस्त्र (छुरा कैंची आदि) धारी हैं । और शस्त्र को क्षत्रिय धारण करते हैं ।

समीक्षाः—पहिले तो आप अपने को ब्राह्मण सिद्ध कर आये हैं अब क्षत्रिय सिद्ध करने चले—तौ एक ही म्यान में दो तलवार कैसे ? या तो आप ब्राह्मण ही बन जांय या आप क्षत्रिय ही बनें और जब नाई जाति अपने को ब्राह्मण व क्षत्रिय दोनों ही सिद्ध करती है तो निश्चय होता है कि यथार्थ में वे भ्रम में हैं और जब निश्चय ही नहीं है तो "न्यायी वर्ण निर्णय" क्या किया ? और जब छुरा (उस्तरा) कैंची ही रखने से नाई लोग क्षत्रिय होगये तो उस्तरा कैंची के बनाने व सान चढ़ाने वाले भी क्षत्रिय होने चाहियें लोहे के बड़े बड़े अस्त्र शस्त्र बनाने वाले लुहार भी क्षत्रिय होने चाहिये । बड़े बड़े छुरों से काम लेने वाले कसाई भी क्षत्रिय होने चाहियें, वाह जी वाह !! खूब युक्ति लड़ाई ।

पुनः—मगध के चन्द्रगुप्त राजा के नाम का उल्लेख किया गया है कि वह नायिन के पेट से पैदा हुआ था जिसने खीष्टाब्द पूर्व ३२१से २९७ तक २४ वर्ष राज्य किया था (इससे नाई लोग क्षत्रिय हैं)

समीक्षाः—राजा चन्द्रगुप्त राजा नन्द से मुरा नाम की नाइन दासी में उत्पन्न हुआ था, पर वह वर्ण संकर था वह कभी भी क्षत्रिय नहीं माना गया क्योंकि इतिहासवेत्ता विद्वानों ने चन्द्रगुप्त

के प्रति "वृषल" शब्द का प्रयोग किया है और वृष नाम धर्म का है और जो धर्म को लोप करे वह वृषल कहाता है। चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को शूद्र कहा है यथा —

चिरमायासितासेना वृषलस्य मतिश्चमे ।

मुद्राराक्षस नाटक अंक ७ श्लोक ८

अर्थात् राक्षस ने शूद्र चन्द्रगुप्त की सेना को और मेरी बुद्धि को बड़ा प्रयास दिया।

पाठक! देख लिया नाइयों का क्षत्रियत्व या अब भी कुछ सन्देह है?

नाइयों के क्षत्रिय होने की चौथी युक्ति —

(४) न्यायी के खलीफा, राजा, महता और ठाकुर आदि क्षत्रियोचित नाम हैं। न्या० व० नि० पृ० ४६ प० ७

समीक्षा—खलीफा तो मुसलमान नाई को कहते हैं क्या यह ही क्षत्रियत्व है?

नाई ठाकुर और नाई राजा के विषय में एक Settled fact निश्चित प्रमाण प्रसिद्ध है —

दोहा।

आंख आंवण घर सिलावण सोकड बहनड नावँ,
नाई ठाकुर, भाट राजा पाँचों नाव कुनांव।
जगतन को भक्तिन कहें, कहें चोर को साह,
नाई को ठाकुर कहें तीनों उलटी राह ॥

मा० म. ग० रि. पृ ३३०

अर्थ तो सीधा ही है अब नाई जाति के क्षत्रियत्व सम्बन्ध में विशेष कहने की आवश्यक्ता नहीं है क्योंकि यह उपरोक्त दोहा राजपूताना की एक सरकारी रिपोर्ट का प्रमाण है।

नाई परिचय

मिस्टर विलियम क्रुक साहब भूतपूर्व कलक्टर फैजाबाद अपने ग्रंथ में लिखते हैं कि:—

Of all men the barber is the greatest trickster.

भा०-सम्पूर्ण आदमियों में नाई लोग सब से बड़े धोकेबाज होते हैं।

इस ही लेख की पुष्टि मा० से० रिपो ट के लेख से भी होती है यथाः—

नाई की जाति बहुत चालाक होती है व्याह शादी के मामलों में लोगों को उससे अक्सर धोका हो जाता है और नुकसान पहुंचता है जिसके बाबत उमर भर कुछ करते धरते नहीं बनता इस ही वास्ते बड़े लोगों ने कहा है:—

नर में नाऊ पखेरू में काग, पानी में का काछवा तीनों दगाबाज।

इस ही से मिलता जुलता संस्कृत श्लोक भी है:—

नराणां नापितो धूर्तः स्त्रियाणां वन मालिकः।

अर्थात् मनुष्यों में नाई धूर्त होता है और स्त्रियों में मालिन। बुद्धिमान पुरुष नाइयों का बहुत कम विश्वास करते हैं क्योंकि ये लोग बहुत कम भरोसा करने के लायक होते हैं इस ही लिये ऐसा प्रसिद्ध भी है कि:—

नाई बात गंवाई

देखो मनुष्य गणना रिपोर्ट।

नराणां नापितो धूर्तः पक्षिणाञ्चैव वायसः।
दंष्ट्रिणाञ्च श्रृगालस्तु श्वेतभिक्षुस्तपस्विनाम्॥

पञ्चतन्त्रे तथा श० क० ८६१

अर्थ तो ऊपर के दोहे व श्लोक से मिलता जुलता सा ही है।

नाई जाति की धूर्तता के ही कारण आजकल लड़के लड़कियों के विवाह सम्बन्ध के समय प्रायः माता पितादि लड़के लड़-

कियों की सम्पूर्ण व्यवस्था स्वनेत्रों देख, व जांच पडताल कर के सम्बन्ध करते हैं।

बुन्देलखण्ड में नाईके धन्दे के विषय में ऐसा कहा जाताहै कि—

सब से नाई बड़ा खिलाड़ी
लेकर सिल नहरनी
छुरा कर तय्यार चुरौरी
चोटी पकड़ सबों को मूड़ा
बगल मूछ और डाढी
गोला फिरवा सिर में रखकर
कलम नौकीली कर दी
मूड मूंड कर पेट-चलावे
खेती करे ना बाड़ी
पेटी बगल दबाकर लोटा
हाथ लिये रुजगारी

T & C Vol IV P. 43

The Etah Nais boycotted all the dancing girls because they refused to dance at a nais wedding

U P Census Report P 343

भा०-एटा जिले के नाइयों ने अपने यहां विवाह शादियों में रंडियों को ले जाने का बहिष्कार (बायकाट) कर दिया क्योंकि उन्होंने नाइयों की शादियों में जाकर नाचने गाने से इन्कार कर दिया था।

समीक्षकः—लोगों का कहनाहै कि नाचने गाने वाली रंडियें नाई जाति की बरात में जाकर नाचने में अपना अपमान समझतीहैं अतएव प्राय रंडियें नाइयों के यहां नाचने को जाती ही नहीं हैं सो क्यों? 'न्यायी वर्ण निर्णय' के रचयिता ने अपनी पुस्तक में

मिस्टर विल्सन व क्रुक आदि अंग्रेज विद्वानों के बड़े लम्बे चौड़े लेखों में से नाई जाति के विरुद्ध लेखों को छोड़ कर नाई जाति के पक्ष में जो कोई पंक्तियें मिली उन्हें ही लिख मारी हैं और उस ही को पुष्ट प्रमाण मान लिया है अतएव हमें जो कुछ विद्वानों के लेख मिले हैं वे भी पाठकों के अवलोकनार्थ भेंट हैं यथाः—

Besides shaving and shampooing his constituents he acts as a village menial; prepares the tobacco at the chaupal or village rest-house and waits on strangers and guests.

T. & C. 44

भा०—नाई अपने यजमानों की हजामत करने व पगचप्पी करने के अतिरिक्त गांव का कमीण (सेवक) होता है जो गांव की चौपाल में तम्बाकू बनाकर महमान व आये गयों के लिये चिलम भरकर सेवा करता रहता है।

एक प्रसिद्ध इतिहासज्ञ ने वैद नाइयों के विषय में लिखा है कि— "इनका पेशा हजामत के सिवाय दवादारू व मल्लम पट्टी करने का है,ये नाफ मसलते, फूल्हड़े देते, औरतें बच्चे जनाती और औरतों की बाजी बाजी बीमारियों का इलाज भी करती हैं, ये मोची घांची वगैरह नीच कौम की रोटी नहीं खाते मगर उनकी हजामत तो कर देते हैं *

एक अंग्रेज सिविलियन आफीसर मिस्टर डबल्यु सी० बी० ए० लिखते हैं:—

---

* १ क्या मोची घांची आदि नीच जातियों की हजामत करना २ दाईपनी करना ३ बच्चे का नाल काटना ४ फोड़े फुंसी आदि को चीरना फाड़ना ५ मुसल्मानों की मूत्रेन्द्रिय स्पर्श और ६ उसके अग्रभाग को काटना नाइयों के ब्राह्मणत्व के पट् कर्म्म हैं ?

"If a muhamedan he usually performs circumcision, but some Hindu nais performs this operation for their musalman neighbours"

अर्थात् नाई (जो लोग यदि जाति से मुसल्मान हुये तो वे अपनी सुन्नत) खतना कराते हैं परन्तु कुछ हिन्दू नाई अपने पड़ोसी मुसलमान भाइयों की सुन्नत * करते हैं।

एक अंग्रेज अफसर ने Caste and Tribes नामक पुस्तक में लिखा है —

It is rather surprising then, that with all these important and confidential duties intrusted to him, his social position is not higher than it is The nai is not much higher in the social scale than one of the minor grades of handi craftsman The reason of this is that his duty of surgery brings him in contact with blood and has not only to cut the first hair of the child and thus contracts some of the parturition impurity, but he also has to shave and cut the nails of the corpse before cremation He also shaves the heads of the mourners and his wife, as we have seen in dealing with the birth customs of various castes, succeeds the chamarin mid wife and acts as a sort of monthly nurse She also brings out the bride at the marriage ceremony where she is very much in evidence All this tends to procure for her a somewhat doubtful reputation

भा०—यद्यपि बहुत से कार्य्य नाई के द्वारा विश्वास पूर्वक होते हैं तथापि इन का हिन्दू समाज में जाति पद कुछ ऊंचा नहीं है, सामाजिक क्रम में नाई का जाति पद एक छोटी श्रेणी के शिल्पकार से

---

* पुरुष की मूत्रेन्द्रिय के अग्रभाग को काटना सुन्नत व खतना कहलाता है।

बढ़कर नहीं है। इस का कारण यह है कि चीराफाड़ी के कारण खून का संसर्ग, बच्चे के मुण्डन से ही नहीं किन्तु वह मृतक के दाहकर्म के पहिले उस की हजामत करता व मुर्दे के नाखून काटता है जिस से वह अपवित्र हो जाता है। वह मृतक के अति समीपस्थ मनुष्यों को मद्दर करता है और उस की औरत (नाइन, कई एक हिन्दू जातियों के यहां बच्चे के जन्म समय सूतक व सौर में रहती है और चमारिन दाई का सा काम करती है। सब के सामने चाँदनी (दुलहिन) को विवाह में लाती है। इन सब कारणों से उस की इज्जत सन्देह जनक हो जाती है।

न्यायी वर्ण निर्णयकर्त्ता जी के प्रिय मिस्टर कुक साहब लिखते हैं कि :—

"Nai is a prosperous craf.man, receiving not only annual dues from his constituents, but special fees for marriages confinements circumcisions and so on.'

भा०—नाई एक भाग्यशील दस्तकार होता है वह अपने यजमानों से वार्षिक लाग लेने के अतिरिक्त, विवाह व जन्म मरण तथा सुन्नत करने के समय अलग नेग लेता है।

प्रश्नः—

खतना व सुन्नत क्या ब्राह्मणत्व बोधक कर्म है?

(२) क्या खतना व सुन्नत करने वाली जाति ब्राह्मण हो सकती है?

राजपूताना प्रदेशस्थ एक राज्य की सरकारी रिपोर्ट में लिखा है कि:—

एक समय एक नाई एक ठाकुर साहब की हजामत कर रहा था उस समय एक चारण को अपने से नीचा बैठा देख कर कटाक्ष कर के बोलाः—

चारण मत कर चतुर्भुज नाई कीजे नाथ।
आधी गादी बैठनो माथा ऊपर हाथ॥

भावार्थ—हे चतुर्भुज भगवान्! चारण के घर में जन्म म ना। क्योंकि ठाकुर साहब की गद्दी से दूर बैठना पडता है हां नाई के घर का जन्म अच्छा सो हजामत करते वक्त एक ही गद्दी (आसन) पर परस्पर सन्मुख बैठना पडता है और बडे से बडे के सिर पर हाथ रखना पडता है। इस को सुन कर चारण लोग जो कवि होते हैं तत्काल ही बोले —

चारण कीजे चतुर्भुज, नाई मत कर नाथ।
बानी ऊपर बैठवो, ओठवाडे में हाथ॥

भावार्थ—हे चतुर्भुज भगवान्! चारण के घर में जन्म अवश्य देना पर नाई के घर में नहीं क्योंकि नाई लोगों को सदा झूठे वर्तन माजने पडते हैं इसलिये वे बानी (राख) में बैठे रहकर वर्तन मांजते और उन के हाथ भी ओठवाडे में ही रहते हैं।

नाई प्राय कुबुद्धि होते हैं इसलिये साधु लोगों को इन से बहुत धोखा हो गया है तब से साधुओं का ऐसा कहना है कि —

छोडा पाडण बूंट चपाडण थपथपियां ने नाई।
इतराने मत मूंड जो कुबध करेला काई॥

इस दोहे का दूसरा रूप ऐसा भी सुना गया है।

छोड़ा छीलण बूंट उखेडन पटपटियो और नाई।
एतान मत मूंडज्योरे कुबध करेला काई॥

इसका अर्थ यह है कि खाती, माली, कुम्हार और नाई, इन चारों में से किसी को चेला मत करना नहीं तो कुछ न कुछ ये अनीति अवश्य करेंगे।

माथ लोग भी ऐसा कहते हैं कि—

काटी मूंडी कलारी । वांदी वेश्या नगारी ।
भोजक भाठण सुनारी । नाथ कहे ये नेम से न्यारी ॥

अर्थः—लुहार, नाई, कलाल, वांदी भगतन, ढोली, भोजक, भाट और सुनार ये नियम विरुद्ध करने वाली जातियें हैं ।

मा० म० ग० पृ० ३०५

मारवाड़ में दरजी अकसर नाई को वरात में नहीं ले जाते एक दफै ले गये थें तो नाई सवारी न मिलने से पेट दुखने का मिस करके गिरपड़ा और जमीन पर लोटने लगा दरजियों ने तरस खा कर उसको चारपाई पर डाला और तमाम रास्ते वारी वारी से उसे कंधा देते लाये, जब इस तरह वह घर पहुंचा तो नाइन यह हाल देखकर रोने लगी—तब नाई बोला रांड रोवे क्यों है "छते दरजी नाई पालो नहीं हाले" अर्थात् दर्जियों के होते हुये मैं पांव पांव पैदल क्यों चलूं ? उस दिन से यह कहावत चली और अकसर दर्जियों ने यह हरामजदगी देख कर नाई को वरात में लेजाना छोड़ दिया ।

नाइयों का खान पान

यह तो संसार जानता है कि नाई लोग अपने अपने यजमानों के घर व अन्य उनके रिश्तेदारों के यहां तथा माली, तेली, जाट अहीर गूजर, ठाकुर दरोगा आदि आदि जातियों के यहां की बनी सखरी रोटी खा लेते हैं इससे बढ़कर इनके खान पान का विवेचन अंग्रेज सिविलियन आफिसरों ने भी किया है यथाः—

Nais drink spirits and eat the flesh of goats, sheep and dear. They eat the leavings of Brahmans Kshatriyas Vaishyas and Kayasthas. All Hindus will drink water at their hands and part of their trade is to attend feasts, wash the feet of the guests hand round the dishes and remove the leavings.

भा०-नाई लोग शराब पीते और बकरे भेड़ तथा हिरण का मांस खाते हैं ये लोग ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और कायस्थों की झूठ खाते हैं[1] * सम्पूर्ण हिन्दु इनके हाथ का जल पीते हैं[2] * इनका काम जियाफत व जीमणवारों में काम करना पाहुनों के पैर धोना (पग धोई करना) झूठे बर्तन मांजना और झूठ उठाना है[3] * ।

The barber washes other's feet but is ashamed to wash his own (An Kaonkagorya dhoe naanya apna dhovat lajae)

T & C P 45

भा०-नाई दूसरा के पैर धोवे पर अपने धोते लजावे इस ही लिये कहावत प्रसिद्ध है कि "आनका गोडवा धोवे नौनियां अपना धावत लजाय" अर्थात् नाई दूसरों के पैर धो देवे पर अपने पैर धोते वक्त शर्मा जाय। लोग ऐसा भी कहते हैं —चांदी करे बना॰ बना पगने धोवे आपना।

ब्राह्मण बननेवाले नाइयोंका छल कपट।

नायी वर्ण निर्णय के रचियता रेवतीप्रसादजी से हम पूछते हैं कि आपने दिन दहाडे छल कपट करके अपनी नाई जाति को ब्राह्मण बनाने की इच्छा से हमें भी क्या बदनाम किया? और अपने गुरु महर्षि दयानन्द जी के गुरुकुल में शिक्षा पाकर उन्हें भी

---

१ * क्या यह ही ब्राह्मणत्व है?

२ * यह ठीक नहीं, छोटी जाति के हिंदु लोग कहीं कहीं इनके हाथ का जल पीते हैं और बड़ी जाति के कोई कोई कहीं कहीं सर्वत्र रूप से नहीं। जैसे लिखा भी है —

"बहुत से आदमी जो धर्म कर्म के नियामा पाबन्द होते हैं उसका छूआ पानी नहीं पीते उसका हाथ लग जाता है तो नहाते हैं।

देखो मा॰ से॰ रिपोर्ट पृ० ४४६

३ * क्या यह भी ब्राह्मणत्व है?

क्यों लजाया ? नापी वर्ण निर्णय जब से छपी है प्रायः विद्वान् लोग हम से पूछते हैं कि "आपने नाई जाति को ब्राह्मण मानकर अधर्म क्यों किया ?" आदि आदि इस पर हमें बड़ा आश्चर्य हुआ कि हमने नाइयों को ब्राह्मण कहीं नहीं माना और पबलिक हमारे विरुद्ध क्यों हुई जा रही है अतएव 'नापी वर्ण निर्णय' में हमारे ग्रन्थों के हवाले देकर जो लेख हमारे व मंडल के नाम से छापे गये हैं उन्हें हमने अपने ग्रन्थों में प्रकाशित असली लेखों से मिलान किया तो—
"मीठा मीठा गप और कडुवा कडुवा थू" के समान किया गया है अर्थात् हमारे लेखों में से जो जो वाक्य नाइयों को अपने उपयोगी जचे उन्हें उन्हें उठाकर हमारे बड़े लेख को एक छोटा सा लेख कर लिया और हमारे लेख में जो जो वाक्य नाइयों को अपने विरुद्ध जचे उन्हें छोड़ दिये, इस तरह इस छल कपट को रचकर नाइयों ने हिन्दु पबलिक को धोका दिया कि "हिन्दु धर्म वर्ण व्यवस्था मण्डल के महामंत्री जी ने भी हमें (नाइयों को) ब्राह्मण मान लिया है" अतएव रेवतीप्रसाद जी के सहधर्मी आर्य्य समाजी भाई व हिन्दु पबलिक की निश्चयात्मकता के लिये हम उन लेखों को ज्यों के त्यों प्रकाशित करते हैं जिससे सत्याऽसत्य का निर्णय पबलिक स्वयं कर लेगी:—

नापी वर्ण निर्णय पृष्ठ १६ में हमारे ब्राह्मण निर्णय ग्रन्थ के लेख को नाइयों ने इस प्रकार प्रकाशित किया है:—

(१) "१८७ नाई पांडे:–यह कान्यकुब्ज ब्राह्मणों का एक भेद है इसके दो भेद हो गये जिन में से जो पढ़े लिखे मनुष्य थे वे तो अपने को ब्राह्मण समझ कर कान्यकुब्जों में मिले; परन्तु जो समुदाय विद्याहीन था वह एक उस्तरा व कटोरी की पूजन करता करता परस्पर स्वजाति वर्ग की हजामत भी करने लगा जिससे वे नाई पांडे कहाने लगे। इस तरह ये लोग परस्पर हजामत करते कराते अन्य उच्च जातियों की

भी अन्य नाइयों की तरह हजामत करने लगे ये लोग युक्त प्रदेश के फर्रुखाबाद, व कानपुर तथा प्रयागादि जिलों में हैं, ये ब्राह्मणानुकूल कर्म कर सक्ते हैं (ब्राह्मण निर्णय पृ० ३१४-३१५) देखिये—

☞ ब्राह्मण निर्णय ग्रन्थ का असली लेख

१८७ नाई पांडे —"यह कान्यकुब्ज ब्राह्मणों का एक भेद है इनकी कथा कान्यकुब्ज वंशावलि के पृष्ठ ४३ में ऐसी लिखी है कि अनुमान ३६० वर्ष व्यतीत हुये कि यवन लोगों से और मदारपुर के अधिपति भूमिहार ब्राह्मणों से अतियुद्ध भया निदान सब ब्राह्मण परास्त हुये और सब कट मरे, केवल एक अनन्तराम ब्राह्मण की स्त्री गर्भिणी थी, यवनों के उपद्रव के भय से स्योना नामी नाई के साथ उसकी ससुरार में जाय बची परन्तु अपने पति और देवर और पुत्रादिकों के मारे जाने के कारण दुःखी रहती थी और भोजन निरन्तर न करने के कारण दुर्बल और शक्तिहीन हो गयी थी-गर्भ के दिन पूर्ण होने पर उसके पुत्र होने के समय अतिकष्ट पूर्वक कठिनता से पुत्रोत्पन्न भया और ब्राह्मणी मृत्युवश भयी तब स्योना नाई ने उस की क्रिया ब्राह्मण द्वारा करवाय दीनी और उस बालक का जात संस्कार ब्राह्मणों की रीत्यानुसार कराया और नाम उस बालक का गर्भू रक्खा गया, जब वह बालक आठ वर्ष का हुआ तब कश्यप गोत्र के तिवाड़ी, त्रिलोली के जो स्योना नाई के पुरोहित सुवमणि नाम थे तिन के सन्तान नहीं थी उन को यह बालक समर्पण किया तिन सुब्रमणि तिवाड़ी जी ने उस गर्भू नामक बालक का यज्ञोपवीत वेद रीति से किया और उस वेदाध्ययन कराया और काश्यप गोत्र कहा, कुनमड़ ग्राम में उस बालक का निवास था इस कारण कुनमड़ के तिवाड़ी की पदवी दियी। गर्भू के वंश में-कटोरी तथा अन्तुरा की पूजा अभी तक शुभ कार्य में होती है, यह कटोरी अन्तुरा का पूजन उस नाई के उपकार के स्मर्ण का हेतु है।"

नोटः—यह उपरोक्त लेख तो बिलकुल उड़ा दिया ही गया और पूरे लेख में से मतलब मतलब की पंक्तियें लेकर "न्यायी वर्ण निर्णय" में लिख मारा है। ब्राह्मण निर्णय में के पूरे लेख में से उपरोक्त विवर्ण उड़ा देने के अतिरिक्त नीचे लिखी पंक्तियें और उड़ा दी गयी हैं:—

परन्तु इन के साथ में इन के ब्राह्मणत्व का पुछल्ला "पांडे" शब्द ज्यों का त्यों बना रहा जो प्रकट करता है कि ये ब्राह्मण हैं इस प्रकार का समुदाय निरन्तर केवल हजामत ही नहीं करता किन्तु कुछ कृषि करते हैं कुछ सेवा-वृत्ति करते हैं तो कुछ शिल्पकारी करते हैं *।

पुनः नाइयों ने नीचे लिखे वाक्यों को अपने विरुद्ध समझ कर प्रकाशित करने से छोड़ दिये:—

परन्तु इन थोड़े से नाई पांडों की देखा देखी नाईमात्र ब्राह्मण बनना चाहता है यह उचित नहीं है।

समीक्षा—पाठक! नाइयों के प्रकाशित लेख को हमारे असली लेख के साथ मिलाइये और देखिये कैसी चालाकी से काम लिया गया है यह तो ब्राह्मण निर्णय के लेख की दशा हुई अब हमारे जाति-अन्वेषण ग्रन्थ के लेख में नाइयों ने क्या क्या किया सो भी दिखाते हैं। जिन लोगों ने जाति-अन्वेषण ग्रन्थ को पढ़ा होगा उन्होंने देखा होगा कि ग्रन्थ के अन्त के २७३ से २८८ पृष्ठों में उन २५ जातियों का हाल है जो अपने को उच्च बतलाती हैं अतएव उन का दावा जैसे का तैसा हिन्दू-धर्म-वर्ण-व्यवस्था मण्डल की "धर्म व्यवस्था" सभा में

---

* नोट—इस से आगे की तीन लाइनों को मतलब की सी जान कर नाइयों ने प्रकाशित कर दीं। यथाः—

* ये लोग युक्तप्रदेश के फर्रुखाबाद व कानपुर तथा प्रयाग आदि जिलों में हैं ये ब्राह्मणानुकूल कर्म कर सकते हैं।

निर्णयार्थ पेश किया गया है जो पूरे लेख को पढ़ने से स्पष्टतया विदित हो जायगा। यथा:—

नोट—असली लेख में से मतलब मतलब के वाक्य चुन कर लेख का जो भाग नाइयों ने छोड़ दिया उसे हमने ऐसे [कोष्टक] में बन्द कर दिया है।

नाइयों ने लेख के आरम्भ की पंक्तियें ही छोड़ दीं—

[नाई जाति के विषय में भी बहुत कुछ विचार करना है क्योंकि नाई जाति के विरुद्ध बहुत कुछ सम्मतियें मिली हैं। इस जाति की उत्पत्ति एक विद्वान् ने क्षत्रिय बाप व शूद्रा मा द्वारा लिखी है दूसरे एक आचार्य्य ने कुत्रेटी बाप व पट्टीकार मा द्वारा लिखी है, तीसरे विद्वान् ने ब्राह्मण पिता व शूद्रा मा द्वारा लिखी है इस ही तरह और भी दूसरे दूसरे विद्वानों ने कुछ फेर फार कर के भी लिखा है।]

नाइयों ने नीचे लिखी पंक्तियें मतलब की सी जान कर अपनी पुस्तक में छाप दीं—

प्राचीन काल में जो बड़े विद्वान् व तर्क शास्त्र के जानने वाले थे उन का नाम न्यायी रक्खा गया था जिस का बिगड़ा हुआ रूप नायी व नाई हो गया। इन की विद्या बुद्धि के कारण लड़के लड़की का विवाह, शादी, सगाई आदि इन्हीं के सम्मति के अनुसार होते थे यह जाति प्राय अभी तक ईमान्दार व प्रतिष्ठित समझी जाती है अकेली युवा बहू बेटियों को हजारों के जेवर सहित इनके साथ निधड़क रूप से भेज देते हैं। प्राचीन काल में जितनी इस जाति की स्थिति उत्तम थी उतनी आजकल निकृष्ट है तथापि यह उत्तम कोटि को पहुंचने के उद्योग में है और अपने को ब्राह्मण वर्ण में बतलाती है। (इसके आगे की पंक्तियों को अपने विरुद्ध समझ कर नाइयों ने नीचे लिखे वाक्य फिर छोड़ दिये।)—

[हिन्दु समुदाय इसके विरुद्ध है, कोई इन्हें शूद्र वर्ण में, कोई सतशूद्र वर्ण में कोई संकर वर्ण में बतलाते हैं] इससे आगे की पंक्तियों को नाइयों ने मतलब की सी जानकर छपा दीं:—

शास्त्रीय एक नियम से यह जाति ब्राह्मण वर्ण तथा दूसरे मन्तव्य से क्षत्रिय वर्ण में ठहरती है परन्तु इनके मुख्य भेद ८८८ हैं अतएव प्रत्येक की अलग २ स्थिति देखकर वर्ण निश्चय करना है, इनमें कनौजिये, सयूंपारी तथा नाई पांडे आदि भेदों का ब्राह्मणत्व से सम्बन्ध है या नहीं ?

नाइयों ने असली लेख में से नीचे लिखी पंक्तियों को फिर छोड़ दिया:—

[तथा उमर, राठोड़, गौड़, वैस और श्रीवास्तव आदि नाम वाले नाइयों का सम्बन्ध क्षत्रियत्व से है या नहीं ? यह मण्डल को निर्णय करना है, इस जाति का विवर्ण जो संग्रह हुआ है बहुत ही बड़ा है उसे भविष्यत् में प्रकाशित करेंगे तथापि ग्रन्थकारों ने लिखा है कि "नाई दाई वैद कसाई इनका सूतक कभी न जाई" पुनः ऐसा भी पाठ मिलता है कि "नराणां नापितो धूर्तः स्त्रीणां वनमालिकः" इसही के भाव को लेकर भाषा का कवि कहता है कि:—

"नर में नाई पखेरू में काग पानी में का काछुवा तीनों दगाबाज़"

अर्थ तो सीधा ही है अतएव मण्डल से यह जाति आशा लगाये हुये है कि नाई जाति के कल्याणार्थ व्यवस्थायें निकलनी चाहिये ऐसी हमारी निज की सम्मति जाननी चाहिये]

इससे आगे पुनः नायी वर्ण निर्णयकर्ता जी ने असली लेख में से नीचे लिखी पंक्तियें मतलब की सी जान कर प्रकाशित कर दीं:—

"युक्तप्रदेशीय आर्य्य सामाजिक गुरुकुलों में नाइयों के लड़कों के यज्ञोपवीत करादिये गये हैं।" इससे आगे के वाक्यों को नाइयों ने अपने विरुद्ध समझ कर छोड़ दिये:—

[और प्राय आर्य्य सामाजिक नाई ही जनेऊ धारी हमें मिले भी हैं अत भविष्यत् के लिये इन का वर्ण निश्चय कर देना चाहिये जिससे वे रोक टोक ये लोग सुकार्य्य क्षेत्र में आजांय]

देखो नायी वर्ण निर्णय पृष्ठ ४९–५० तथा जाति अन्वेषण २७१ से २८१ तक।

समीक्षक—असली लेख में केवल "गुरुकुल" था नाइयों ने अपने लाभ के लिये "गुरुकुलों" अपनी पुस्तक में छाप दिया। कहिये कैसी ईमान्दारी है? हम नहीं समझते कि क्या ऐसी योग्यता के पीछे ही दुनियां भर को शास्त्रार्थ का नोटिस दे दिया था? हम रेवतीप्रसाद जी से पूछते हैं कि यदि इस समय आपके गुरू स्वर्ग वासी स्वामी दयानन्द जी विद्यमान होते और उन्हें आपका यह कपट जाल दिखलाया जाता तो कहो वे आपको क्या कहते? अथवा आपके वर्तमान गुरू गुरुकुल वाले प० भीमसेन जी जब इस पुस्तक को पढेंगे तो कहिये वे आपकी कितनी प्रशंसा करेंगे? जब हमने निष्पक्ष भाव से आपका दावा आपके ही माने हुये शब्दों में धर्म व्यवस्था सभा के साम्मने ज्यों का त्यों पेश करते हुये शास्त्रीय संकेत संकर, वर्ण संकर और शूद्र तक लिख दिया है तब आपने इन शब्दों को छिपा कर पबलिक को क्यों धोका दिया? जब हमने साफ २ शब्दों में लिख दिया है कि "इन थोडे से नाई पाडों की देखा देखी नाई मात्र ब्राह्मण बनना चाहता है यह उचित नहीं है" तब आपने इन वाक्यों को छिपा कर संसार को व अपने नाई भाइयों को भी क्यों धोखे में डाला?

❋ नाई जाति के नाम खुली चिट्ठी ❋

प्यारे नाई भाइयो ! आपकी सभा की तरफ से शास्त्रार्थ का जो चेलेञ्ज मुझे दिया गया उसके उत्तर में शास्त्रार्थ का चेलेञ्ज तथा "न्यायी वर्ण निर्णय" पुस्तक के बदले में "नाई वर्ण मीमांसा" नामक पुस्तक सेवा में भेंट करके आशा करता हूं कि आप लोग निष्पक्ष भाव से इस पुस्तक को पढ़ें और विचारें कि आपके भाई रेवतीप्रसाद जी आर्य्यसमाजी ने कैसी २ गलतियें व ब्राह्मण बनने बनाने की इच्छा से कैसे २ छल कपट रचे हैं। आपही की पुस्तक में दिये प्रमाणों से आपकी जाति शूद्र व वर्ण संकर सिद्ध होती है तब ऐसी पुस्तक आपके किस काम की ? जब आपही का जाति भाई एक आर्य्य समाजी आपको जनेऊ पहिना कर आर्य्य समाजी बनाना चाहता है तो कहो आपके पितरों की गति कैसे होगी ? और उनको पिंडदान कैसे पहुंचेगा ? क्या आप नहीं जानते कि आप ही का भाई आपको जनेऊ पहिना कर आपका गुरू बनना चाहता है ? क्या आप यह भी नहीं समझते हैं कि आपके थोड़े से आर्य्य समाजी नाई भाई ब्राह्मण बनाने का लालच आपको दिखा कर आप लाखों मनुष्यों पर हुकूमत करना चाहते हैं ? क्या यह भी आपको मालूम नहीं है कि जब आप ब्राह्मण बन गये तो नाईपने का काम कौन व आप कैसे करेंगे ? आपको लाखों व हजारों की जो आमद यजमानों की सेवा से होती है वह ब्राह्मण बनने पर कहां से होगी ? जब आपकी चाकरी के कारण आपके यहां जमीन जायदाद कूवे कोठी आदि आदि जागीरें हैं वे ब्राह्मण बनने पर व नाईपने की चाकरी न करने से क्या जब्त नहीं हो जावेंगी ? राजपूताने में अपने यजमान ठाकुर व रईस को आप ब्राह्मण बन कर उनकी चाकरी पगचम्पी करने के बजाय जब आप उन से पैर पुजवाने को कहोगे तब आपकी कैसी पूजा होगी ? आपकी जाति के आर्य्य समाजियों ने नाई जाति को ब्राह्मण व

क्षत्रिय दोनों ही सिद्ध किया है तो आप एक साथ दो वर्णों में कैसे हो सक्ते हैं? एक म्यान में दो तलवार कैसी? आपको जाति वालों को इससे ही सन्तोष नहीं हुआ किन्तु नाइयों को ब्राह्मणों का चचा भी लिखा है तब हम नाई जाति को ब्राह्मण मानें, क्षत्रिय मानें अथवा ब्राह्मणों का चचा? कहीं की ईंट कहीं का रोडा और भानमती ने कुनवा जोडा के तुल्य पुस्तक रच कर ससार भर को शास्त्रार्थ का नोटिस कैसे दे दिया? और जब इतना ही था तो कानपुर में, हिन्दु जनता की ओर से करीब ३० व ४० नोटिस निकले और बड़ी हाइ भी मची फिर भी नाई जाति ने, शास्त्रार्थ नहीं किया सो क्यों?

प्यारे आर्य्य सामाजिक नाई भाइयो! जरा आप भी अपने गुरु की बनाई संस्कार विधि तथा अपने स्वजाति भाई रेवतीप्रसाद जी की बनाई "न्यायी वर्ण निर्णय" को मिला कर देखिये कि आपके गुरु स्वामी दयानन्द जी कुछ लिखते हैं तो रेवतीप्रसाद जी कुछ, तब कहिये आप भी स्वामी जी की बात मानेंगे या रेवतीप्रसाद जी की?

"न्यायी वर्ण निर्णय" के पृष्ठ २० के आरम्भ में जो पाराशर स्मृति का प्रमाण लिखा है उस मूल श्लोक को बदल कर अपने मतलब का सा क्यों कर लिया?

हमारे रचे ब्राह्मण निर्णय तथा जाति अन्वेषणादि ग्रन्थों के लेखों में से मतलब २ के वाक्य उठाकर व पूरे लेखों में से विरुद्ध २ वाक्यों को छोडकर एक नये ढग का लेख बनाकर हमारे नाम से अपनी "न्यायी वर्ण निर्णय" में कैसे प्रकाशित कर दिया और इस तरह पबलिक को धोखा दिया गया या नहीं?

प्रियवर! यदि इस पुस्तक में कोई बात आपको मिथ्या प्रतीत हो तो सप्रमाण उसे हमें लिख भेजियेगा हम सहर्ष उसे बदल देंगे।

नाई जाति के हित के लिये हमें बड़ी भारी चिन्ता इस बात

बड़ी भारी चिन्ता

की है कि सम्पूर्ण भारत को जाने दीजिये केवल भारतवर्ष के राजपूताना में सन् १९११ की मनुष्य गणना के अनुसार नाइयों की संख्या १५९६०८ है और सन् १९०१ की मनुष्य गणना के अनुसार युक्त प्रदेश आगरा व अवध प्रान्त में नाइयों की संख्या ६७०२३९ है अतएव राजपूताना व युक्तप्रदेश दोनों को मिलाकर नाई जन संख्या ८२९८४७ होती है जिन का गुज़ारा हिन्दु जाति की सेवा सुश्रुपा और चाकरी से होता है। अब प्रश्न यह होता है कि यदि ये सब ब्राह्मण बन जांय और अपने यजमानों की सेवा चाकरी छोड़ दें तो इन का गुज़ारा कैसे हो सकेगा ? क्या ये नाई लोग हिन्दू जाति से कमीणी का नेग लेना छोड़ देंगे ? यदि नाई जाति की सभाएं अपनी बिरादरी को ब्राह्मण बनाने व अपने को ब्राह्मण मानने का उपदेश देती हैं तो इन के ब्राह्मण हो जाने पर इन्हें हिन्दु जाति की सेवाएं छोड़नी पड़ेंगी और सम्भव है कि नाई जाति हिन्दुओं से Non Coperation असहयोग कर लेगी या हिन्दू लोग नाई जाति से असहयोग कर लें। नाई जाति के ब्राह्मण हो जाने पर दोनों में परस्पर असहयोग अवश्य हो जायगा। नाई लोग ब्राह्मण हो जाने पर हिंदुओं के यहां के झूंठे वर्तन मांजना, तेल लगाना, निहलाना, धोतीधोना, पगचम्पी करना, झूंठ उठाना, सूवा सूतक में खाना पीना हजामत करना आदि आदि कर्म न करेंगे। तब इनके यजमान हिंदु लोग भी इनको अपने यहां से दूर कर देंगे। ऐसी स्थिति में नाई जाति को रोटी की चिंता पड़ेगी, अतः यदि कम से कम एक नाई की रोटियों का खर्च १०) माहवारी भी मान लिया जाय तो उपरोक्त राजपूताना व युक्तप्रदेश के नाइयों का खर्च ८२९८४७ × १० = ८२९८४७०) रुपये माहवार होता है अतएव नाई जाति सभाओं को जहां उन्हें अपनी जाति को ब्राह्मण बनाने की

सूभी है तहां उन्हें अपनी जाति के गुज़ारे के लिये एक 'महाकोष' कायम करना चाहिये अन्यथा बियासी लाख रुपये माहवार कहां से आवेंगे ? और यू० पी० व राजपूताना के नाइयों का गुज़ारा कैसे होगा ? और इस तरह एक दिन सम्पूर्ण भारत के नाइयों को रोटी की चिन्ता रूपी विपत्ति का सामना करना पड़ेगा। आशा है कि आप लोग ध्यान देंगे।

—※❀※❀※—

लोकमत।

(अखबारों की राय)

नवीन राजस्थान—अजमेर चैत्र शुक्ला ५ रविवार तारीख २ अप्रेल १९२२ ई० के अंक में नाई जाति के ब्राह्मणत्व विषयक जो सम्मति छपी है वह इस प्रकार है—

हमारे नाई भाइयों के महासम्मेलन की व्यवस्थापिका सभा द्वारा प्रकाशित 'नाई ब्राह्मण' नामक पाक्षिक पत्र का १ २ अङ्क समालोचनार्थ हमारे पास पहुंचा है। उसही के साथ साथ अपनी जाति के हितैषी श्री नाथूराम कम्पौडर द्वारा 'न्यायी वर्ण निर्णय' नामक एक पुस्तिका भी हमें पढने को मिली है, हमें बहुत खेद के साथ लिखना पडता है कि इस साहित्य के द्वारा नाई भाइयों ने ब्राह्मण या क्षत्रिय होने के लिये हाथ पैर मारकर यह सिद्ध कर दिया है कि अपनी जाति में उन को यतकिंचित् भी प्रेम नहीं है। यदि होता तो वे ब्राह्मण बनने की चेष्टा ही न करते। आज उनकी निजकी दृष्टि उनको यह दिखाने में समर्थ हो रही है कि ब्राह्मण जाति भिखारी, और बावर्ची बन अपने कर्त्तव्य को छोड कर भी उच्च है और नाई जाति अपने कर्त्तव्य का पालन करती हुई भी पतित है। वे लोग कभी तो 'नी' धातु के 'निणि' प्रत्यय लगा कर नेता और अध्वर्यु बनना चाहते हैं और कभी

"न्यायी" शब्द का सहारा ढूंढ़ कर क्षत्रिय बनने की चेष्टा करते हैं। हम अपने नाई भाइयों को सम्मति देते हैं कि आज कल भारत में प्राचीन काल की वर्ण-व्यवस्था जीवित नहीं है ऐसी दशा में वे ब्राह्मण व क्षत्रिय बनने की चेष्टा न करें। वे नाई हैं उन के पूर्वज नाई थे और उन की सन्तान नाई रहेंगी। 'न्यायी' शब्द में प्रेम न हो कर 'नाई' शब्द में ही उन का प्रेम होना चाहिये। वे हमारे भाई हैं। वे शूद्र नहीं किन्तु श्रमजीवी होने से ब्राह्मण कर्म से वंचित भिक्षावृत्ति करने वाले ब्राह्मणों से श्रेष्ठ हैं।

श्री वेङ्कटेश्वर समाचार—मुम्बई तारीख १४ अप्रेल सन् १९२२ के पृष्ठ ६ कालम ६ का लेखः—

"ब्राह्मणों" की भरमार

आजकल कुछ काल से ब्राह्मणेतर जातियां भी अपने को खुल्लम खुल्ला ब्राह्मण कहने लग गयी हैं। नाई जाति ने तो अपनी विजय वैजयन्ती यहां तक उड़ाई है, कि शास्त्रार्थ करने के लिये चेलेंज देना भी आरम्भ कर दिया है। किसी एक विश्वामित्र कौशिक ने भी "ढेढ भी ब्राह्मण" इस नामकी एक कपोल कल्पित पुस्तक लिखकर अपनी व्यग्र बुद्धि का परिचय दिया है। इन महानुभावोंकी दया से शूद्र एवं चमार जाति तक भी ब्राह्मण वर्ण में ही है। इस लिये अब प्रश्न यही है कि क्या संसार में सब लोग केवल ब्राह्मण वर्ण के ही हैं? मेरी बुद्धि के अनुसार इन महाशयों का यह भागीरथ प्रयत्न करना व्यर्थ है यदि आज कल की प्रचलित प्रथानुसार केवल जीमने के लिये ही यह अपने को ब्राह्मण बनाने की चेष्टा करते हैं तब तो सहर्ष ब्राह्मण जाति इनको यह पद देने के लिये तय्यार है, कारण कि, ब्राह्मण जाति इस ताम्रपत्र (ब्राह्मण भोजन) को बहुत कुछ अनुभव कर चुकी है। अब अधिकांश जातीय विद्वानों का यही मत है, कि इस ताम्रपत्र का अधिकार हरेक जातिको स्वतन्त्र दे दिया जाय

अपने समाज की इच्छानुसार इस का उपभोग कर सके। जैसा कि किसी न किसी रूप में एक प्रकार से प्रचलित भी हो गया है। परन्तु यदि सचमुच ही यह लोग ब्राह्मणपद के लिये चेष्टा करते हैं तो इन की बड़ी भारी भूल है। क्या वसिष्ठ, विश्वामित्र का इतिहास इन महानुभावों ने नहीं पढ़ा है? तो फिर क्यों इतना फिजूल कष्ट उठाकर शक्तियों का दुरुपयोग किया जाता है? और क्यों दुनिया को धोखे में डालने के लिये इतना फिजूल कष्ट उठाया जाय? ऐसे लोग अपनी अपनी जाति में रह कर तथा अपना अपना कर्म कर के ही संसार का उपकार कर अपनी जाति की गौरव वृद्धि भी कर सके हैं आदि आदि।

देवकीनन्दन जोशी

परिवर्त्तन अंक ५ तदनुसार तारीख १ जनवरी सन् १९२३ के पृष्ठ ६ में इस प्रकार छपा है —

नाई ब्राह्मण संवाद

कानपुर नाई लीला

अन्तिम सीन

भारीपोल

मुख्य संवाददाता की रिपोर्ट है कि नाई महासभा की कार्य्यवाही ३॥ बजे से प्रारम्भ हुई। प्रात: करीब ११ बजे १५ नाइयों ने अपना सनातन धर्म छोड़ जनेऊ पहिने, कुछ और पहिनने वाले हैं। रेवतीप्रसाद ने आगत प्रतिनिधियों का स्वागत किया, मिस्टर अमृत कर बी ए ने सभापति का आसन ग्रहण कर लम्बा व्याख्यान फटकारा जिस में सिद्ध किया कि हम लोग ब्राह्मण हैं, हजामत बनाना भी ब्राह्मण कर्म है, हम जाति उन्नति का प्रयत्न करते हैं। पर सड़क के टुकड़खोर हमारी जाति के सुधार विरोधी हैं उपस्थिति लग भग ५०० के थी।

नाई विरोधी

कान्यकुब्ज सभा की कार्य्यवाही

नाइयों के ब्राह्मण बनने के विरोध में मारवाड़ी स्कूल नयागंज में पं० अयोध्यानाथ जी वकील के सभापतित्व में सभा हुई, उपस्थिति लगभग १००० के थी, बहुत से विद्वान् पधारे थे। वहां पर सिद्ध कर दिया कि ये लोग शूद्र हैं ब्राह्मण बनने का कदापि अधिकार इन को नहीं है।

'नाई कान्फ्रेन्स की घोर पराजय, नाइयों के भूत का छू मंतर' नामी नोटिस पण्डित मन्नीलाल जी ने निकाला है कि नाइयों की महासभा को सूचना और समय दिया गया कि वे आ कर अपने को ब्राह्मण सिद्ध करें। बड़े बड़े विद्वान् इन्तजार करते रहे पर निर्धारित समय पर नाई नहीं आये।

'नींद छोड़ दो' नामी नोटिस पं० कालूराम जी शास्त्री ने निकाला है कि ब्राह्मणों को इन का विरोध करना चाहिये नहीं तो ये लोग भी लोहार बढ़ई जाति की भांति कर्मकाण्ड करावेंगे, पण्डा बनेंगे, श्राद्ध खायेंगे, अन्य उच्च जातियों से पैर पुजवावेंगे, अतः यदि अन्य जातियें इसे उचित न समझें तो विरोध करें।

—:※:—

नाई महासभा की पोल

ब्राह्मण बनने वाले नाइयों की अदालत से हार।

यह छपा नोटिस १२ सज्जनों के हस्ताक्षर युक्त अलीगढ़ का निकला है जिसमें लिखा है मुद्दई देवी नाई बनाम पं० गोपीनाथ

सनाढ्य अलीगढ़, मुद्दई ने अक्टूबर सन् २२ में आनरेरी मजिस्ट्रेटों के यहाँ नालिश की कि मुद्दायला ने जनेऊ तोड़ा और मुझे मारा, सुबूत में रेवतीप्रसाद नाई और उसके बाप दीपचन्द तथा और दो गवाह पेश किये जिन्होंने नाई ब्राह्मण वर्ण निर्णय और नाई ब्राह्मण पत्र के आधार पर नाइयों को ब्राह्मण बनाने की कुचेष्टा की।

मुद्दायला के गवाहों और श्री प० अखिलानन्द जी शास्त्री ने साबित कर दिया कि यह नाई शूद्र हैं।

अदालत से देवी नाई का मामला खारिज हो गया और धिक्कार बताई गई, पुनः वह बिरादरी से पृथक् समझा गया, अलीगढ़ के नाइयों ने साथ नहीं दिया, इस प्रकार नाई ब्राह्मण सम्वाद कानपुर में खतम हुआ।

—*—

विक्रम की सम्मति।

दैनिक विक्रम तारीख १ जनवरी सन् १९२३ में के लेख की अविकल नकल —

नाई ब्राह्मण सभा।

गत कई दिनों से स्थानीय एडवर्ड मेमोरियल हाल में एक जाति की जो अपने आप को नाई ब्राह्मण जाति कहती है, एक सभा हो रही है। इस सभा के अधिवेशन के थोड़े दिन पहिले से ही शहर में तूमार मच रहा था। नाइयों और धर्माचार्यों के बीच नोटिसबाजी हो रही थी। नोटिसबाजी का कारण यह था कि नाई अपने आपको ब्राह्मण कहते थे और इस बात की पुष्टि के लिये शास्त्रों की पंक्तियों का भी सहारा लेते थे। हम यह नहीं कहते कि वे पंक्तियाँ शास्त्रों में हैं नहीं। हमारा केवल यह कहना है कि हमारे शास्त्रों में इस तरह के

शब्दों का प्रयोग किया गया है जिन के अर्थों में भिन्न भिन्न मत रखने वाले भिन्न भिन्न बातें देख सकते हैं *।

इस विवाद को हम बिलकुल निरर्थक समझते हैं और इस ही लिये यह चन्द पंक्तियां दोनों दलों के भाइयों की सेवा में पेश करते हैं। पहिले हम अपने ब्राह्मण भाइयों को ही सम्बोधित करते हैं। आप से हमारा यह ही कहना है कि "नीची जाति" को सदैव उठने की आकांक्षा रहती है और उस के उत्थान को बाधा उपस्थित करने से उस के उत्थान की गति और भी तेज़ हो जाया करती है। "नीच जातियों" के उत्थान का इतिहास हमें यही सबक देता है। आपका ऐसे समय में चुप रहना ही कर्त्तव्य था। क्योंकि नाई भाई अपने को ब्राह्मण कहने से ब्राह्मण नहीं हो सकते। कोई भी हिन्दू केवल अपने आप को ब्राह्मण कहने से ब्राह्मण नहीं माना जा सकता।

ब्राह्मण होने के लिये जिन कर्मों की आवश्यकता है उन का सहस्रांश भी तो दूसरी जातियों में नहीं है। आप भाइयों की यह चिन्ता तो बिलकुल व्यर्थ की चिन्ता ही मालुम होती है कि नाई भाई ब्राह्मण हो जावेंगे। अब हम अपने नाई भाइयों से भी दो शब्द निवेदन करते हैं। आशा है कि वे बुरा न मानेंगे। और वह यह है कि आखिर आप भाइयों को ब्राह्मण बनने की सूझी ही क्यों? हमारी तो यह धारणा है कि जब तक अंग्रेजी झंडा भारत के सर पर लह-

---

* इस का भावार्थ यह होगा कि संस्कृत में एक एक शब्द के कई अर्थ होते हैं अतएव खेंचातानी से व अन्य किसी प्रकार से उन्हें लोग अपने अपने मतलब की ओर लगाते हैं ऐसी स्थिति में निर्णय करने के लिये अन्य ऋषियों की स्मृतियों के मत का संग्रह कर के बहुमत के अनुसार निर्णय कर लिया जाता है।

ग्रन्थकर्ता।

राता है हम में से सब शूद्र हैं। ब्राह्मणों में कोई विशेषता नहीं है। वे भी एक गुलाम जाति के पुरोहित मात्र हैं। आपको यदि बढ़ने की ही फिक्र है तो आप अपने आप को अंग्रेजों के वंशज कहते, क्योंकि सिक्का तो आज कल अंग्रेजों का ही चलता है। उन के भाई बन्द होने में अधिक सुभीता होगा। ब्राह्मण तो स्वयं पददलित है। जब मन मोदक ही करना है तो चने क्यों खाये जांय, लड्डू ही क्यों न खाये जांय। हमारे इन फिकरों से बुरा मानने की कोई बात नहीं है क्योंकि हमारा उद्देश्य आप भाइयों का दिल दुखाना नहीं है। हम केवल यही चाहते हैं कि सब मिलकर इस समय देश की राजनैतिक अवस्था को सुधारें और आपस की तू तू मैं मैं को बन्द करदें। स्वराज्य स्थापित होने पर वर्ण व्यवस्था और दूसरे सामाजिक प्रश्नों पर विचार करलिया जायगा और यह विचार तभी सार्थक भी होगा।

— * —

विचित्र बात

(मारवाड़ी की सम्मति)

इधर कुछ दिनों से नाई ब्राह्मणों की विशेष चर्चा हो रही है आगरे से हमारे पास नाई ब्राह्मणों के विरोध में दो लेख भी आये थे, किन्तु हमने अपनी नीति और मारवाड़ी के पाठकों के लाभालाभ की दृष्टि से उन्हें न देना ही उचित समझा। परन्तु इधर जब हम आगरे गये तो यह ठीक समझा कि इस विषय में कुछ लिखना ही चाहिये।

अभी एक दो वर्ष भी नहीं हुये कि जब से आगरे के नाइयों को ब्राह्मण बनने की सूझी है। नाई शब्द संस्कृत के 'नापित' शब्द का अर्थ है। नाई लोगों का कार्य्य (हजामत) बनाना तथा द्विजातियों की सेवा करना ही धर्म शास्त्रों में बताया गया है फिर भी हमारे नाई

भाई ब्राह्मण बनने के लिये अपने को नाई न लिख 'न्यायी' लिखने में अपनी शोभा समझते हैं। क्या इससे हमारे नाई भाई त्रिकाल में भी ब्राह्मण बन सक्ते हैं? हमारी सम्मति में तो कदापि नहीं बन सके। इधर नाई लोग तो ब्राह्मण बन रहे हैं उधर दूसरी ओर जो ब्राह्मण हैं वे अपने को क्षत्रिय (ठाकुर) कहलाने में ही अपनी शान समझते हैं। प्रायः यू० पी० के सभी बड़े बड़े सनाढ्य ब्राह्मण कि जो आज-कल लक्षाधीश या जमीदार बने बैठे हैं वे अपने लिये ब्राह्मण कहलाना एक प्रकार से मान हानि समझते हैं। इन से यदि कोई महाराज पालागन या पण्डित जी प्रणाम कह दे तो ये सनाढ्य भाई उसे काट खाने को दौड़ते हैं। हम नहीं समझते कि हमारे सनाढ्य ब्राह्मण भाई ऐसी हठ क्यों किये हुये हैं। उन्हें नाई भाइयों से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। नाई भाइयों ने एक "न्यायी ब्राह्मण निर्णय" नामक पुस्तक भी लिखी है जिसमें कि वेदादि के प्रमाण भी दिये हुये हैं। हाँ यह हम मानते हैं कि ये प्रमाण वेद व शास्त्रों के हैं किन्तु इनमें से एक भी मंत्र व श्लोक इस बात को प्रमाणित नहीं करता कि नाई ब्राह्मण हैं। क्याही अच्छा हो कि हमारे नाई भाई आडम्बर प्रिय न बन कर कर्म प्रिय बनें जिससे कि लोग उन्हें ब्राह्मण क्या महाब्राह्मण कह उठें। संसार में कर्म ही प्रधान है और इसी कर्म बल के द्वारा नीच से नीच व्यक्ति भी महा उच्च बन सक्ता है, ऐसी दशा में हमारे नाई भाइयों का कर्तव्य है कि वे पहिले देश की दासता की जंजीरें तोड़ें। देश उन्हें सर माथे बैठा-वेगा। आज महात्मा गांधी वैश्य होते हुये भी देश के मुकुट मणि समझे जाते हैं।

हमने उपरोक्त पंक्तियां किसी द्वेष भाव से नहीं बल्कि शुद्धान्तःकरण से लिखी हैं आशा है कि हमारे नाई भाई इन पंक्तियों की ओर ध्यान देंगे।

मारवाड़ी ता: १७ जनवरी सन् १९२३ पृष्ठ ६

ब्राह्मण सर्वस्व इटावा भाग १६ अङ्क १२ पृष्ठ ३५८ से ३६८ तक में के मुख्य २ वाक्य :—

नाई कौन हैं ?

कुछ दिनों से नाइयों ने अपनी महासभा स्थापित कर और अपने समाज में यज्ञोपवीत की प्रथा चला के जनता का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किया है। नाइयों का एक मासिक पत्र भी आगरे से निकलने लगा है और "न्यायी वर्ण निर्णय" नाम की एक पुस्तक भी कुछ नाइयों ने मिलकर प्रकाशित की है। इस समस्त आन्दोलन का उद्देश्य यह है कि नाई अपनी हीनावस्था से प्रसन्न नहीं हैं इसलिये वे एकदम ब्राह्मण बनने की कोशिश में लग गये हैं और यज्ञोपवीत पहनने की लालसा और ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा देख कर इस नाई समाज के कुछ अगुआओं के मुंह में पानी भर आया है और इसलिये यह सारा आन्दोलन अपने को उच्च बनाने के उद्देश्य से चलाया गया है।

अब से ... " रक्षित रखता है। नाई जाति जिसका पेशा बाल बनाना और द्विजातियों की सब प्रकार की सेवा करना है इस समय उस जाति के कुछ पढ़े लिखे मनुष्य इस चेष्टा में लीन हैं कि वे नाई को ब्राह्मण वर्ण में होना सिद्ध करें यह उनका प्रयत्न आकाश कुसुमवत् है। बृटिश गवर्नमेन्ट भारत के धर्म सम्बन्धी बातों से उदासीन है यदि आज कोई क्षत्रिय राजा होता तो ये सभी नाई शूद्र बना दिये जाते।

नाइयों की तरफ से ... .

... . . " उपस्थित नहीं कर सका।

नाई शूद्र हैं।

महाभारत ...

.........इस प्रकार भी नापित शूद्रों में ही परिगणित हो सकते हैं।

नाई अछूत हैं

यद्यपि इस प्रकार नाई शूद्रों में परिगणित हो सकते हैं पर या तो नाइयों के दो भेद होंगे या यह होगा कि शूद्र होने से और अधिक नीच काम करने से इनको अछूत माना गया होगा। यह चाल तो अब भी है कि नाई से बाल बनवाकर अनेक लोग तुरन्त स्नान करते हैं। अधिकांश लोग केवल धोती पहिन कर बाल बनवाते हैं इसका भी कारण यह है कि अन्य वस्त्र धोने न पड़ें, स्नान में धोती तो धोयी ही जाती है। नापित का दूसरा नाम दिवा कीर्ति भी है, अमरकोश में आया है "क्षुरी मुण्डी दिवाकीर्ति नापितान्तावशायिनः"। ये सब नाम नाई के ही हैं। मनुस्मृति में लिखा है कि—

दिवाकीर्ति मुदक्याञ्च पतितं सूतिकन्तथा।
शवन्तत् स्पृष्टिनञ्चैव स्पृष्ट्वा स्नानेन शुद्धयति॥

अर्थात् नाई, रजस्वला, पतित, अर्थात् ब्रह्मघाती प्रसूता, शव और शव को छूने वाले को स्पर्श कर स्नान करने से शुद्धि होती है। नाई को दिवाकीर्ति इसलिये कहते हैं कि उसकी कीर्ति दिन में ही है, रात्रि में क्षौर कर्म का निषेध है। नापित का एक नाम अन्तावशायी भी है इसका अर्थ यह है कि (अन्ते नीच जाति तया ग्राम सीमायाम वशेते तिष्ठति) नीच जाति होने से जो ग्राम की सीमा पर निवास करता है वह अन्तावशायी होता है—नापित और चाण्डाल दोनों के लिये यह शब्द आता है यही कारण है कि अब भी अधिक आचार विचार रखने वाले अपने सब बाल रखा लेते हैं जिससे नापित का स्पर्श न हो।

नाई को वेदाधिकार नहीं है ....फिर इस पत्र में भी कहीं नाइयों को ब्राह्मण नहीं बताया है।

वादी की लिखी पुस्तक के मुख्य मुख्य अंशों का खंडन संक्षेप से इस लेख में कर दिया गया है। नाई लोग सिर पटक कर मर जावें तब भी ब्राह्मण नहीं बन सके।

ब्राह्मण समुदाय से भी हमारा इस अवसर पर निवेदन है कि इस समय वे चेतें, अपना संगठन करें और नीच जातियों के इस प्रकार के दुस्साहस को रोकने का प्रयत्न करें।

—:*:—

ब्रह्मर्षि वर्ष २ दर्शन ८ तारीख ५-१०-१६२२ पृष्ठ ६ में सम्पादक पंडित छुट्टनलाल स्वामी M R A S की सम्मति।

नाई झगड़ा।

क्या नाई भी ब्राह्मण हो सक्ते हैं?

कुछ दिनों से कुछेक नाई अपनी जाति को ब्राह्मण सिद्ध करना चाहते हैं इस पर हमारे कुछ ब्राह्मण भाई तो चुप हैं। और इस को छोटा आन्दोलन समझते हैं। और कोई कहते हैं कि छोटा रोग भी बिन औषध किये बढ़ जाता है इस लिये यह आन्दोलन भी बढता ही जा रहा है। इस का प्रतीकार होना चाहिये।

कुछ ब्राह्मणों के द्वेषी लोग इस पर फूहड़ कहा लगाते हैं और इसको उत्तेजित करते हैं ऐसा प्रतीत होता है। और चाहते हैं कि हमारे सेवक ब्राह्मण कहावें तो हमारी क्या हानि है।

हमको दुःख है कि देश में ऐसी लहर चल रही है जो द्वेष फैलाती है हम नाइयों को नेक सलाह देते हैं।

ब्राह्मण जाति का इस समय ह्रास है उठने का समय नहीं रहा है व्यर्थ ही ब्राह्मण पद जोड कर अपनी हंसी और हानि करा लेंगे-कुछ लाभ नहीं होगा हानि अवश्य होगी।

क्षौर कर्म के लिये अब नाई की आवश्यक्ता नहीं है हरेक बाबू उस्तरा रखने लगा है और भाग्य हीनता से हिन्दु नाई अच्छी हजा

मत वनाते भी नहीं हैं इस ही से मुसलमान नाइयों से लोग हजामत वनवाते हैं। केवल पांव दवाना, चिलम भरना, वुलावा देना। नायनों का काम शिर गूंथना, न्हवाना, झूंठे वर्तन मलना वुलावा देना है। जव ब्राह्मण वनेंगे तव यह काम छोड़ना पड़ेगा। वस फिर विवाहों में पैर धुलाई, सिर गूंथी के टके कैसे मिलेंगे? कौन देगा।

कानपुर कांड

❀ ओ३म् नमः शिवाय ❀

नायीमेला! नायीमेला!! नायीमेला!!!

अखिल भारतवर्षीय नायी द्वितीय

महासम्मेलन

कानपुर

नोटः—यह एक वड़ा नोटिस नाइयों की ओर से छपवाया जाकर कानपुर में वांटा गया था इसके मुख्य मुख्य वाक्य जो विरोध की जड़ स्वरूप हैं वे ही यहां उद्धृत किये गये हैंः—

१ हम नीच नहीं हैं, जन्म से लेकर मरण पर्यन्त जितने शुभ कार्य्य होते हैं हम नायी लोग ही करते हैं।

२ हिन्दू विना चोटी के नहीं हो सक्ता चोटी रखना नायी का काम है अर्थात् हिन्दू का वनाना नायी का काम है इसलिये नायी नीच नहीं हो सक्ता।

३ जिन राजाओं और महाराजाओं के चरण छूना कठिन है उनके सिर पर नायी का हाथ प्रति सप्ताह कम से कम दो वार फिरता है।

४ नायी का कामः—

आधी गादी वैठवो माथा ऊपर हाथ * महाराजाधिराज की आधी गद्दी पर वैठकर माथे पर हाथ धरता है इसलिये नाई नीच नहीं।

* इसकी लीला इस ही पुस्तक के पृष्ठ ६१ में देखिये।

५ संसार का गुरू ब्राह्मण, ब्राह्मण का गुरू सन्यासी होता है जो नाई सन्यासी का मुण्डन करता है वह नीच कदापि नहीं हो सक्ता।

६ यह बात जानकर आप भाइयों को खुशी होगी कि अपनी जाति में बड़े बड़े विद्वान् और धनवान भाई मौजूद हैं। अपनी जाति के डिपुटी कलेक्टर, आनरेरी मजिस्ट्रेट, डाक्टर, तहसीलदार, थानेदार, जागीरदार जमीदार आदि और आगरे के श्री प० रेवतीप्रसाद जी शर्म्मा, श्री प० दीपचंद जी आवेंगे इन सबको निमन्त्रण दिया गया है और ऐसे ही बड़े बड़े भाइयों के दर्शन होंगे आदि आदि।

दर्शनाभिलाषी

रामेश्वरप्रसाद	देवीचरण याज्ञिक
प्रधान	मन्त्री
	नायी ब्राह्मण सभा कानपुर

रमा प्रेस कानपुर।

समीक्षा—पाठकगण! विचारिये ब्राह्मण बनने की कैसी बढ़िया बढ़िया युक्तियें व दलीलें हैं तथा कैसी अहङ्कार भरी बातें छपायी गयी हैं इन सब बातों का सूक्ष्म भाव लोग यह निकालते हैं कि "जब संसार का गुरू ब्राह्मण, ब्राह्मण का गुरू सन्यासी और जब नाई सन्यासी का मुण्डन करता है तो नाई सन्यासी का भी गुरू हुआ" याने नाई लोग ससार भर के गुरू हुये और संसार में छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा महाराजाधिराज तक, सब ही शामिल हैं अतएव नाई लोग सब ही के पूज्य याने गुरू हुये। यह संसार भर के अपमान की बात है।

फिर हिन्दू के बनाने वाले ही नाई लोग बनते हैं, यह और भी अहङ्कार भरी हिन्दू जाति के अपमान की वार्त्ता है क्या नाई जाति न हो तो कोई हिन्दू भी न होगा?

ये लोग अपनी जाति वालों के नाम के आदि में "पंडित" व अन्त में "शर्म्मा" शब्द ब्राह्मणों की तरह लगाते हैं जैसे "पं० रेवतीप्रसाद शर्म्मा, पं० दीपचन्द" इन वाक्यों के प्रति हमारा कहना यह है कि दीपचन्द जी रेवतीप्रसाद जी के पिता हैं अतएव पुत्र का नाम पं० रेवतीप्रसाद शर्म्मा तब पिता का नाम भी प० दीपचन्द शर्म्मा होना चाहिये था अथवा पुत्र का नाम भी पं० रेवतीप्रसाद ही रहना चाहिये था। जब रेवतीप्रसाद 'शर्म्मा' बने तो उनके पिता दीपचन्द जी को भी 'शर्म्मा' लिखना चाहिये था। अब प्रश्न यह होता है कि नाई लोग जो अपने नामों के आदि में 'पंडित' शब्द लगाते हैं इसका भावार्थ क्या है? क्या यह सङ्केत ब्राह्मणत्व बोधक है? यदि कहा जाय हां तो कौन से शास्त्रीय नियम से? क्योंकि पंडित तो ईसाइयों में भी होते हैं, यदि कहा जाय कि 'पंडित' शब्द संस्कृतज्ञ विद्वान् के नाम के पहिले लगाया जाता है तो जहां तक हमें पता लगा है रेवतीप्रसाद जी के पिता दीपचन्द जी श्री ठाकुर साहब जोबनेर के यहां अमीन थे और जमीन की पैमाइश किया करते थे तब इन्हें पंडित कैसे लिखा गया?

शेष देखना हो तो "विरोध की जड़ कौन है" शीर्षक लेख में देखियेगा।

इस विज्ञापन के कानपुर नगर में बटते ही कानपुर की जनता में उद्विग्नता फैल गयी जिसके प्रतिफल स्वरूप में हिन्दुओं की ओर से अनेकों नोटिस व विज्ञापनादि छपे और कुछ ब्राह्मण बनने वाले नाइयों की ओर से भी छपे, उन सब ही को एकत्रित करके प्रकाशित करने का हमने बहुत उद्योग किया पर सब के सब विज्ञापनादि प्राप्त न हो सके अतएव जो जो प्राप्त हुए हैं वे वे अविकल अथवा सारांश स्वरूप में पाठकों के लाभ के लिये हमने प्रकाशित कर दिये हैं।

शास्त्रार्थ-रहस्य

नोट.—नाइयों के उपरोक्त विज्ञापन के प्रकाशित होकर बटने पर सब से प्रथम हिन्दुओं में जागृति पैदा करने वाले महामान्य प० कालूराम जी शास्त्री ने नीचे लिखा विज्ञापन निकाला।

श्री हरि

नींद छोड़ दो।

प्रत्येक ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य प्रभृति धार्मिक तथा उपरोक्त जातियों के मुख्य सज्जनों और धर्म सभाओं से प्रार्थना है कि वे धर्म की तरफ भी दृष्टि रक्खा करें। जरा सी आंख चुराने से कुछ का कुछ हो जाता है। आज से बीस वर्ष पहिले लोहार और बढइयों ने ब्राह्मण बनने का दावा किया उस समय समस्त हिन्दु कान में तेल डाल कर सो गये। फल यह निकला कि अब लोहार बढ़ई संस्कृत पढ़कर विदेशों में जा जा कर कथा बांचने लगे, कर्म काण्ड करवाने लगे, श्राद्ध में निमन्त्रण जीमने लगे। अब ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य सभी सज्जन उनके पैर पूजते हैं और उनके शिष्य बनते हैं। इसीप्रकार कुछ दिनों में नाई साहब भी पंडा बनेंगे और पैर पुजवावेंगे। अतएव इस समय इनका घोर विरोध करना चाहिये हमें इस बात का बड़ा रंज है कि मर्य्यादा पुरूषोत्तम सनातन धर्म सभा आदि आदि समस्त सभायें चुप क्यों बैठी हैं, क्या इन की अन्त्येष्टि हो गयी? और क्या धार्मिक जातियां इसको अच्छा समझती हैं, यदि अच्छा नहीं समझतीं तो घोर विरोध क्यों नहीं करतीं?

भवदीय

प० कालुराम शास्त्री।

मर्चेन्ट प्रेस कानपुर

नाइयों का उत्पात्

नाई महासम्मेलन कानपुर में होने वाला है ता: २६-२७-२८ दिसम्बर सन् १६२२ ई० दिन मंगलवार, बुधवार और बृहस्पतवार तक। इस सम्मेलन में सुनते हैं कि नाइयों को ब्राह्मण बनायेंगे । यह बड़ी ही कठिन बात है कि जो नाई ब्राह्मण बने, ऐसी अनरीत आज तक नहीं हुयी और न होनी चाहिये । क्या नाई भाइयों को नाई जाति से उन्नति नहीं मिल सक्ती अगर अपना भला चाहें और हम लोगों से प्रेम चाहें तो अपने बुजुर्गों की बात को याद रक्खें और उसी ढंग से चलें इसी से तुम्हारा हमारा प्रेम और मेल रहेगा वेद और शास्त्र से विरुद्ध नहीं चलना चाहिये । बस हम लोगों का इतना ही कहना है ।

आप लोगों के हितैषी:—

द: देवीदीन कलवार	द: पं० रामभजो जी
द: भगवान दास कलवार	द: पं० मन्नालाल मिश्र
द: रामअधीन कलवार	द: पं० रामसहाय जी
द: सर्जुप्रसाद कलवार	द: सुचित नाई आदि आदि
द: रूपनारायन कलवार	घुमनी मुहाल कानपुर

ऋषिकुल यंत्रालय कानपुर ।

—※—

सिंह क्षत्री जाति पत्र

(नाई सभा का विरोध)

हमारा सब क्षत्री सिंह (ठाकुर) जातीय जनों और सब छोटी बड़ी जाति में पैदा भए जाति के अभिमानी जनों से कहना है कि…… ……………अपने को नाई होकर नायी ब्राह्मण, शर्म्मा व याज्ञिक लिख कर छपा दिया तो अब क्षत्री व और सब जाति के सिर पर लात

धर दी और सब से पुजाने के हकदार बन गए, और क्षत्री जाति इन के पांव लगने वाली हो गयी, यह धर्म पर वज्रपात भया, इस स सब क्षत्री जाति के और सब जाति के पुरुष एक एक नोटिस निकालें और पक्का विरोध करें कहा है —पूजिय विप्र सकल गुणहीना। शूद्र न पूजिय वेद प्रवीना ॥ इस में देर न करो हमारे तन में भी जाति का रक्त भरा है, इस से इस पत्र द्वारा क्षत्री जाति की तरफसे विरोध कर जाहिर किया और आप सब जातियों को भी चाहिये कि अपनी अपनी जाति अभिमान का परचा पत्र छपा कर नाइयों का विरोध करो और जब कभी कहीं ऐसा उलट पलट देखो विरोध करने के लिये तय्यार रहो। देर मत करो गांव गांव शहर शहर में खबर करदो कि नाऊ हमारे पूज्य बनते हैं। निवेदक—

ठाकुर दयाशंकर सिंह ठाकुर शिवमंगल मौजा कौरारी
ठाकुर शिवरतन सिंह नम्बरदार ठाकुर लालसिंह, ठा० बच्चूसिंह

मर्चेन्ट प्रेस कानपुर।

श्री हरि

विज्ञापन।

सर्व सनातन धर्मियों को विदित हो कि आज कल नाई जाति के विषय में कोलाहल मच रहा है, उस में यथार्थ सिद्धान्त प्रकट करने के लिये श्री ब्र० व० सनातन धर्म महामण्डल की ओर से आगामी २२ दिसम्बर शुक्रवार सन्ध्या को ५ बजे सनातन धर्म भवन में महती सभा होगी जिस में पूज्यपाद श्री १०८ स्वामी दयानन्द जी महाराज तथा अन्यान्य स्थानीय प्रसिद्ध विद्वानों के भाषण होंगे

निवेदक
गिरधरदास भार्गव
मंत्री

ब्राह्मण प्रेस, कानपुर।

खुला चैलेंज **स्पष्ट घोषणा** खुला चैलेंज

प्यारे सज्जनो!

सेवा में सादर निवेदन है कि स्थानीय श्री मारवाड़ी विद्यालय नयागंज में बुधवार तारीख २७-१२-२२ को ठीक ८॥ बजे सायंकाल एक बृहत् सभा होगी जिस में प्रमाणों द्वारा विद्वान् लोग यह सिद्ध करेंगे कि नाई शूद्र हैं कदापि ब्राह्मण नहीं हो सकते। आशा है कि आप लोग इनकी पोल को समझने के वास्ते इष्ट मित्रों सहित पधारने की कृपा करेंगे।

उन नाइयों को जो कि ब्राह्मण बनने का साहस करते हैं इस नोटिस द्वारा सूचना दी जाती है कि वे उपरोक्त स्थान पर उपरोक्त दिवस में प्रातः काल ८ बजे से ११ बजे तक अपने नाभिक पुराणादि तथा अन्य पुराणादि व दलीलों सहित जनता के समक्ष उपस्थित हो कर अपनी जातीय व्यवस्था समझ लें अन्यथा वह इस प्रकार सनातन धर्म शास्त्र विरुद्ध कार्य्य करने का दुस्साहस न करें।

निवेदक

मन्नीलाल पाजपेई

उपमंत्री

श्री कान्यकुब्ज कुमार सभा कानपुर

नोटः—जब नाइयों ने शास्त्रार्थ से आना कानी काढ़ी तब नाइयों के ब्राह्मणत्व खंडन व शूद्रत्व मण्डन करने को सभा हुयी।

॥ श्री ॥

प्रिय भाइयो!

कल की नोटिस से आप लोगों को ज्ञात होगा कि तारीख २७-१२-२२ को मारवाड़ी विद्यालय में ४॥ बजे शाम को नाई कान्फरेन्स की प्रतिवाद सभा है जिसमें नाइयों की वास्तविक जाति का परिचय कराया जायगा, हम आनन्द के साथ सूचित करते हैं कि उपरोक्त अवसर पर निम्नलिखित विद्वान भी पधारे हैं जिन्होंने

उपरोक्त अवसर पर पधार कर हम को अनुग्रहीत करने का वचन दिया है आशा है आप उपरोक्त विद्वानों के उपदेशों से लाभ उठावेंगे। प० कालूराम जी शास्त्री तथा प० अयोध्यानाथ जी त्रिपाठी के अपूर्व चुटकुले अवश्य सुनिये।

१ श्री १०८ स्वामी बालानन्द जी न्याय वेदान्त व्याकरण मीमांसा चार्य्य
२ श्रीमान् प० बद्रीनारायण जी नय्यायिक
३ ,, ,, कालूराम जी तर्कशास्त्री
४ ,, ,, रामदत्त जी अवस्थी धर्मशास्त्रोपाध्याय काव्यतीर्थ, विद्या भूषण (L C T) एल सी टी. प्रोफेसर गवर्नमेन्ट जुबिली कालेज लखनऊ
५ ,, ,, रामसेवक जी शास्त्री व्याकरणाचार्य्य
६ ,, ,, दुर्गाचरण जी शास्त्री ज्योतिषाचार्य्य
७ ,, ,, रामेश्वर जी मिश्र वैद्यशास्त्री चिकित्सक चूड़ामणि वैद्य कुल भूषण
८ ,, ,, चन्द्रशेखर जी शास्त्री विद्यावाचस्पति व्याकरणाचार्य्य
९ ,, ,, बेणीमाधव जी व्यास
१० ,, ,, रामचन्द जी बाजपेई वैदिक कर्मकांड विशारद
११ ,, ,, सूर्य्यबली जी बाजपेयी वैदिक
१२ ,, ,, दामोदर जी दीक्षित सामवेदी
१३ ,, ,, सत्यदेव जी पाण्डे शास्त्री आयुर्वेदाचार्य्य वैद्यरत्न
१४ ,, ,, रामचन्द्र अवस्थी शास्त्री वैद्य भूषण धर्म शास्त्राचार्य्य
१५ ,, ,, देवदत्त जी शर्म्मा शास्त्री ब्रह्मर्षिपुत्र
१६ ,, ,, बैकुण्ठनाथ जी साहित्याचार्य्य काव्यतीर्थ

इत्यादि इत्यादि

भवदीय—
मन्नीलाल बाजपेयी
उपमंत्री श्री कान्यकुब्ज कुमार सभा
कानपुर

शक्ति प्रेस कानपुर

नाई कान्फरेन्स की घोर पराजय

(नाइयों के भूत का छूमन्तर)

हार ! हार ! खासी हार !

कल तारीख २६-१२-२२ को श्री कान्यकुब्ज कुमार सभा की ओर से एक नोटिस चेलैञ्ज रूप में शंकासमाधान के वास्ते नाई कान्फरेन्स के नाम निकाला था और इसी आशय का एक पत्र भी भेजा था और फिर भी एक पत्र उसके बाद ता: २७-१२-२२ को ८ बजे प्रातःकाल इस आशय का भेजा था कि हमारे समस्त विद्वज्जन शंकासमाधान का उत्तर देने के लिये उपस्थित हैं और तुम्हारी राह देख रहे हैं किन्तु नियमित ११ बजे समय तक उन लोगों की रास्ता देखी गयी परन्तु वे ठीक समय पर उपस्थित नहीं हुए-आयें कैसे ? उन का पक्ष सर्वथा निर्मूल है। निर्मूल पक्ष को लेकर विद्वानों के सामने आने का उनका साहस कैसे हो। मन्वादि स्मृतियाँ नाइयों को शूद्र बतला रही हैं और कोई ऐसा प्रमाण नहीं है कि वे अपने को शूद्र से भिन्न अन्य जाति सिद्ध करदें। अतएव नाई कान्फरेन्स के कार्य्यकर्ताओं ने चुप रहना ही उचित समझा इन बातों से जनता को असलियत का पता लग गया होगा। आशा है जनता अब इनके पटचक्र में न आवेगी और वे नाई जिन को अपने इस लोक और परलोक के बिगड़ने का खयाल है इन कुछ नये विचार वाले इने गिने नाइयों के धोके में न पड़ेंगे।

निवेदक—
मन्नीलाल वाजपेई
उपमंत्री श्री कान्यकुब्ज कुमार सभा
कानपुर

शक्तिप्रेस कानपुर

॥ ओं नम शिवाय ॥

विपक्षियों को नायी ब्राह्मणों का उत्तर।

२६-२७-२८ दिसम्बर २२ को नायी सम्मेलन हुआ-नायी जाति की उन्नति से द्वेष करने वाले कुछ लोगों ने नोटिसों और अन्य साधनों द्वारा हमारे महोत्सव में बाधा डालने का सिरतोड़ प्रयत्न किया।

जनता के सन्तोष के लिये हम सूचना देते हैं कि:—

श्रीगुरुसरनलाल जी वर्मा आदि आदि आदि आदि आदि आदि आदि आदि जौन सब से अधिक विद्वान् पंडित हो उसका नाम देकर सर्वजन हस्ताक्षर कर सूचना दें उत्तर मिलने पर शास्त्रार्थ के समय नियमादि तै किये जावेंगे।

यदि ३ जनवरी सन् १९२३ ईस्वी तक सूचना का उचित उत्तर न मिला तो विपक्षियों की सर्वथा पराजय सिद्ध होगी।

देवी चरण याज्ञिक मन्त्री नायी ब्राह्मण सभा-कानपुर।

(सारांश मात्र)

३१-१२-२२

शर्मा प्रेस कानपुर

पाठक! यह विज्ञापन नाइयों की सभा की ओर से छपाया जाकर कानपुर नगर में सर्वत्र चिपकवा दिया गया था और ता ३१-१२-२२ पहिले पहिले जितने विज्ञापनदाता नायी जातिके विरुद्ध थे उनके सब के ही नाम भी इस विज्ञापन में अङ्कित करके ब्राह्मण बनने वाले नाइयों ने शास्त्रार्थ का चेलेञ्ज दिया पर यह टाल मटोल साही उत्तर था पर इस पर फिर जनता की ओर से विज्ञापनादि निकले यथा —

नाई सभा को प्रत्युत्तर

क्षत्री स्वर्णकारों की ओर से

एक विज्ञापन तारीख ३१-१२-२२ को नाई सभा ने प्रकाशित किया है जिससे जनता में भ्रम फैला हुआ है कि जिस समय हमारे नगर के बड़े बड़े विद्वानों ने खुला चेलेञ्ज दिया था क्या उस समय नाई सभा मृतप्रायः हो गयी थी? उन को शास्त्रार्थ का समय भी दिया गया था। उस समय नाइयों ने कोई उत्तर नहीं दिया। और उस अवसर को टाल लेजाने की कोशिश की। जब हमारे नगर व बाहिर के विद्वानों ने विराट सभा करके नाइयों के यथार्थ वर्ण को प्रकट कर दिया था और यह सत्य है कि मनुजी के कहे अनुसार उन अठारह चाण्डालों में से एक तुम हो। यदि ऐसा ही करते रहोगे तो निश्चय है कि जल्द तुम्हारी जाति नीचे गिरेगी। बस ज्यादा न कह कर मैं इतना कहदेना चाहता हूं कि अब भी श्रीयुत मन्नीलाल बाजपेयी उपमंत्री श्री कान्यकुब्ज कुमार सभा द्वारा नोटिस निकाला जा चुका है और बहुत से विज्ञापन निकल रहे हैं। यदि उनसे नाई सभा की तृप्ति न हो तो हम भी तय्यार हैं। शास्त्रार्थ के नियमादि ते करने को ४ जनवरी तक का अवसर दिया जाता है। नियम रजिस्ट्री शुदा होंगे।

निवेदक—

ललताप्रसाद वर्मा उपमंत्री

श्री क्षत्री स्वर्णकार सभा नारियल बाजार कानपुर

गुरुसरनलाल वर्मा | **रामस्वरूप वर्मा**

पुत्तूलाल वर्मा | **सम्पतलाल वर्मा**

आदि आदि

ता: ३-१-२३

आदर्श प्रेस कानपुर

नोट:—ब्राह्मण बनने वाले नाइयों के दिये हुये शास्त्रार्थ चेलेञ्ज का उत्तर।

॥ श्री. ॥

❀ नाइयों का प्रत्युत्तर ❀

हमें नाई सभा की ओर से ता० ३१ दिसम्बर २२ का विज्ञापन दीवारों पर चिपका हुआ मिला जिस में उन्होंने जनता में भ्रम फैलाने के लिये नगर के विद्वान् तथा अन्य सज्जनों से शास्त्रार्थ करने की अभिलाषा प्रगट की है। नाई जाति का निर्णय करने एवं उनके सब सन्देहों के निवृत्त करने के लिए ता २७ दिसम्बर १९२२ को दो पत्रों तथा एक विज्ञापन द्वारा नाई लोगों को उनके सम्मेलन से बुलाया गया था, परन्तु वे लोग उक्त दिवस पर न आए। अत उनकी पराजयता सर्वथा एवं पूर्णरूप से निश्चित हो चुकी। और इसके अतिरिक्त हम एक महती खुली सभा कर के वेद शास्त्रों द्वारा नाई जाति का वास्तविक स्वरूप सिद्ध कर चुके हैं। यद्यपि उपर्युक्त कारणों के अनुसार शंका समाधान करना तो दूर रहा हमको विज्ञापन तक का उत्तर देना उचित न था तथापि इसलिए कि अब भी यदि हमारे भटके नाई लोग कुपथ से सुपथ पर आजावें हम उत्तर दे देना उचित समझते हैं। यदि वे अपनी जाति का निर्णय करना चाहते हैं तो यह सूचित करें कि उनकी तरफ से कौन विद्वान् शास्त्रार्थ करेगा। शास्त्रार्थ मौखिक होगा या लिखित और कौन २ ग्रन्थ प्रमाण स्वरूप में मान्य होंगे। शास्त्रार्थ में मध्यस्थ कौन होगा। नाई लोगों के हित के लिये, जिस में ये लोग जातिच्युत न हो जांय, हम उन को हर तरह से समझाने तथा शंकासमाधान करने के लिये तैय्यार हैं। यदि हमारी तरफ के प्रमुख व मध्यस्थ को वे पूछना चाहेंगे, तो हमारी तरफ से हरएक विद्वान् ब्राह्मण प्रमुख व मध्यस्थ हो सका है-इस का उत्तर तारीख १ जनवरी तक आ जाना चाहिए ता. १-१-२३

मन्नीलाल वाजपेई उपमंत्री, श्री कान्यकुब्ज कुमार-सभा, कानपुर।

शक्ति प्रेस कानपुर।

ॐ

॥ सत्यमेव जयते नानृतम् ॥

शास्त्रार्थ की महती घोषणा

अहा हा हा हा अब आनन्द आयेगा। सत्य सिद्धान्त युक्त घोषणा बीसियों वर्षों से प्रकाशित है उस पर किसी असली ब्राह्मण और (गुप्त कुछ प्रकट) नकली ब्राह्मणादि किसी ने भी अस्वीकृति प्रकट नहीं की और शास्त्रार्थ भी नहीं किया। अब नकली ब्राह्मणों के भाररूप दल के बढ़ाने वाले नाउवों ने हमारा मत व १७ निर्णय स्वीकार करके भी वर्षों से अपनी भूलों को हम से क्षमा करवा २ और धोका देदे कर बहुतसा भ्रमजाल फैला फैला जनता के आदि स्वयं सेवकों को फंसा रहे हैं और अब हमारे आक्षेप करने और कई पत्रों के देने पर उत्तर दिया है कि आप से शास्त्रार्थ करेंगे, उस, पर हमने आज ही उनको पत्र लिख दिया है कि मंत्री महोदय आर्य्य-समाज कानपुर के स्थान पर आकर नियमादि निश्चय कर जयपराजय की स्वीकृति पर शीघ्र ही रजिस्ट्री करवाइये और प्रथम हम से शास्त्रार्थ करके तब भागिये। अपने जयपराजय के पश्चात् हमारे सत्य सिद्धान्तों पर विचार कर लेना यदि हम में कोई मिथ्या विचार व कार्य्य सिद्ध कर दोगे तो हम शीघ्र ही उसे त्याग देंगे। क्योंकि हम तुम्हारे नाउवों की भांति ज्ञान दुर्विदग्ध नहीं हैं। अब हम फिर घोषणा करते हैं कि हमारे सिद्धान्त व कार्य्यों में कोई मिथ्यत्व व पाखण्ड सिद्ध कर देगा तो हम उसे त्याग देने को उद्यत हैं, ऐसा न करके यदि कोई भी हमारे और श्रेणी (जाति) के विरुद्ध कुछ भी लेख प्रकाशित करेगा तो वह द्वेष भाव ही समझा जावेगा और यही सिद्ध होगा कि उसने हमारी मानहानि की और वह पंच परमेश्वर का व अदालत तक का भी गुनागार होगा। अब देखना है कि उन

जकात नाइयों में से कौन खड़ा होता है और हमरी पूर्व प्रकाशित कौनसी प्रबल स्मृति (शर्त) को स्वीकार करता है हम श्रीमान् बाबू गुरुचरणलाल, वर्मा आदि सुजनों से व जनता से विनीत प्रार्थी हैं कि प्रथम हमें ही निबट लेने दीजिये मध्यस्थ ५ नियत होना चाहिये।

तारीख ३ से ५-१-२३ तक उत्तर आजाना चाहिये।

पं० चन्द्रिकाप्रसाद आत्रेय तर्काचार्य वानप्रस्थी

पुरानी सब्जी मंडी कानपुर

तारीख ३-१-२३ को रमा प्रेस कानपुर में छपा।

—*—

नाई जाति के ब्राह्मत्व सम्बन्ध में खत्री जाति का विज्ञापन

❋ वर्मा खत्री-जाति पत्र ❋

हम अपने सब बड़े छोटे पदाधिकारी खत्री भाइयों से सविनय निवेदन करते हैं कि शरीर पाकर दुनयवी व्यवहार करते हुये भी अपने अपने वर्णाश्रम धर्म व जाति धर्म किले की रक्षा करनी जरूरी है • • • कौन नहीं जानता है कि नाई जाति जिस तरह और जैसे धर्म कर्म वाली है सरासर धींगा धींगी उलटा कह सत्य को झूठ बनाते हैं इस से हम अपने सब भाइयों से प्रार्थना करते हैं कि धर्म से ही लोक पर लोक की उन्नति है इस पर जरूर खड़े हो "अपूज्या यत्र पूज्यन्ते" अपूज्य को पूज्य बनने से सबको दुःख और भय पैदा होता है इसलिये शर्म्मा, ब्राह्मण याज्ञिक इन ब्राह्मणा के पूज्य खिताबों के लेने वाले नाइयों की प्रथा का हम सब विरोध करते हैं और सब जाति वालों को भी करना चाहिये।

द० कालिकाप्रसाद खत्री
द० सर्युप्रसाद खत्री
द० राजाराम खत्री
द० गोपालदास खत्री

मर्चेन्ट प्रेस रेल बाजार कानपुर

नाई ब्राह्मण नहीं हो सकते

ये वर्णसंकर हैं

इस को हम सप्रमाण सिद्ध कर सक्ते हैं।

विद्या वाचस्पति व्याकरणाचार्य्य

पं० चंद्रशेखर शास्त्री

प्रधानाध्यापक बल्देवसहाय संस्कृत पाठशाला

नयागंज कानपुर।

ऋषिकुल यंत्रालय कानपुर में मुद्रित।

श्री ज्ञानेश्वराय नमः ।

कलियुग के सपूतो सावधान !

जनता धर्म विध्वंसकों से सावधान रहे !

नोट —(वृहद्विज्ञापन का सारांश मात्र)

प्रिय सज्जनवृन्द !

सत्य सनातनधर्म प्राचीनकाल से कहता चला आ रहा है कि कलियुग में धर्म का विध्वंस करने वाली वर्णसंकर जातियाँ हिन्दू धर्म की मर्यादा को नष्ट करने के लिये उठ खड़ी होंगी और ब्राह्मण क्षत्रिय तथा वैश्य जातियों के पतित वीर्य्य से उत्पन्न होकर शूद्र जातियां वर्ण भेद को मिटाने की चेष्टा करेंगी।

नाई को छूकर लोग नहाते हैं और उस के उस्तरे को हाड़ मास और केश काटने वाला समझकर घोर अपवित्र मानते हैं ऐसे अपावन कर्म के करने वाले नाई भी अब वेदों के मन्त्रों का भ्रम पूर्ण अर्थ करके अपने को ब्राह्मण कहने का दावा करने लगे हैं उपहास जनक "शूद्र" कहा है और इन्हीं प० भीमसेन के गुरु स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी संस्कार विधि में इन नाइयों को शूद्र ही ठहराया है। पर

हो गये हैं।

दिल्लगी यह है कि ये नाई द्विजातियों को अपना यजमान भी कहते जाते हैं और स्वयं ब्राह्मण बनने का भी नाटक खेल रहे हैं।

कलियुग आगमन के यह ही तो लक्षण हैं। जब महाशूद्र नापित लोग ब्राह्मण पद के उम्मेदवार हुये हैं तो अवश्य ही कलियुग के प्रथम चरण का आगमन हो चुका है। शूद्र

आदि हैं।

उन्नति का झंडा खड़ा करने वाले हे शूद्र महापुरुषो ! तुम्हारा काम मशाल दिखलाना ही है। आप लोग उस अन्नदात्री मशाल को छोड़ अग्निहोत्र मत करो ! अन्यथा धर्म कोप की अग्नि में आप के शूद्रत्व की मर्यादा भी भस्म हो जायगी।

साफ सुथरे रहने के लिये और मद्य मांस छोड़ने को तो हम भी आप को उपदेश देते हैं लेकिन आप तो अपने शूद्रत्व के मदमें ऐसे मतवाले हो रहे हैं कि कलियुग की गंदी नालियों में औंधे मुंह गिरने का स्वयं ही आयोजन कर रहे हैं ! केवल ब्राह्मण ही बनने का दावा रखते हो या सुकर्म करने की भी धारणा रखते हो ? जिस हिन्दु धर्म की मर्य्यादा द्वारा हजारों वर्षों से आप का पेट पल रहा है, उसी मर्य्यादा को भंग कर के कहां रहोगे ? न तो तुम्हें नाई लोग ही अपने घरों में घुसने देंगे और न अन्य शूद्रों के यहां ही तुम्हें आश्रय मिलेगा। अपने भविष्य की भी तो कुछ चिन्ता करो ! वर्ना वही हालत होगी कि :—

चौबे छब्बे होने गये और रह गये दुब्बे इसलिये……छोड़ दोगे।

तुम्हारा हितचिन्तक—
पं० रामस्वरूप मिश्र
सत्संग समिति इटावा बाज़ार कानपुर

मर्चेन्ट प्रेस रेल बाज़ार कानपुर

नोटः—ब्राह्मण बनने वाली नाई जाति ने अपने स्वाभाविक प्रकृत्यानुसार शास्त्रार्थ का चेलेञ्ज तो निकाल दिया परन्तु उस का सम्हालना नाई सभा के लिये असम्भव सा हो गया क्योंकि कानपुर में चहुं ओर से चेलेञ्ज के उत्तर चेलेञ्ज धड़ाधड़ छपकर बटने लगे, तब नाइयों ने लोग दिखावे के लिये यह नोटिस निकाला।

चेलेञ्ज स्वीकार।

आज एक नोटिस प० चन्द्रशेखर जी शास्त्री प्रधानाध्यापक बल्देवसहाय संस्कृत पाठशाला नवागंज कानपुर ने निकाला है।जिस में उन्हों ने नाइयों को वर्णसंकर शूद्र सप्रमाण सिद्ध करने की प्रतिज्ञा कियी है।

हमें उक्त पंडित जी का चेलेञ्ज स्वीकार है। हमारा महा-सम्मेलन २७-२८ दिसम्बर को होनेवाला है अतएव सम्मेलन की कार्य्यवाही समाप्त होने के पश्चात दिन और समय निश्चय करके शास्त्रार्थ करलिया जायगा। तब तक पंडित जी हम से पत्र व्यवहार द्वारा शास्त्रार्थ के नियम तै करलें।

निवेदक—
देवीचरण याज्ञिक मन्त्री,
नाई ब्राह्मण सभा कानपुर।

कानपुर प्रिंटिंग प्रेस ठठी सड़क।

—✻—

भीम. पातु।

चेलेञ्ज स्वीकार का वास्तविक उत्तर।

आज एक नोटिस चेलेञ्ज स्वीकार के नाम से देवीचरण (नाई) मन्त्री नाई सभा कानपुर की तरफ से निकला है। जिस में उक्त महाशय ने हमारी घोषणा को स्वीकार करने का दृश्य आड

में दिखलाया है आप लिखते हैं कि हम को घोषणा स्वीकार है-किन्तु अभी नहीं सम्मेलन के बाद तब तक हम से शास्त्रार्थ के नियम तय करलीजिये । जनता को भली भांति मालूम होगया होगा कि ये कैसी चाल है । यह बचने की बात है सम्मेलन के बाद कह देंगे कि अब तो हमारे विद्वान नाई चले गये फिर देखा जायगा ।

प्यारे ब्राह्मण बनने वाले नाइयों भागने का काम नहीं है दिल खोल कर सामने आओ आदि आदि.........

विद्या वाचस्पति व्याकरणाचार्य

पं० चन्द्रशेखर शास्त्री

प्रधानाध्यापक बल्देव सहाय संस्कृत पाठशाला नयागंज कानपुर ।

——:※:——

ॐ नमः शिवाय ।

पं० चन्द्रशेखर का स्वप्न ।

हमारे चेलेञ्ज स्वीकार उत्तर देते हुये पं० चन्द्रशेखर जी ने लिखा है कि "सम्मेलन के बाद कह देंगे कि अब तो हमारे विद्वान् नाई चले गए" न जाने पंडित चन्द्रशेखर जी को यह स्वप्न कहां से आया ? भाईसहाब ! घबड़ाइये नहीं, हमारे नेता आस को संतुष्ट किये विना नहीं जांयगे और आपके लिये तो कानपुर के नायी ब्राह्मण (१) भी काफी हैं । हमें सम्मेलन में अपने जात्युन्नति संबंधी

---

(१) हम देवीचरण जी से पूछते हैं कि आप नाई होकर अपने आपको "याज्ञिक" लिखने लग गये सो अपने मुंह मियां मिट्ठू कोई भी बने पर आप अपने कानपुर के नाई भाइयों को 'नायी ब्राह्मण' क्यों व कैसे लिखते हैं जब कि कानपुर के अनेकों नाइयों ने कई विज्ञापन निकाल कर आपके ब्राह्मण बनने की नयी चाल को धिक्कारा है ?

अनेक आवश्यक कार्यों पर विचार करना है। सम्मेलन के पश्चात् आप से शास्त्रार्थ होगा निश्चिन्त रहें। (१)

आपने जो पाराशर स्मृति का प्रमाण उलट फेर करके छपा है उस का उचित समाधान भी शास्त्रार्थ के समय कर दिया जावेगा। (२)

हम कहार भाइयों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं कि प० चन्द्रशेखर जी ने कहारों को दास लिखा है परन्तु उनको संस्कार का अधिकार बतलाया है।

कहार भाइयो! नोट करलें। (३)

देवीचरण याज्ञिक
मन्त्री नायी ब्राह्मण सभा कानपुर।

---

(१) जैसा प० चन्द्रशेखर जी ने कहा वैसा ही हुआ, कहिये सम्मेलन के पश्चात् शास्त्रार्थ क्यों नहीं किया ? यह टालमटोल न थी तो क्या था ? जब कानपुर की जनता की ओर से शास्त्रार्थ के लिये बीसों नोटिस निकले तब आपने किसी के साथ तो शास्त्रार्थ किया होता ?

(२) 'उलटा चोर कोतवाल को डांटे' इस लोकोक्ति के अनुसार आप उलटे प० चन्द्रशेखर जी पर श्लोक बदलने का इल्जाम लगाते हैं क्योंकि उन्होंने तो श्लोक ठीक लिखा है हां आपके जाति भाई नाई पं० देवीप्रसाद जी ने श्लोक बदल कर अपनी पाण्डित्यता का परिचय दिया है देखिये इस ही पुस्तक के पृष्ठ ५५ में हम दिखलाये हैं और आप भी अपनी 'नायी वर्ण निर्णय' नामक पुस्तक के पृष्ठ २० में छपे श्लोक को पाराशर स्मृति के श्लोक से मिलाइये और फिर देखिये कि आप के नाई भाई देवी प्रसाद का कैसा विचित्र पाण्डित्य है ? और यह श्लोक बदलने का दोष किस का है ?

(३) आप कहार भाइयों को क्या उत्तेजित करते हैं पहले अपनी तो निबटा लीजिये।

श्रीशः पातु।

स्वप्न का फल

आज एक नोटिस देवीचरण नाई की तरफ से निकला है उस में उक्त व्यक्ति ने लिखा है कि भाई साहब घबड़ाइये नहीं हमारे नेता आप को सन्तुष्ट किये बिना नहीं जायेंगे, ठीक है (तपः शूद्रस्य सेवनम्) इस प्रमाण से ब्राह्मणादिकों को सेवा से सन्तुष्ट करना ही शूद्रों का धर्म है, यही तुम्हारी उन्नति का रास्ता है। दूसरे आप लिखते हैं कि आप के लिये यहां के ही नाई काफी हैं यह भी ठीक है हमारे लिये तो केवल आप ही काफ़ी हैं क्योंकि ४।५ दिन में आवश्यका पड़ती है, इस समय नाई स्वप्न तक में जनेऊ ही देखते हैं, इसलिये सब से जनेऊ २ चिल्लाते हैं, परमात्मा इन्हें शांति दे। तीसरे इस समय नाई लोग ब्राह्मण बनने को इतने भूखे हैं कि "नाई ब्राह्मण नहीं हो सकते" या जो नाई ब्राह्मण बनते इससे नाई ब्राह्मण देखते ही नोट कर लेने को कहते हैं कहीं छिन न जाय यह चतुराई का नमूना है हम अच्छी तरह से सम्मेलन में शास्त्रार्थ करने को लिख चुके हैं। पर यह बराबर मनमानी लिख कर टालमटोल करते हैं। सम्मेलन में विचार करना ही उचित है। व्यर्थ काग़ज़ी घोड़े दौड़ाने की आवश्यक्ता नहीं है। जनता को चाहिए स्वतः इन के तत्व को समझले। यदि सम्मेलन में शास्त्रार्थ करना हो तो हम से नियम तय करो।

नोटः—सहायक भक्त प्रयागदास जी एस० एन० लाल को चाहिए कि हम से आकर जो संदेह हो निवृत्त कर लें।

विद्यावाचस्पति व्याकरणाचार्य

पं० चन्द्रशेखर शास्त्री

प्रधानाध्यापक बलदेव सहाय संस्कृत पाठशाला

नयागंज कानपुर

[ऋषिकुल प्रेस कानपुर]

॥ सत्यमेव जयते नानृतम् ॥

नाऊ शास्त्रार्थ में हमसे डरते हैं ।

हमने तारीख ३-१ २३ को शास्त्रार्थ की महती घोषणा नामक विज्ञापन निकाल नाउवों को शास्त्रार्थ के लिये ललकारा था और शास्त्रार्थ के नियमादि निर्मित करने को मन्त्री आ० स० के स्थान पर बुलाया था सो उसका कुछ भी उत्तर उन्होंने हमें न देकर बाजार में जहां तहां एक विज्ञापन चिपकवाया है उसी में नीचे कुछ लाइनें उलटी सीधी मेरे से प्रश्न की छापी हैं । क्यों नौवो शास्त्रार्थ में तुम अपना ब्राह्मण होना सिद्ध करोगे या उलटे मुझ से ११ प्रश्न ? ह ह ह यदि उसी चढ़े भूत के भरोसे शास्त्रार्थ में भी विजय पाने की ठानो हो तो याद रक्खो विषयच्युत के यह तुम्हारी प्रत्यक्ष पराजय होगी । वहां शास्त्रार्थ ही होगा नाई छत्तीसी नहीं । जब शास्त्रार्थ से अपने को ब्राह्मण सिद्ध करके मध्यस्थों से विजय पत्र प्राप्त कर लेना तब हमसे मन चाहे प्रश्न कर करके उत्तर ले लेना । क्यों नौवो तुमने अपने पैने छुरे से मुझे भी सहज ही में मूंड लेना चाहा है यदि ब्राह्मण बनना है तो मैदान में आकर शास्त्रार्थ करो मेरे प्रश्नों के उत्तर युक्ति के साथ वेदानुकूल दो मैं सर्वथा नौवों को नौआ सिद्ध कर दूंगा, मैं ऐसा नहीं सिद्ध कर सकूंगा तो अपनी पराजय मान लूंगा। यदि तुम लोगों के पास कोई वेदोक्त प्रमाण नहीं है जो है यह केवल ढोल की ही पोल मात्र भोले भाले अनपढ़ मनुष्यों में हून की हांकने के हरबे हैं उनके भरोस आकाश पाताल एक करने की धुन में ब्राह्मणत्व का जामा

पहिन कर सबके ऊंचे आसन पर बैठ जाने का उपाय वृथा ही है सुनो "सीधे सादे जैसे नौवा आहिउ तौने बने रहो" और अपनी उन्नति करो। ब्राह्मण बनकर अशान्ती की आग न धधकावो...... बनेंगे। मेरा असली कहना यही है कि यदि तुम्हारे पास ब्राह्मण बन जाने का असली सिक्का है तो उसे तुम सहर्ष जनता के निकट परखने को रखदो उसमें हिचिर मिचिर क्यों ? हम उसे अगूठे में रख परीक्षा कर जनता मात्र को प्रत्यक्ष करावेंगे कि नौवापन का धातु तो असली है और ब्राह्मणत्व पद उसमें जुड़ना यह नक़ली सिक्कापन है उसे तुम नहीं मानते हो तो शास्त्रार्थ करो देखो मैंने इसी से शास्त्रार्थ के नियम निर्मित करने को अपने स्थान में तुम लोगों को नहीं बुलाया कि ऐसा तुम क्यों करोगे। तब तुम लोग अपने स्थान में मुझे किस प्रयोजन से बुलाते हो ? और मैं किस आशा से वहां आऊं, वहां सिवाय धांधा गर्दी के कुछ तै हो हो न सकेगा। क्यों तुम लोगों को कोई योग्य पुरुष ही नहीं मिलता कि जिसके यहां हम तुम दोनों चलकर शास्त्रार्थ के नियम निश्चय करलें देखिये यहां के प्रसिद्ध प्रसिद्ध महानुभावों के नाम हम देते हैं इनमें से किसी के पास तुम चलकर हमसे शास्त्रार्थ के नियम तय कर सक्ते हो।

१ श्रीमान् पं० बलभद्र त्रिपाठी ताल्लुकेदार
२ ,, बाबू विक्रमाजीत सिंह जी वकील
३ ,, बाबू विश्वम्भरनाथ जी साहब
४ ,, बाबू ज्वालाप्रसाद जी वकील
५ ,, बाबू गणेश शंकर (सम्पादक प्रताप)
६ ,, बाबू नारायणदास अरोड़ा सम्पादक विक्रम
७ ,, बाबू आनन्दस्वरूप जी वकील
८ ,, बाबू बिहारीलाल जी साहब
९ ,, बाबू गिरधरदास जी वकील

१० श्रीमान् बाबू कलापति जी
११ ,, प० रमाशंकर जी सम्पादक वर्तमान
१२ ,, प० रामाधार जी—का० समा०

ये सब न मेरे पक्ष के हैं न तुम्हारे या ऐसे ही किसी अन्य सज्जन के पास तुम हमें बुला सके हो अब यदि शास्त्रार्थ से नहीं भागना चाहते तो उपरोक्त बातों को मान ताल ठोक शास्त्रार्थ के अखाड़े में आओ वितण्डावाद व नोटिसबाजी से क्या प्रयोजन ? अतएव आज तारीख ७-१-२३ से १ सप्ताह का समय हम तुमको देते हैं उसमें सब बातों को तुम सोचकर शास्त्रार्थ को कटिबद्ध हो जावो (क्योंकि)

शूरा नैव न भाषन्ते दर्शयात्मपौरुषम्

पं० चन्द्रिकाप्रसाद आत्रेय
तर्काचार्य वानप्रस्थी
पुरानी सब्जी मंडी कानपुर

रघुनन्दन प्रेस कानपुर

नोट—जब विद्यावाचस्पति व्याकरणाचार्य मिश्र जी, तर्काचार्य्य आदि आदि विद्वानों के सिंह की तरह दहाड़ते हुये अनेकों विज्ञापन निकल चुके और ब्राह्मण बनने वाली नाई जाति शास्त्रार्थ से मुंह छिपाने लगी तब नाइयों ने ही अपने बहके हुये भाइयों को समझाने का उद्योग किया यथा —

सब सनातनधर्मी नाई भाइयों
को
चेतावनी

सब भाइयों पंच सरपंच नाइयों से निवेदन है कि इस नाई सभा में जितने नाई राजा, शर्मा, पंडित, सिंह, राव, जमींदार, तालु

कदार थानेदार इत्यादि इत्यादि आये हैं वे सब हमारे भाई नाई हैं ओरों के वास्ते यह पदवी हैं जाति में भाई भाई सब बरोबर हैं, चना की दाल कौन घट और कौन बढ़ है, डट के एक एक भाई को बात करना चाहिये । दीपचन्द नाई का लड़का रेवतीप्रसाद नाई आर्य्य समाज गुरुकुल ज्वालापुर में पढ़ा है इस के गुरु आर्य्यसमाजी नये भीमसेन हैं यही आर्य्यसमाजी रेवतीप्रसाद नायी "नाई वर्ण निर्णय" नामक पुस्तक गढ़ के सब वेद पुराण स्मृति शास्त्र झूठे करता है सो कैसे हो सकता है ? क्या जो यह लिखै और करै वही सत्य है ? और सब झूठा है ? यह मेला आर्य्यसमाजी नायियों का है सब का नहीं है । कहने भर को ये लोग जाति मानते हैं पर किसी में नहीं हैं न इतके हैं न उतके हैं । हमारे पुरिखन की प्रणाली जाति अभिमान, धर्म, देवता, पितर, तीर्थ, श्राद्ध, रोजी, लोक परलोक सबके बाधक हैं इससे पंच लोग दबकर बात न करें अगर ज्यादा कहें और न मानें तो जाति बाहिर किये जायें इन्हों की उल्टी रीत के मारे हलचल मच गयी है । देवता पितर भी इनकी अनगंल बातों से घबड़ा गये होंगे। नाई कहीं नाई को ब्राह्मण बना सकता है ?

मन्नो चौधरी नाई हड़हा
महावीर नाई
बुद्धुलाल नाई
मन्नालाल नाई
कालीचरन नाई
भागीरथ नाई
मनबोध नाई
भागनरायन नाई

फ़क़ीरे चौधरी नाई
बनवारी नाई
घासी नाई
मंगली नाई
हनोमान नाई
भीखू नाई
सूरजवली नाई
रामटहल नाई

——:*:——

नाऊ भाइन की समाजी नाउन को

सूचना

राम २ पैलगी आशीश। पहुचे कृपा करें जगदीश॥

नाऊ भाइन से यह पूछना है कि सेन भगत क्यों बड़े माने गये? केवल भक्ति से, सेन भगत जनेऊ नहीं पहिरे और न ब्राह्मण बने सिर्फ भक्ति से, इससे नाऊ भाइयो तुम सब भी भक्त बनो गुरु करो कंठी पहिनो अपने कर्म धर्म को करो क्या जनेऊ से भक्ति होवे और आप लोग सभा तो करते हो लेकिन आत्मा के लिये भी कुछ बताते हो कि क्या काम करें? कि जिससे जीव का उद्धार हो और सबका काम चले।

ब्राह्मण बनने से हमारी उन्नति नहीं है, कुरीति सुधार से उन्नति है, वरण बदलने से हमारे पितर पिण्डा कैसे पावेंगे? क्या तुम श्राद्ध नहीं मानते हो? और तुम तो सब जाति को जनेऊ पहिनाते हो यह क्या उचित है? बल्कि धोका देना है। पाप लागने के डरसे ब्राह्मण बनने को कहते हो परन्तु पाप लागे नरक जाय का भय नहीं करते हो शान्ती से रहो उत्पात न करो उत्पात से नाश होता है।

आपके प्रेमाभिलाषी नाऊ भाई—

द० खेदीनाऊ	द० अनूप नाऊ
द० मथुरा नाऊ	द० राम अवतार नाऊ
द० बलदेव नाऊ	द० रामटहल नाऊ
द० रोरी नाऊ	द० माखू नाऊ
द० सुचित नाऊ	द० रामबक्सी नाऊ

ऋषिकुल प्रेस कानपुर

॥ श्रीहरिः ॥

विशेष सूचना

समस्त हिन्दु नापित (नाई) बन्धुवों से सविनय प्रार्थना है कि:—

(स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः)

अपने अपने काम में लगा हुआ मनुष्य अच्छी सिद्धि को प्राप्त होता है। इस महर्षि वचन के अनुसार जो कर्म हम लोगों के लिये यथार्थ वक्ता महर्षियों ने सनातन धर्मशास्त्रो में कहे हैं उनको श्रद्धा से स्वीकार करके:—

"येनास्य पितरोजाता येन जाताः पिता महाः।
तेन यायात्सतांमार्गं तेन गच्छन्नरिष्यति ॥"

इस मनु भगवान् की उक्ति से हम लोगों की लोक में प्रतिष्ठा और आदर होगा। उससे विरुद्ध नवीन समाजों के उपदेश मानकर ब्राह्मण बनने में अपनी जाति की नवीनता और नीचता होगी। क्योंकि हम सब उग्रा माता और मागध पिता से उत्पन्न हुये कुन्तलक के वंशधर हैं* और बाल डाढ़ी मूंछ बनाना नख काटना द्विज सेवा करना यह पुरानी अपनी वृत्ति है। अन्य कार्यों के करने से तथ ब्राह्मण बनने से अपने लोग इस लोक परलोक में अधम बन जायेंगे। और जाति भ्रष्ट तो हो ही जावेगी। जाति जन्म से गुण कर्म स्वभाव के आधीन सदा रही है वा रहेगी। इससे अखिल भारतवर्षीय नाई महा सम्मेलन के सञ्चालकों को भी हमारी प्रार्थना मानकर सनातनी पंडितों के साथ जाति निर्णय वेद शास्त्रानुकूल वेदशास्त्र निंद्य मार्ग छोड़ अपनी प्राचीन परम्परा स्वीकार करनी

---

* इसका प्रमाण इस ही ग्रन्थ के पृष्ठ ५७ में देखिये। ग्रन्थकर्ता

चाहिये । अत,—

वरं स्वधर्मो विगुणो न पारक्यः स्वनुष्ठितः
परं धर्मेण जीवन्हि सद्यः पतति जातितः॥

मनुस्मृति अ० १० । ९७

इस वाक्य से जाति से पतित न होंगे, तथा जगत में अपनी वृत्ति करते हुये अखण्ड कीर्ति और जाति की उन्नति के पात्र बनेंगे। इति

प्रार्थी—

मन्नो चौधरी नाई हडहा — फकीरे चौधरी नाई
महावीर नाई — बनवारी नाई
बुद्धूलाल नाई — घासी नाई
मङ्गली नाई — कालीचरन नाई
मन्नालाल नाई

रघुनन्दन प्रेस कानपुर

——*——

सब तैयार हो

परमेश्वर पनाह — देखो तो दमदार बेड़ा पार।

सनातनधर्मी नाउन को

आर्य समाजी नाउन के काम में चन्दा देना महापाप है।

हे सब ब्राह्मण ठाकुर खत्री बनिया और सब जाति के भाई और नाऊ भाइन से यह विनती है कि तुम सब जने समाजी रेवतीप्रसाद और देवीचरन नाऊ के धोखे मा न आवो देखो जिह हमरे सनातन धर्म के हकदार मालिक एक एक मनई और एक लरिका तक हैं यहां एक जना जो इनकी उलटी पलटी बातन के जवाब मा अड़िजाय तौ का सब जने हारि मानि के इन सब आर्य समाजी नाउन के पीछे हम सब

नाउन का सनातन धर्म छोड़े ही जैसे दिन है कोऊ धूर उड़ावे और एक मनही का धोखे की बातें बनाय के भरमाय देय तो का सब जने दिन का राति कहि ही? यह देखो एक ऋषि लाखन वर्ष तप करि के ब्राह्मण नहीं बनि सकत है सो एक दम बेड़ा पार करैं के बहाने सब जनेन का और हम सब नाऊ भाइन का आर्यसमाजी बनाय के रेवतीप्रसाद नाऊ एकदम बोरा चहत हैं तेहते एक २ पंडित सहस्त्रार्थ करौ जो न मानैं तौ सब जाति का एक २ मनई बाहरते पंडित बोलावो आखिर मा हम सब भाई तो ठीकै करिबे।

पहले वेद शास्त्र से समझावो जो न मानें तो स्वामी दयानंद ग्रंथ से समझावौ उसको भी न माने तो रेवतीप्रसाद के गुरु नये पं० भीमसेन शास्त्री सकल शास्त्र पारंगत के सिद्धान्त से उनको लाचार करो काहे ते अपना गुरु में हर एक मनुष्य को मान्य होता है जब किसी भांति न मानेंगे तो हम पृथक सूत्र से अच्छी भांति समझाय देवे। आप सब इनका इकट्ठा भर कर लेव। का इन समाजिन के कहे हम सब जने आर्यसमाजिन होइ जांय देवता पीतर पुरिखा नरक मा डारन। कानपुर मा अस करौ जेहमा याद न भूलै यहिका धोखा देब छूटिजाय सब जने तयार होइ जाव जांय न पावै पंडितों ने तो पत्र निकारि के उत्तर दीन हैं ऐसे सब का करे का उचित है।

निवेदकः—

लेद नाऊ	महावीर नाऊ
महावीर नाऊ	सुचित नाऊ

मर्चेन्ट प्रेस कानपुर।

——:*:——

नाऊ नियाव

अर्थात्

नाई महा सम्मेलन के सभापति से आवश्यकीय प्रश्न

सब नाऊ भाई मिल के सलाह पंचायत में यह नियाव करें कि जाति मेल में समाजी व्यौहार का कौन काम है। इसके बाद नाई मेला में सभापति से नीचे लिखे सवाल पूछो—

१—हमारी जाति के मालिक मुखिया, पंच, सरपंच हैं कि हमारे भाइन में जो भाई बाबू व डिपटी व वकील व राजा व संस्कृत पढ़ के अपना का पंडित व शर्मा व याज्ञिक कहै सो है ?

२—जो पंच सरपंच मालिक हैं तो उनकी राह मानै योग्य है कि तुम्हारी ?

३—आप समाजी हो या सनातन धर्मी हो ? जो समाजी हो तो हमारे मान्य नहीं।

४—वेद व शास्त्र सब स्मृति पुरान प्रमान मानते हो कि नहीं ?

५—मूर्ति-पूजा श्राद्ध तर्पण, तीर्थ, गया तुम मानते हो कि नहीं ?

६—जातिका सुधार कुरीति हटाये सो होई कि जाति बदलते ?

७—नाऊ जाति का कर्म बार बनाना है, कि यज्ञ का कर्म करना ?

८—जो यज्ञ कर्म है तो मुण्डन, जनेऊ आदि संस्कार की विधि से एक बार होता है कि रोज रोज ?

९—जो एक बार ही होता है तो आठवें दिन सब जाति के बार बनाने वाली कौन जाति रही ? जो ब्राह्मण मानो तो कैसे-कारदेते कि नीच सेवा ब्राह्मण का मने है, सेवा करिके ब्राह्मण कैसे रही ?

१०—जनेऊ मुहूर्त से होता है कि जब चाहे तब पहिरि लेय ?

११—जनेऊ हमेश पहिरा जात है कि कपड़े जूते की नाई जब चाहे तब पहिरले फिर उतार कर टांग देय ? जो टांग देय तो वह जनेऊ शुद्ध रही कि अशुद्ध होई जाई ? फिर चारों युग से रामराज्य से अनो कोऊ नहीं पहिरा हम काहे का नई रीति करें ? का तुम्हारे जैसे भी हमारे पुरिषा नहीं भये । जनौ पहिराये जाति का सुधार होई कि बेगार ? अबै तो थोड़ी दिक्कत व बदनामी है फिर हमार गुनी होई ।

जाति सुधार के लिये जाति की कुरीति जैसे शराब पीना, मांस खाना, आदि अनेक कुरीति दूर करो । जब जाति बदली तब जाति की कुरीत सुधारे से काम ही न रहा ।

देखो नारद जी पहिले जन्म में दासी पुत्र थे दूसरे जन्म मरिके ब्राह्मण भये रहैं, दासीपुत्र के शरीर में माता के मरे पर विजन बन मा जाय अखंड हरि भजन करिके देह छोड़ी तब मरिकै दूसरे कल्प मा ब्रह्मा के पुत्र भये । ऐसे हम सब जाति की कुरीति हटावैं भजन करें तब और जन्म मा ब्राह्मण होइबे, अबै बनतैं दोनों दीनसे गये ।

दोनो दीनन गये पांड़े । हलुआ भये न मांड़े ॥

देखो जो भाई बाबू, डिपटी वकील जमीदार, तालुकदार हैं कब हूं उनका लड़का नाती न पढ़ै या गरीब होइ जांय तो अपना जाति कर्म बाल बनावैं से जी हैं, तो अब पहिले तो ब्राह्मण होब कठिन है फिर ब्राह्मण ह्वै कै का भीख मंगि हैं ?

ब्राह्मण बनै पर जो हम से बार बनवावैं ओह का पाप लागे, काहे से ब्राह्मण से पैर छुआउब महापाप है । विप्र टहलुआ छेरिधन० इत्यादि मसल जाहिर है पहिले हम से कोई बार न बनवाई । दूसरे आधा बगुला आधा सुआ बनि के हम सब भाई यह लोक परलोक

धूनों से नष्ट होइबे । का अपनी जाति के सेन भक्त ब्राह्मण बनि के राजा के मान्य भे रहैं- कि जाति मा रहिके, हरि भक्ति करिके ? भक्त-माल मा तौ देख लिखा है कि राजा के पांय दाबैं जात रहैं, भजन बहुत-करत रहैं, एक दिन राम भजन के प्रेम मा राज, सेवा भूलिगए तब भगवान उनका रूप धरि के राजा की सेवा कीन जब या बात जाहिर भै तब माने जांय लाग। वह तो ब्राह्मण बनिबे नहीं भए। ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य इनके धर्म इतने कठिन हैं कि हरदम लगे रहै पर भगवान जल्दी नहीं मिलत और भगवान सेवा से बहुत जल्दी मिलत हैं। वहै सेवा धर्म हमारी जाति का मौरूसी धर्म है। जब यह भी हमारी मौरूसी पदवी दास तथा सेवा धर्म लेते हैं तब लोक परलोक माननीय होते हैं जैसे रामदास गोपालदास आदि २ अनेक नाम सब वर्णों में होते हैं। लोक में, गांधी महात्मा ने भी हमारे धर्म बडा बताया है और कोई रीति से बडाई व उन्नति का उपाय न समझ सब नेता मिलके सेवा समिति नाम व सेवा धर्म ही से अपनी उन्नति निश्चय करके सब जगह सेवा समिति बनाए। तुम सब जने हमारी जाती परम्परा की बनी दृढ़ सेवा समिति तोड के ब्राह्मण, शर्मा, याज्ञिक, पांडे आदि २ नकली खिताब दै दै के हमारी जाति सेवा समिति का नाश कर हम सबको माटी मा मिलावा चहत हौ। देखो गीता में लिखा है कि आपन धर्म खराबौ होय सो न छोडे, दूसरे वर्ण का उत्तम धर्म करे से नर्क होई । नौकरी चाकरी वकालत डाक्टरी अबै को रोके है जब लग चलै तब लग खूब करे जाव जब न चलैं तौ अपनी जाति तथा धर्म धार बनाउब तो सदा ही ते चला आवा है यहमा कौन चोरी है ॥ हरी (ईश्वर) से मिलेका तो लिखा है-भक्ति प्रियो माधव' । जाति पांति पूछै ना कोय। हरि का भजै सो हरि का होय ॥ हमरे तो दूना हाथ में लड्डुआ हैं।

तुम यह निकारयो कि नाई सम्मेलन आज्ञा देता है कि सब नाई भाई जनऊ करें, वेद पढ़ें तौ का नाई जाति के राय पंच सरपंच

की राय न मानी जाय ? सम्मेलनही ताजीरात कानून भई ! यह तो हमारी जाती की कचहरी पंचायत हैं और हाकिम पंच सरपंच हैं सो तुम सब ही नष्ट करि डारौ । गान्धी महात्मौ तो कहत हैं कि पंचायत कचहरी पंच हाकिम बना कर अपने सब फैसला करलो। तुम तो बनी बनाई हमारी जाति की पंचायत कचहरी, पंच सरपंच हाकिम उठाए देत हो । गांधी महात्मा यह तो नहीं कहत कि ब्राह्मण बनौ यह तो कहत हैं कि सब प्रेम तथा मेल बढ़ाओ तो बताओ पूज्य बने प्रेम मेल बढ़ी कि अपनी हिन्दुजाति की सब जातियों से जाति वैर होई ।

गोत्र मिलते बताए तहां गोत्र और बात है । गोत्र में जैसे भूले बिसरे कश्यप गोत्र । कश्यप ऋषि से बहुत जाति पैदा भई तो का सब ब्राह्मण होंगी ? वहां जाति कर्म व माता प्रधान ली गई है जैसे आदिति के पुत्र देवता भए और दिति के पुत्र दैत्य भए कोई के और और कोई के और इत्यादि बाप सब का एक ही है, बेटा अपनी अपनी माता के नाम से भए।

अबहूं राजा, तालुकदार, ज़मीदार की दूसरी जाति की स्त्री का पुत्र मौरुसी नाम जाति का मालिक नहीं होता यह सुधार के नाम ते बिगार करने को सभा करते हो ? अपने सब भाइयों के गले में छुरी फेर रोटी लोप देते हो। ब्राह्मण बने हम से को बार बनवाई औ हमार को पांवलागन करी । यह ते हम पक्के सनातन धर्मी जाति अभिमानी हैं हम भूलि कैं न ब्राह्मण होइवैं जाति कुरीति सुधार अपने अपने पंच सब जगह करि हैं ।

और भी कठिनाई सब नाऊ जाति भाई देखो जो बाल बनाना पेशा है जाति का कर्म नहीं तो सब जाति करने लगेंगी जाति कर्म के मारे कोई नहीं करता है। जब यह तुम वेद से बतावत हो कि नाऊ जाति नहीं है नाऊ पेशा है हम ब्राह्मण हैं सब जाति वालों को बाल

बनाकर ब्राह्मण बनने की सड़क खुल गई जब चहै कोऊ बाल बनावै ब्राह्मण बनै तब तो हमारी खूबै उन्नति हुई। आधी छोड़ एक को धावै। ऐसा बूड़ै थाह न पावै। हमारी रोजी और जाति दोनों गई न तो ब्राह्मण भए न नाऊ रहे!!!

और जो कहत हौ कि नाऊ यज्ञ में अध्वर्यु आदि ब्राह्मण के कर्म कराते रहे हैं सो भी ठीक नहीं है देखो यज्ञ व संस्कार में अध्वर्यु और उपाध्याय होने वाली एक ब्राह्मण जाति ही है जो अब हू अधुरिज (अध्वर्यु) और उपध्या (उपाध्याय) के नाम से प्रसिद्ध है मुसलमान बादशाह उन का नाऊ नहीं बनाया हमहीं का नाऊ बनायदीन भूलत हौ ऐसा न कहौ।

अबै हम ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और सब जाति के आदरनीय हैं ब्याह आदि छोटे बड़े सब काम में आगे कौन जात हैं जो कहू जनेऊ पहिरा तो हमार काम यह भी छूट जाई और ब्राह्मण काम तो मिलना कठिन है। अबै हम ब्राह्मण के साथ ही गिने जात हैं। जहां गंगा तहां झाऊ। जहां ब्राह्मण तहां नाऊ। जो हम ब्राह्मण भए तो नाऊ को बनी ? जाति जन्म होते ही बनि जात है जैसे ब्राह्मण का लरिका ब्राह्मण चह जनेउ न पहिरे, यही नाऊ का लरिका नाऊ चहै बार न बनावै। जाति रोज नहीं बनति।

देखो पहले नाऊ दिल्ली मा सभा करिके ठाकुर बने सब का सिखवै लाग कि सब नाऊ अपना का ठाकुर कहौ तुम क्षत्री हौ तिहकी किताब है काम परे सब भाइन का दिखाई जाई। आज कहू। ई समाजी बेद मा बार बनाउब पावगे सब से कहै लाग ब्राह्मण बनौ, जनेऊ पहिरौ। कालिह कुछ और निबरि हैं। यह तो कौनौ ठीक ठिकान नहीं हम सनातन रीति आपन जाति सेवा धर्म न छोड़िबै चहै कोई राजा वकील और बने पंडित हजार कहैं। समाजिन का कौन ठीक कबहू कुछ कबहू कुछ। जो जाति गुन कर्म से मानौ यह

तौ ठीक नहीं जो थोड़ी देर का मानिलें तौ बताओ हमारे में कौन ब्राह्मण के गुन और कर्म आय गए? एक जना कुछ पढ़िलेय तो वहै ब्राह्मण बनै जब हम पढ़िजाव तहूं न ब्राह्मण बनिबे काहे ते बनावटी काम झूठा गिना जात है, एक जनै से कहूं जाति पलट सकत है? हम उन भाई से पूंछत हैं कि जो अपना का याज्ञिक लिखत हैं कि कौन २ यज्ञ हैं? और तुम कितनी यज्ञ की डारी जो याज्ञिक है गए? शर्मा जू ते कहत इन कि ब्राह्मण के सब कर्म तुम पढ़ि गये और फर लग्यो जो करैं भी लायो तहूं भ्रष्ट भयो काहे से कि निज जाति का कर्म छोड़ दिया यह ते जाति गुण कर्म ते नहीं जन्म से ही ठीक है।

व्यास का जो दासी पुत्र कहत हो। तहौं तौ उपरचर वसु की कन्या मच्छोदरी लिखी है धीवर ने पालन किया रहे तहूं घोर तप करि के व्यास भए। जो सबी ठीक मनि हौ तो विदुर दासी पुत्र है कै गद्दी काहे न पाई और धृतराष्ट्र का वेद काहे न सुनायनि। महाभारत के पाद धृतराष्ट्र के १०० लड़का रानी के रहे सो मरे एक दासीपुत्र युयुत्सु बचा सो राजा काहे न भया? यह ते तुम्हार बनावटी मतलबी भड़काने की बातें सब झूठ हैं। तुम अपना मतलब निकारत हौ दूसरे भाइन का गर काटत हौ तुम्हार लड़िका मूरख होइ हैं का ओऊ डिपटी वकील होइ हैं पीछे का करि हैं तेहिते सोच विचार कै जाति उन्नति की रीति निकारो यह गड़बड़ी न करौ।

जो भाई ब्राह्मण बनै और हमार हुक्का पियें तौ उनका धर्म गा और उनका हुक्का हम पियन तौ हमार धर्म जाई यहि ते पंचन की राह ते समाजी भाइन का हुक्का पानी अलग रही।

द० बुधई नाऊ वल्द भगवानदीन
द० रामटहल वल्द माधो

द० हनोमान वल्द मिसिरी
द० भीखू नाऊ वल्द मोनेराम
द० महावीर नाई

—Printer-L Ram Narayan Merchant Press Cawnpore 25 12 22

——:*:——

* सत्यमेव जयते नानृतम् *

नाउवों की पराजय प्रत्यक्ष हो गई

हमारे और नाउवों के बीच एक वर्ष से हस्तलिखित व छपेहुए पत्रों द्वारा वादाविवाद जो हुआ है यह सब मध्यस्थों के समक्ष रखकर विचार किया जावे तो इनकी सर्वथा पराजय सिद्ध है। जब नाऊ कुयाख्यों से ललकार रहे हैं कि हम वेदाधार पर ब्राह्मण हैं और अन्य और शास्त्राधार हैं और बड़े बड़ों से हम जीत चुके हैं जो चाहे हम से शास्त्रार्थ करलें तब मुरदा बन कर कौन बैठे और हम क्यों न शास्त्रार्थ करें, अब हम पर वे और वो एक उनके पक्षी क्यों रोते हैं कि आत्रेय जी पीछे पड़े हैं। सुनों यह पीछे पड़ना नहीं है क्या उनके साथ कोई अत्याचार किया जा रहा है? हम उनके जलने तक चुप रहे अब उन के प्रमाणों की परीक्षा होनी की जा रही है जिस में खोटे को भले ही कोई खरा साबित करदे किन्तु खरे को कोई भी खोटा सिद्ध नहीं कर सका है, अतः उनके सुबूत सच्चे हैं तो उन्हें झूठे कौन कर सका है? कोई

नहीं। तब वे अपनी तारीख ११-१ की प्रतिज्ञा और हमारे ता०१३-१४-१-२३ के पत्रानुसार क्यों नहीं चलकर नियम ते किये। अतः अब फिर एक सप्ताह का समय देते हैं कि वे बाबू गणेशशंकर जी आदि के पास चल और नियमों की रजिस्ट्री करवा कर शास्त्रार्थ करलें अन्यथा उनकी पराजय पक्की हो जावेगी।

शास्त्रार्थ के नियम

(नाऊ जाति का ब्राह्मणत्व सिद्ध होना या न होना यह शास्त्रार्थ का विषय है)

नोटः— इस से आगे १७ नियम हैं उन्हें स्थानाभाव से हमने छोड़ दिये हैं। (ग्रन्थकर्ता)

विशेष सूचनायें

१ से १५ तक, पन्द्रह सूचनायें हैं इन्हें भी पुस्तक वृद्धि भयात् हम ने छोड़ दी हैं। (ग्रन्थकर्त्ता)

नोटः— किसी खुशामदी रिश्वतखोर से नाऊ जीत गये होंगे किसी सच्चे पण्डित से नहीं।

पं० चन्द्रिकाप्रसाद आत्रेय तर्काचार्य वानप्रस्थी

पुरानी सब्ज़ी मंडी कानपुर

रघुनन्दन प्रेस कानपुर ता० २०-१-२३

——::०::——

❀ घोर अन्धेर ❀

नोटः—इस नाम की एक छोटी सी पुस्तिका छपवायी जाकर कानपुर में ११ मनुष्यों के हस्ताक्षरों युक्त बांटी गयी थी उस के मुख्य मुख्य वाक्यः—

अन्धेर घोर होरहा लखो लख आवे दिल में ताके से।
बन शूद्र लोग ब्राह्मण, बेटी द्विज की लें देंगे डांके से॥

मदु मशुमारी में द्विज लिखवा सबके हैं पूज्य धड़ाके से।
अपमान करेंगे उठो मित्र! कह माधवराम पताके से॥'

१८ दिसबर १९२२- मर्चेन्ट प्रेस कानपुर।

अखिल भारतवर्षीय धर्म तथा जाति प्रिय हिन्दु मात्रा से सविनय प्रार्थना है कि इस कानपुर नगर में नाई महा सम्मेलन होने वाला है, इस मेले में एक आर्य्य समाजी की बनाई हुई "न्यायी वर्ण निर्णय" नामक पुस्तक सुनाकर नाई लोगों को इतर सब जातियों से तथा वैश्य क्षत्री और ब्राह्मणों से उत्तम बताया जायगा!!!

जिस प्रकार ... दशा होगी।

अतएव आप लोग उठिये और इस बात का घोर विरोध कीजिये कि नाई नाई ही हैं नाई लोग ब्राह्मण नहीं हो सक्ते तथा "शर्म्मा" और "याज्ञिक" पद ब्राह्मण के ही लिये मौरूसी हैं नाई इन पदों के अधिकारी कदापि नहीं हो सक्ते।

प्रिय सनातनधर्मी प्रेमी नाई भाइयो! आप को तरक्की करने मे कोई रोकता किन्तु इस प्रकार एक आर्य्य समाजी के मतपर चलने से लोक पर लोक दोनों नष्ट हो जायेंगे।

देखिये मन्ना नाई बुद्धलाल नाई पल्टू फकीरे नाई तथा बनवारी नाई ने प्रथम पत्र छपवाकर नाई महा सम्मेलन का विरोध किया है अतएव इन्हें धन्यवाद है।

प्रार्थयिता—

पं० रामचन्द्र बाज० का० त्रि० — पं० माधवराम अ० व्यास
बबूसिंह क्षत्री — गोपालदास क्षत्री
लाला कल्लूमल अग्रवाल — ला० बालकृष्ण महेश्वरी
ला रामलाल ओमर — लाला लालचन्द्र दोसर
दुर्गा मिस्त्री — महावीर नाई
महंत कदार — आदि आदि

नोटः—इस विज्ञापन में ११ जातियों के एक एक मुखियाओं के हस्ताक्षर हैं। (ग्रन्थकर्त्ता)

जब "घोर अन्धेर" नामक ट्रैक्ट ११ मनुष्यों के हस्ताक्षरों सहित छपकर कानपुर में बटा तब नाइयों की तरफ से नीचे लिखा सारांश युक्त नोटिस निकलाः—

ओं नमः शिवाय

अन्धेर प्रकाशक

(सारांश मात्र युक्त मुख्य वाक्यावलि)

कुछ नीच प्रकृति के लोगों ने नायी जाति के उन्नति सम्बन्धी कार्य्य में बाधा डालना चाहा है, कानपुर के एक ही घर से सम्बन्ध रखने वाले कुछ पुरुषों ने मिलकर एक "घोर अन्धेर" नामक ट्रैक्ट छपवा कर बंटवाया है जिस में वे सिर पैर की ऊट पटांग बातें लिख कर जनता को धोखे में डालने का प्रयत्न किया गया है। जहां घोर अन्धेर पहुंचेगा अन्धकार ही फैलावेगा। इसलिये हम इस "अन्धेर प्रकाशक" द्वारा "घोर अन्धेर" के फैलाये हुये अन्धकार को दूर करना चाहते हैं और आशा करते हैं कि सर्व सज्जन हमें इसमें सहायता देंगे।

नायी जाति ने सदा अपने यजमानों की सेवा बड़े प्रेम से की है और कर रही है आदि आदि ....ऐसी यजमानों की तन मन धन की विश्वस्त रक्षक नायी जाति की उन्नति में बाधा डालना सर्वथा अनुचित और महापाप है। सज्जनो! ....प्रचार करते हैं।

हमें मालुम हुआ है कि कानपुर के कुछ लोग जगह जगह फिर कर लोगों से इस बात के हस्ताक्षर कराते फिरते हैं कि नायी

सम्मेलन का विरोध किया जाय ... नहीं किया ! इन लोगों का नाइयों ने क्या बिगाड़ा है ? फर्ज कीजिये कि नायी शूद्र हैं और वे कभी ब्राह्मण नहीं हो सके, कामना कर।

नायी लोग कई जगह मशाल दिखला कर प्रकाश करते हैं हम "अंधेर प्रकाशक" नाम मशाल दिखाकर प्रकाश करते हैं और आशा करते हैं कि हमारे यजमान इस प्रकार से लाभ उठायेंगे।

निवेदक—
देवीचरण याज्ञिक मन्त्री
नायी ब्राह्मण सभा कानपुर

कानपुर
२०-१२-२२ ई०

Cawnpur Printing Press

—— * ——

नाइयों के "अंधेर प्रकाशक" नामक विज्ञापन का उत्तर

❋ वैश्य वर्ण (शाह जाति) पत्र ❋

(सारांश मात्र)

हम वैश्य वर्ण को सब जाति
हुआ होगा।

अब उस वेद मंत्र में ब्राह्मण लड़के का पिता पहिले मंत्र पढ़कर बाल बनावे पीछे नाई को अस्तुरा देदेवे यह बाहर सब बाल मुण्डन करे इत्यादि इस को जबर्दस्ती नाई हो ब्राह्मण है कहते क्या देते है ? क्योंकि सब नाई वेद क्या यथार्थ भाषा भी पढ़ना नहीं जानते हैं। ध्यान दीजिये ! हम कन्हूमल अग्रवाल का कहना कि देवीदीन नाई ऐसा सज्जन रहा कि कभी हमारे सामने कुर्सी पर नहीं य

कहता था कि हम तो आपके नाई हैं सो समय के प्रभाव सेवन के सुपूत*
हमारे सबके पूज्य बनते हैं, यह कौन नहीं जानता है कि नाई जाति
ऐसी विश्वास के लायक है फिर उसका अधिकार कौन छीनता है,
पर आज यह क़ानून बनाया कि "नाई जाति वेदशास्त्र से ब्राह्मण है
और समझी जावे नाई जाति वेद शास्त्र की रीति से जनेऊ करे,
वेद पढ़े आदि आदि"।

इसमें ऐसा कौन जिस का ध्यान इधर नहीं खिचेगा इस से
अपना अपना पत्र ज़रूर ही निकाल कर अनुरोध करना चाहिये
कि जो जो जाति हमारी सब जाति की सेवक है, वेद शास्त्र से
संस्कार की अधिकारी नहीं। केवल सेवा ही से दोनों लोक बनाने
वाली है। आदि आदि आदि।

लाο कल्लुमल अग्रवाल लाο बालकृष्ण महेश्वरी
लाο रामलाल ओमर लाο लालचन्द दोसर

आदि आदि

नोट—एक २ प्रकार के वैश्य समुदाय की तरफ से एक एक मुखिया
के हस्ताक्षर हैं। (ग्रन्थकर्ता)

मर्चेन्ट प्रेस रेलवे बाज़ार कानपुर।

—:※:—

डेढ़ चावल की खिचड़ी

३१-१२-२२ ईस्वी को जो उत्तर हमारी ओर से दिया गया
था उसमें हमने प्रकट किया था कि श्री गुरुसरनलाल जी प्रभृति
स्वर्णकार क्षत्री खत्री अग्रवाल आदि (जिन्होंने हमारे विरुद्ध नोटिस
प्रकाशित किये) अपनी ओर से किसी एक विद्वान् को हमसे शास्त्रार्थ

* कदाचित इन का नाम देवीचरण होगा जो नायी सभा के मंत्री व
अपने नाम के अन्त में "पालिक" लगाते हैं। ग्र० क०

करने के लिये अपने हस्ताक्षरी पत्र द्वारा सूचना दें। तथा प० चन्द्रशेखर जी शास्त्री आदि में से जो सबमें अधिक विद्वान् हों उसको समक्ष किया जावे। परन्तु ऐसा न करके न्यारे न्यारे नोटिस निकाल कर अपनी डेढ़ चावल की खिचडी पकाने की उक्ति को चरितार्थ किया है ऐसी दशा में • • •• •• •
:::· सिद्धान्त है।

हमारे घोषणा पत्र के उत्तर में "भारत धर्म महामण्डल काशी" (जो सनातन धर्म की सबसे बडी सभा है) के उपमंत्री श्री गोविन्द शास्त्री ने अपने पत्र में लिखा है कि —

"ब्राह्मण होकर भी वे (नाई) अपना क्षौर कर्म अबाधित रखना चाहते हैं यह सन्तोष की बात है—(१) रही बात ··· ···
···ब्राह्मण तो नहीं।

देवीचरण याज्ञिक
मन्त्री नाई ब्राह्मण सभा कानपुर

रमा प्रेस कानपुर

समीक्षा —(१) पाठक! यह नोटिस आंय शांय बांय से भरा एक विस्तृत रूप में छपकर समाजी नाइयों की ओर से कानपुर नगर में बटा था अतएव उसके मुख्य अंश के मुख्य वाक्यों को ही यहां उद्धृत करके दिखलाया जाता है कि नाइयों का कहना कहां तक ठीक है? क्योंकि प० रामसहाय जी मिश्र का "अन्तिम घोषणा" शीर्षक विज्ञापन तथा उसमें हमारा फुट नोट जो इस ही ग्रन्थ में इस ही विज्ञापन के आगे दिया गया है नाइयों के कथन को असत्य सिद्ध करने के लिये पर्याप्त है आशा है कि पाठक उसे देखलेंगे पुनः इसके अतिरिक्त भी भारतधर्म महामण्डल काशी की 'निगमागम चन्द्रिका' भाग २७ संख्या १ के पृष्ठ २५ में नाइयों की पुस्तक "न्यायी वर्ण निर्णय" जिसके कि आधार पर नाई जाति ब्राह्मण

बनती है उसकी समालोचना श्री भारत धर्म महामण्डल काशी ने जो की है उसके मुख्य २ वाक्य ये हैं:—

"नाई शब्द का रूपान्तर "न्यायी" कर लेखक ने नापितों को ब्राह्मण सिद्ध करने का असफल यत्न किया है, आज कल जो उठता है, क्षत्रिय ब्राह्मण बनना चाहता है। भानुमती के पिटारे से कुछ यहां वहां के वचन भी अपने मत की पुष्टि के लिये संग्रह कर लेता है और लोगों को ठगता है। इस कलियुग में कुछ न श्रेष्ठ बनने को लोगों में प्रवृति देखकर चकित होना पड़ता है। "सच्छूद्रौ गोप नापितौ" यह जन साधारण की धारणा कुछ प्रपंचियों की कपि-चेष्टाओं से बदल नहीं सकेगी। फिर भी हठवादी यदि ऐसे साहित्य का निर्माण और इन मतों का प्रचार करते ही रहे तो विवेकवान व्यक्ति उनका कभी गौरव नहीं करेगा। उलटे ऐसे प्रमादियों को पागल ही कहेगा।"

प्रश्नः—नाइयों से अब पूछते हैं कि आपने सम्पूर्ण धार्मिक सभाओं व श्री धर्म महामण्डल काशी आदि २ को शास्त्रार्थ का नोटिस किस विरते पर दिया था? और अपने " नायी ब्राह्मण " मासिक पत्र में विजय पताका कैसे छाप दी? कहिये जन साधारण की धारणा जब आप को " सच्छूद्र " मानती है तो फिर आप से भा० ध० महा० मंडल काशी क्या शास्त्रार्थ करता? नाई लोगों की ब्राह्मण बनने की चेष्टा को जब विवेकवान व्यक्ति पागलपन का काम बतलावेंगे तब क्या शास्त्रार्थ किया जाय? जब आप की पुस्तक में कुछ तत्व की बात ही नहीं है तो उसका गौरव क्या? और जिसका गौरव नहीं उसके साथ क्या शास्त्रार्थ कोई करे? यदि कोई पागल किसी भले बड़े आदमी को गाली दे या उसके मारदे तो क्या वह भला आदमी उसके साथ लड़ेगा? कदापि नहीं बल्कि वह उसकी अनीति को क्षमा कर देगा और उसके अकर्तव्य को हँसी में टाल देगा।

इसही तरह "न्यायी वर्ण निर्णय" के पृष्ठ में ५२ के पश्चात् "अ" पृष्ठ में "नया अनुसन्धान" शीर्षक में रेवतीप्रसाद जी ने लिखा है —

"नाई रामजी के भाई ब्राह्मण रामजी के बेटे" इसके अनुसार नाई जाति, ब्राह्मण जाति की चर्चा हुयी अतएव जब रेवतीप्रसादजी मनु याज्ञवल्क्य, व्यास, पाराशर और औशनादि स्मृतिकार जिन्होंने नाई जाति को "शूद्रों" में लिखी है उन का कुछ नहीं कर सके तो यह बेतुकी घड़ंत घड़ कर नाइयों को ब्राह्मणों का बच्चा बनाया और अपने द्वेष भाव को ठंडा करलिया, पर इसको भारत धर्म महामण्डल, काशी, मौज मन्दिर जैपुर तथा अन्य विद्वानों ने पागलपन कासा काम समझ कर कुछ ध्यान नहीं दिया। यह किम्वदन्ति जो नाइयों ने लिखी है आज तक न कहीं हमने सुनी, न कहीं लिखी देखी अस्तु ! यदि रेवतीप्रसाद जी कहें कि यह तो दिल्लगी मजाक है तो यह ठीक नहीं क्योंकि शादी विवाहों की बरातों में जब हम जाया करते हैं तब भांड लोग अकसर कहा करते हैं कि.—

(१) "नाई भंगी के भाई उसने झूठ खायी और उसने झूठ उठाई" इस ही तरह महफिलों में रंडी के नाच के समय जब नाई मशाल दिखाता है तब महफिल में भांड लोग नकल करते हैं कि "नाई रंडीका भाई उसने रागनी गायी, और उसने मशाल दिखायी"

परन्तु इस तरह की नकलों व भांडों की तुकी व बे तुकी बिना सिर पैर की बातों की संग्रह करने से असली सिद्धान्त की बात से ग्रन्थकर्ता को विचलित हो जाना पड़ता है और ऐसे कृत्यको हम अच्छा भी नहीं समझते क्योंकि किसी को कटु वाक्य कहना कहलवाना सत्पुरुषों का काम नहीं है अतएव रेवतीप्रसाद जी को ऐसी किम्वदन्ति की अपेक्षा कोई ऐसा शास्त्रीय प्रमाण लिखना

चाहिये था जिससे नाई जाति Vneversally सर्व सम्मति से ब्राह्मण मानली जाती और "न्यायी वर्ण निर्णय" नामक पुस्तक का भी विशेष गौरव चढ़ता क्योंकि नक्कालों की नकलों का शास्त्रीय विवाद में लिखना ही व्यर्थ है कारण यह कि नकलें प्रायः असत्य हुआ करती हैं कदाचित रेवती प्रसाद जी इन पर विश्वास करते होंगे पर हम तो इन्हें स्वप्न में भी सत्य नहीं मानते हैं अतएव ऐसा संग्रह ही उचित नहीं है। क्योंकि ऐसी दशा में शास्त्रीय विषयों में सुनी सुनायी किम्वदन्तियें व दिल्लगी मज़ाक की बातों को लिखना व उन पर टीका टिप्पणी करना भी हम अच्छा नहीं समझते हैं आशा है कि इस के लिये हम क्षन्तव्य होंगे।

प्यारे नाई भाइयो! जब आपकी पुस्तक की व ब्राह्मण बनने की, ऐसी समालोचना काशी के विद्वानों ने की है तब अब सन्देह क्या रहा? और ऐसी दशा में जो आपने अपने "नायी ब्राह्मण मासिक पत्र" के पृष्ठ २५ में ऐसा छापा है किः—

१—श्री भारतधर्म महा मण्डल काशी को (जो सनातन धर्म की सब से बड़ी महासभा है) रजिस्ट्री द्वारा 'न्यायी वर्ण निर्णय' और 'शास्त्रार्थ का चेलेञ्ज' भेजा गया परन्तु कुछ उत्तर न दिया!

पुनः—

२—श्री धर्म व्यवस्था महामण्डल (मौज मन्दिर) जयपुर को भी दोनों वस्तुएं (पुस्तक और शास्त्रार्थका चेलेञ्ज) रजिस्ट्री द्वारा भेजी गई—उत्तर नदारद।

कहिये यह आपकी डींग कहां तक उपयुक्त है? क्योंकि जब काशी में व मौज मन्दिर जयपुर में आज सैकड़ों विद्वान् ऐसे हैं जो आपके रेवतीप्रसाद को बीस वर्ष तक पढ़ावें तब कहिये भानमति के पिटारे की गप्प सप्प, अट्ट सट्ट, गट पट, लट पट बातें इकट्ठी करके पुस्तक रचने वालों से जयपुर व काशी के महामहो-

पाध्याय, विद्यावाचस्पति, तर्क शिरोमणि, काव्यतीर्थ, शास्त्रीगण, व्याकरणाचार्य्य, मीमांसक, शिरोमणि, विद्याभूषण, नव्यायिक, संस्कृत प्रोफेसर, धर्मशास्त्रोपाध्याय, ज्योतिषाचार्य्य, वैदिक कर्मकाण्ड विशारद, धर्मशास्त्राचार्य्य आदि २ उपाधिधारी वेदमूर्ति विद्वान्गण क्या शास्त्रार्थ करते और क्या आपको उत्तर देते ?

जिस प्रकार से हाईकोर्ट में कोई अपील पेश करता है यदि न्यायाधीश जज उसमें कुछ भी Reasonable ground तत्व की बात देखते हैं तो उसकी पेशी डालकर उस पर बहस सुनते हैं अन्यथा अपील को पेश होते ही खारिज कर देते हैं इस ही तरह जब आप की अपील रूपी पुस्तक व शास्त्रार्थ का चेलेञ्ज जब सनातन धर्म के हाई कोर्ट भारत धर्म महा मण्डल काशी में पहुंचा तब उन्होने आपकी पुस्तक को भानमति का पिटारा समझकर व Groundless अप्रमाणिक पाकर अपनी समालोचना द्वारा फैसला देते हुये आपकी अपील को खारिज कर दिया।

इस ही तरह धर्म व्यवस्था मण्डल (मौज मन्दिर) जयपुर ने भी आपकी बातों को तत्व रहित प्रमाण शून्य पाकर उत्तर नहीं दिया तो आपने ऐसा प्रतिफल कैसे निकाल लिया कि भारत धर्म महामण्डल काशी व मौज मन्दिर जयपुर ने नाइयों के ब्राह्मणत्व को नेम नेम स्वीकार कर लिया और हमारी विजय होगयी ?

खैर! अब आप से हम यह पूछते हैं कि आपके शास्त्रार्थ के चेलेञ्ज के उत्तर में जब हमने आपको चेलेञ्ज का उत्तर चेलेञ्ज श्री वेङ्कटेश्वरादि समाचार पत्रों में छपवा दिया तब आप लोग मौन क्यों हो बैठे ? हमसे ही शास्त्रार्थ करते अंत आपकी इस चुप को क्या हम आपकी पराजय समझें ?

रेवतीप्रसाद के पुस्तक रचकर प्रकाशित करने से जो नाई लोग रेवतीप्रसाद जी को एक अद्वितीय विद्वान् समझते हो उनका

ध्यान हम अलीगढ़ अदालत के फैसिले की ओर आकर्षित करते हैं जहां नाई पं० रेवतीप्रसाद जी, शास्त्रीय प्रमाणों द्वारा नाइयों का ब्राह्मणत्व प्रतिपादन करने व नाइयों को जनेऊ का अधिकार सिद्ध करने के लिये मुद्दई देवी नाई के मुकदमे में साक्षी देने को अदालत में पेश हुये थे जिनकी साक्षी को अदालत सुनकर अपने फैसले में लिखती है कि:—

"मगर यह शाहदत निहायत नाकिस मुश्तगीस के लिये साबित हुयी और बजाय नफे के उसने और नुकसान मुद्दई को पहुंचाया।

आशा है कि नाई लोग अदालत के इन वाक्यों पर ध्यान देंगे।

ऐसी दशा में श्री भारत धर्म महामण्डल काशी व मौज मन्दिर जयपुर के विद्वान् नाइयों से क्या शास्त्रार्थ करते।

—:*:—

अन्तिम घोषणा।

इस फोड़ फाड़ से तुम्हारा कुछ काम नहीं निकल सक्ता। समाजी नाऊन को विद्वज्जन मंडली की तरफ से अन्तिम घोषणा दी जाती है कि समाजी नाउवों को शास्त्रार्थ करने, कई पत्र दिये गये परन्तु हमारे विद्वज्जनों के साम्हने समाजी नाउवों को आने में शर्म मालुम होती है। लेकिन मैं फिर भी सूचना देता हूं दावे के साथ, अगर तुमको सामना करना हो तो लज्जा को छोड़कर साम्हने चले आवो कोई तरह का भय न मानो हम लोग तन मन धन इत्यादि से तय्यार हैं, खबरदार भगना मत, हमारी विद्वज्जन मंडली में जो छोटे से छोटे विद्वान समझिये उनसे निपट लीजिये नहीं तो पछतावोगे। और देखिये निगमागम चन्द्रिका भाग २७ संख्या ८ में प्रकाशित हुआ है कि अवध प्रान्तीय सनातन धर्म महामण्डल का वार्षिक अधिवेशन प्रारम्भ हुआ था उसके प्रथम दिन श्रीयुत रेवतीप्रसाद

नामक किसी सज्जन के हस्ताक्षरों से युक्त छपा हुआ (जो मेरठ में बांटा गया है) एक हस्त पत्रक, हमारे यहां उपस्थित हुए एक माननीय मित्र को मिला। उसने श्री महामण्डल के सहकारी अध्यक्ष श्री प० गोविन्द शास्त्री जी के नाम से एक विचित्र व्यवस्था छापी है* श्री शास्त्री जी से पूछने पर विदित हुआ कि व्यक्तिगत या महामण्डल की ओर से ऐसी कोई व्यवस्था नहीं दी गयी है जैसी कि रेवतीप्रसाद अपने हस्ताक्षर से लिखते हैं।

महामण्डल ने नाइयों को "शूद्र" माना है और अपना यह मत न्यायी वर्ण निर्णय की आलोचना करते हुये इस वर्ष की जनवरी की सख्या में प्रकाशित भी कर दिया है। हां यह सम्भव है कि शास्त्री जी के उपरोधिक लिखे हुये किसी पत्र से अपने मत लब का अश उठा लिया हो नाइयों को न शास्त्री जी ब्राह्मण मानते हैं न महामण्डल ही। रेवतीप्रसाद ने इस कार्य्य को कर सर्वसाधारण को धोका दिया है। अन्य किसी जाति के मनुष्य के द्वारा कोई अपराध होने से उसे "हज्जाम" कह देते हैं, हम रेवतीप्रसाद को

---

* यह सब ढोंग व लोगों को भ्रम जाल में फँसाने की हिकमत है, "डूबते हुये को तिनके का सहारा" के अनुसार ये लोग प्राय ऐसी ही चाल चला करते हैं—हिन्दु धर्म वर्ण व्यवस्था मण्डल फुलेरा के ग्रन्थों के लेखों को काट छांट कर अपने पत्र में छाप दिया जो इस ही पुस्तक के पृष्ठ ६४ से ६६ तक में लिखा जा चुका है—पाराशर स्मृति के श्लोक को बदल कर नाइयों ने छाप दिया (देखो इस ही पुस्तक के पृष्ठ ५५ में) इस ही तरह "श्री भारत धर्म महा मण्डल काशी" को सनातन धर्म की सबसे बडी सस्था समझ कर जो चाहा सो छाप दिया इस सब का खण्डन श्री भा० ध० म० म० काशी की मुख्य पत्रिका निगमागम चन्द्रिका भाग २० सख्या पहिली के पृष्ठ २५ से होता है शेष देखो "ईंट चावल की खिचडी" नामक विज्ञापन में की ढोंग तथा तिसकी समालोचना को देखियेगा।

क्या कहें ? हमने ज्यों का त्यों यहां लिख दिया है ज्यादा देखना हो तो उस अंक को मंगाकर देखिये।

नोटः—आप ८-१-२३ तक जन्डेलगंज ब्रह्मचारी की पाठशाला में आकर तै करलेवें अन्यथा समाजी नाइयों की हार समझी जायगी।

ऋषिकुल प्रेस कानपुर } प्रकाशक — पं० रामसहाय जी मिश्र

——:o:——

श्री नमः शिवाय

नये तीसमारखां और शहरी वानप्रस्थी

नायी जात्योन्नति विरोध रूप नाटक पटाक्षेप (ड्रापसीन) करते हुये एक नये तीसमारखां पं० रामसहाय जी मिश्र 'अन्तिम घोषणा' देते हैं कि उनकी मण्डली के छोटे से छोटे विद्वान से निवट लिया जावे आदि आदि।

नोटः—यह नोटिस बहुत लम्बा चौड़ा है नाइयों की ओर से प्रकाशित होकर बटा था उसमें के मुख्यतम वाक्य ये हैं:—

पं० रामसहाय जी मिश्र निगमागम चन्द्रिका का हवाला देकर बतलाते हैं कि श्री पं० रेवतीप्रसाद जी ने जो काशी के पं० गोविन्द शास्त्री जी का लेख छपवाया था वह असत्य था। सनातन धर्म महामण्डल काशी के छपे हुये फार्म पर उक्त शास्त्री जी का लेख हमारे पास विद्यमान है और हम दावे के साथ कहते हैं कि जो कुछ पं० रेवतीप्रसाद जी शर्म्मा ने लिखा है सत्य है और हम फिर उसे प्रकाशित करते हैं—"ब्राह्मण होकर भी वे (नायी) अपना क्षौर कर्म अबाधित रखना चाहते हैं यह सन्तोष की बात है। रही बात ब्राह्मण आचार की, ब्राह्मण ही अपना धर्म कर्म इस कलिकाल में नहीं निबाह सके, हज्जाम कैसे निबाहेंगे। यदि इसमें वे सफल हुये तो हमें सन्तोष ही होगा"।

समीक्षा—प्रथम तो यह लेख सत्य नहीं प्रतीत होता कदाचित कुछ न कुछ इस में हेर फेर अवश्य होगा क्योंकि रेवतीप्रसाद जी के कर्तव्याकर्तव्य की पोल व पालिसी भरे गुप्त रहस्य को हम कई जगह दिखा आये हैं।

द्वितीय यदि यह सत्य भी हो तो ये व्यङ्ग वचन होंगे जैसे किसी चलते पुरजे बदमाश को साफ शब्दों में उसे बुरा न कहकर प्राय: लोग कह देते हैं कि "आप तो बडे महात्मा हैं" इस ही तरह ब्राह्मणोच्छुक लोगों को प्राय: विद्वान लोग कह देते हैं कि "आप ब्राह्मण ही नहीं किन्तु महा ब्राह्मण हैं" इस ही तरह जब नायी लोग ब्राह्मण भी बनते हैं और रोटी के लालच से हजामत को ब्राह्मण कर्म बतलाते हैं तो कदाचित् दुमानिक ऐसे व्यङ्ग वचन गोविन्द शास्त्री के होंगे तो होंगे।

यदि नाई जाति यह कहे कि नहीं तो गोविन्द शास्त्री का लेख कोई वेद का मन्त्र नहीं है जो सर्वतन्त्र सिद्धान्त हो अतएव नाइयों को कोई वेद व स्मृतियों का ऐसा मन्त्र व श्लोक दिखलाना चाहिये जैसा हम उनके शूद्रत्व व वर्णसंकरत्व प्रतिपादक प्रमाण इस ही ग्रन्थ के पृष्ठ ५२ से ६४ तक में अनेकों लिख आये हैं।

तीसरे नाइयों की पुस्तक "न्यायी वर्ण निर्णय" में रेवतीप्रसाद जी ने हमारे लेखों में से मतलब मतलब के वाक्य उठाकर व उनसे एक नया लेख बनाकर उस लेख को हमारे नाम से छपा दिया है अतएव इस से सन्देह होता है कि गोविन्द शास्त्री के असली शब्दों में कोई न कोई अक्षर का हेर फेर अवश्य किया गया होगा

नोट—नाइयों के इस विज्ञापन की शेष बातों को छोड़ दिया है—ग्रन्थ कर्ता।

देवीचरण याज्ञिक
ता ३१-१-१९२३ मायो ब्राह्मण सभा कानपुर

रघुनन्द प्रेस कानपुर।

२२—१२—२२

वन्देमातरम्

हमारे सामने एक नोटिस उपस्थित है जिस में नाई जातीय महासभा के कार्य्य को 'विरोध की जड़' बतला कर श्री पूज्य महात्मा गांधी के पवित्र नाम पर नाइयों के जातीय महासम्मेलन में बाधा करने का प्रयत्न किया गया है। हम जनता को सूचित करना चाहते हैं कि महात्मा गांधी और कांग्रेस का इस नोटिस से कोई सम्बन्ध नहीं है। कांग्रेस नाइयों के जात्योन्नति सम्बन्धी किसी कार्य्य में बाधक नहीं है और सर्व साधारण से प्रार्थना करती है कि वे भी उनकी उन्नति में बाधक न हों।

रामलाल शर्मा
मन्त्री जिला कांग्रेस कमेटी
कानपुर

नारायणप्रसाद अरोड़ा बी. ए.
मन्त्री कांग्रेस कमेटी
कानपुर

—:o:—

॥ श्री ॥

कानपुर

ता० २५-१२-२२

इस समय जब कि नाई कान्फरेंस ने कानपुर नगर में अंधेर मचा रक्खा है। हमारे सामने दोनों पक्षों के कई एक विज्ञापन उपस्थित हैं यहां तक कि शास्त्रार्थ तक का प्रश्न उठ चुका है। इन सब विज्ञापनों में सब से आश्चर्य जनक विज्ञापन वह है जो ता० २२-१२-२२ ई० को कानपुर नगर तथा जिला कांग्रेस के मंत्रियों के हस्ताक्षरों से युक्त वितरण हुवा है। उनका यह कहना कि इस विषय में महात्मा जी तथा कांग्रेस के ऊपर दोषारोपण न किया जाय सरासर उचित है। परन्तु उन की जनता के प्रति उदासीन रहने की प्रार्थना सर्वथा अनुचित है। नाई ब्राह्मण बनें और ब्राह्मण चुप रहें और क्षत्रिय तथा वैश्य उनको अपने शिरमौर बनते देख

जबान भी न हिलावें यह सलाह कहां तक उचित है इसका निर्णय जनता ही कर लेगी। किसी की अनधिकार चेष्टाओं को देख कर दूसरे याग्यों को चुपचाप बैठना ठीक नहीं। हमारा जनता के प्रति नम्र निवेदन है कि वह इस महत्व पूर्ण प्रश्न पर अपने मतानुसार अवश्य भाग लें—कांग्रेस के मंत्रियों को जनता के भावों तथा विश्वासों पर दबाव डालना हमारी सम्मति से बाहिर है।

मन्नीलाल बाजपेई

उपमंत्री—श्री कान्यकुब्ज कुमार सभा आगरा।

—— ० ——

वन्देमातरम्

प्रिय सज्जन वृन्द !

एक नोटिस कांग्रेस के मंत्रियों ने हस्ताक्षर युक्त निकाल कर जनता में एक तरह का भ्रम पैदा कर दिया है। जिन लोगों ने (हम लोगों ने) महात्मा गांधी जी का नाम देकर नोटिस निकाला था उन्होंने नाई जाति की उन्नति में बाधा डालने का कोई विचार नहीं फैलाया। न किसी भी भले आदमी का यह कर्तव्य है कि वह किसी की उन्नति में बाधा डाले, किन्तु हमने नाई जाति के धर्म की रक्षा व सत्र की रक्षा के विचार से ही वह नोटिस निकाला था। यदि कांग्रेस के मन्त्री नाइयों को ब्राह्मण बनाने ही में उनकी उन्नति समझते हैं तो इस विचार को समर्थन करने वाले शायद कोई भी सभ्य पुरुष उन्हें न मिलेंगे क्योंकि वर्ण व्यवस्था को नष्ट कर वर्णसंकर बना किसी की उन्नति कदापि सम्भव नहीं।

भवदीय
मैनेजर
श्री विन्ध्यवासिनी कार्य्यालय कानपुर

रघुनन्दन प्रेस कानपुर

॥ वन्देमातरम् ॥

प्रिय मित्रो !

घटने न देना मान को, मोह तन धन धाम का।
जो मान ही जाता रहा, तो धन रहा किस काम का॥

विरोध की जड़

देखिये सब जाति के सर्व सज्जन ध्यान दीजिये कोई कोई महाशय कहते हैं कि विरोध का समय नहीं है हम भी बहुत ठीक मानते हैं परन्तु जब कोई जाति विरोध का बीज बोकर पेड़ तैयार करे तो क्या उसमें फल न लगेंगे? जैसे नाई जाति ने नाई मेला पत्र में नाई ब्राह्मण, शर्मा, याज्ञिक लिख कर सर्व जाति के पूज्य बनकर सबका महा अपमान किया है और विचार करने से सब जाति का नुकसान भी है यह ही विरोध की जड़ पेड़ है, महात्मा गांधी जी ने सब जाति की सब जनता को प्रेम व मेल बढ़ाने को शूद्र जाति के मौरूसी धर्म की सेवा धर्म ही के नाम से, सेवा समिति क़ायम की है। यह तो नहीं बताया कि एक जाति दूसरी जाति पर चढ़ाई करे। क्या ऐसा करने से मेल व प्रेम बढ़ सकता है? कदापि नहीं हरगिज नहीं, विरोध की जड़ समाजी नायी जाति है और वही इस की जिम्मेदार भी होगी कि उसने क्यों ऐसा विरोध पत्र निकाला? जिससे सब छोटी बड़ी जाति के दिल में जोश पैदा हो और सामना करने के लिये तय्यार हो नाई मेला पत्र का हेडिंग पढ़िये—इन से उनके पत्र को पढ़कर सब जाति, जाति का एक २ पुतला विरोध करने को तय्यार होगा आदि आदि आदि।

प्रार्थयिता:—

पं० विश्वेश्वरी प्रसाद शुक्ल वैद्य	ला० बचऊलाल दलाल
" रामगोपाल वाजपेई	ला० कन्हैयालाल मुनीम
" बद्रीप्रसाद त्रिवेदी सार्टर	ला० छोटेलाल वैश्य

प० सुन्दरलाल दीक्षित इन्स्पेक्टर	ला० दयाचन्द्र अग्रवाल
,, श्यामसुन्दर तिवाड़ी	रामचरन कहार
,, शिवगोपाल पांडे	हरिबक्स बारी
,, चन्द्रभूषन वाजपेई	पराग नाई
,, व्रजकिशोर शुक्ल मुनीम	गजोधर नाई
ठाकुर फूलसिंह	श्रीराम तम्बोली वगैरह

नोट—स्थानाभाव से सब के नाम नहीं प्रकाशित किये गये हैं।

रमाप्रेस कानपुर

——:※:——

विरोध की जड़ कौन हैं

※ वन्दे मातरम् ※

आज हमारे सामने कांग्रेस कमेटी तथा जिला कांग्रेस कमेटी के मन्त्रियों के हस्ताक्षरयुक्त एक विज्ञापन ता० २२-१२-२२ का मौजूद है इस के समाधान में तीन नोटिस एक मन्नीलाल जी बाजपेई का व दूसरा श्री विन्ध्यवासिनी कार्य्यालय कानपुर का और तीसरा अन्य कई एक भद्र पुरुषों के हस्ताक्षर युक्त भी मौजूद हैं इनके अतिरिक्त कांग्रेस कमेटी कानपुर व सर्व साधारण की विज्ञप्ति के लिये हम दिखलाना चाहते हैं कि विरोध की जड़ का बीज सब से प्रथम नाइयों ने बोया है, यह उगता जाता है और ज्यों ज्यों यह बढ़ता है त्यों त्यों विरोध अधिक होता जाता है विरोध के हेतु निम्नलिखित हैं—

(१) ब्राह्मण बनने की अनधिकार चेष्टा।

(२) हिन्दु पबलिक को भ्रम में डालना।

(३) जनेऊ पहिनने का अधिकार न होने हुवे जनेऊ पहिनना।

(४) ब्राह्मण बन कर हिन्दुओं को नाना प्रकार से धर्म भ्रष्ट करना।

(५) छल कपट द्वारा ब्राह्मण बनने का उद्योग ।

(६) वेद व स्मृति आदि के प्रमाणों में उलट फेर ।

(७) वर्ण शंकर शूद्र होते हुये किताब, नोटिस, इश्तहारात आदि आदि द्वारा अपने को ब्राह्मण प्रकट करना ।

(८) अलीगढ़ अदालत से हार चुकने पर भी चुप न रहना,

(९) भारतवर्ष की सम्पूर्ण धार्मिक सभाओं व विद्वानों को शास्त्रार्थ का चेलेन्ज छपवा कर दे देना ।

(१०) पुस्तक छापकर रजिस्ट्री द्वारा हिन्दु धर्म के मुख्य मुख्य केन्द्र स्थानों को भेज देना

(११) हिन्दुओं से पैर पुजवाने की इच्छा उत्पन्न करना ।

(१२) नाई जातिको ब्राह्मण जाति का चचा वता के प्रकट करना

कानपुर कांग्रेस कमैटी के विशेष ध्यान देने योग्य

(कानपुर में नाइयों की ओर से नायी मेला के बांटे गये विज्ञापन से उद्धृत)

(१३) "जन्म से लेकर मरण पर्यन्त जितने शुभ कार्य्य होते हैं हम नायी लोग ही करते हैं" यहां यह भी लिखना चाहिये था कि "अशुभ कार्य्य भी हम नायी लोग करते हैं"

(१४) हिन्दु बिना चोटी के नहीं हो सकता, चोटी रखना नायी का काम है अर्थात् हिन्दु का बनाना नायी का काम है । इसलिये नाई नीच नहीं हो सका ।

(१५) जिन राजाओं और महाराजाओं के चरण छूना कठिन है उनके सिर पर नायी का हाथ प्रति सप्ताह कम से कम दो बार फिरता है ।

(१६) आधी गादी बैठनो माथा ऊपर हाथ महाराजाधिराज को आधी गद्दी पर बैठ कर माथे पर हाथ धरता है इस लिये नायी नीच नहीं ।

नोट—नाइयों ने यहाँ असलियत छिपाली इस आधे दोहे का पूरा विवरण इस ही पुस्तक के पृष्ठ ८१ में देखियेगा।

(१७) "ससार का गुरु ब्राह्मण ब्राह्मण का गुरु सन्यासी। जो नायी सन्यासी का मुडन करता है वह नीच नहीं हो सका" पर जो भगी सन्यासी का मैला व पिशाब उठावे वह नीच होगा या नहीं? इसका उत्तर मिलना चाहिये।

(१८) नाई लोग अपने नामों के आदि में पडित व अन्त में शर्म्मा, याज्ञिक, नायी ब्राह्मण आदि आदि उपाधियों युक्त ब्राह्मणों के से नाम बनाने लगे हैं और ब्राह्मणों को चिडाते हैं तथा हिन्दु पबलिक को धोके में डालते हैं।

(१९) नाई लोग किसी प्रसिद्ध विद्वान् व बडी सस्था के लेख में से मतलब मतलब के वाक्य उठाकर व उन्हें एकत्रित करके उस ही विद्वान् व सस्था के नाम से लेख प्रकाशित कर देते हैं कि अमुक संस्था व विद्वान् ने हमारे लिये ऐसा लिखा है।

(२०) शास्त्रीय प्रमाणों में व अर्थ में हेर फेर करके पबलिक को गडबड में डालते हैं।

(२१) हिन्दु पबलिक, महात्मा गांधीजी की आज्ञानुसार नाइयों की ओर से शास्त्रार्थ के चेलेञ्ज छपने पर भी यह समझ कर मौन्य रही कि नाइयों की सामाजिक उन्नति में बाधा न पहुंचे, परन्तु इस का फल विपरीत हुआ अर्थात् नाई जाति ने अहङ्कार में आकर विजय पताका छपवा दी जिस का भाव यह है कि भारतवर्ष में सब ने हम को ब्राह्मण मानलिया और हम से शास्त्रार्थ करने वाला कोई नहीं है।

अतएव इस तरह नाई लोग उत्पात करें, विरोध व वैमनस्य बढावें और सनातन हिन्दु धर्म पर आघात पहुचावें और हिन्दु जनता सब कुछ चुपचाप सहती रहे यह कहां तक समीचीन है?

जब नाई लोग नाना प्रकार की डींग मार रहे हैं, जब हिन्दु मात्र का अपने को गुरु पूज्य बतलाते हैं, जब हिन्दु जाति के बनाने वाले ही नाई अपने आपको बतलाते हैं,। जब सम्पूर्ण छोटे व बड़े हिन्दु मात्र को शास्त्रार्थ के लिये ताल ठोक कर ललकारते हैं, जब वे यह कहते हैं कि बड़ों बड़ों से हम जीत चुके हैं, जब किसी पूरे श्लोक व दोहे व वाक्यों में से एक आध मतलब का सा वाक्य उठाकर अपने को उच्च सिद्ध करते हैं तब ऐसी दशा में क्या हिन्दु जाति बिलकुल मुरदा है जो सनातन धर्म की रक्षा न करे और नाइयों के साथ शास्त्रार्थ करने को उद्यत न हो जाय ? और क्या हिन्दु जाति के ऐसे सुकर्तव्य को कोई भी बुरा कह सक्ता है ? कदापि नहीं ।

(ग्रन्थकर्ता)

——:०:——

अलीगढ़ वृत्तान्त

ब्राह्मण बनने वाले नाइयों की अदालत से हार

....

मुद्दई—देवी नाई (अलीगढ़ निवासी)

मुद्दाअलह:—पं० गोपीलाल सनाढ्य ब्राह्मण (अलीगढ़ निवासी)

अदालत (१) श्रीमान् रायबहादुर दुबे लक्ष्मीनारायण जी बी. ए. रईस आनरेरी मजिस्ट्रेट अलीगढ़ और

(२) श्रीमान् खानबहादुर शेख मुहम्मद यूसफ साहिब M. L. C. रईस व आनरेरी मजिस्ट्रेट अलीगढ़

मुद्दई ने गत अक्टूबर सन् १९२२ ईस्वी में उक्त दोनों आनरेरी मजिस्ट्रेट साहियान की अदालत में नालिश दायर की कि मुद्दाअलह ने मेरा जनेऊ तोड़ डाला और मुझे मारा पीटा, इसलिये मुद्दाअलह को वाजिब सजा दी जावे ।

अनन्तर मुद्दई ने अपने पक्ष के समर्थन में रेवतीप्रसाद * नाई व उनके बाप दीपचंद आगरा निवासी तथा और और गवाहों को पेश किया जिन्होंने अपने बयान में "नायी ब्राह्मण वर्ण निर्णय" और "नायी ब्राह्मण पत्र" के लेखाधार पर नाई जाति को ब्राह्मण सिद्ध करने का दुस्साहस और कुचेष्टा की। †

मुद्दआअलेह के गवाहों और श्रीमान् प० अखिलानन्द शास्त्री, कविरत्न ने मुद्दई उस के गवाहों और दीपचन्द तथा रेवतीप्रसाद नाई के इजहारों (बयानों) और कथनों का खण्डन,युक्ति युक्त स्थानीय घटना और शास्त्रीय प्रमाणों से नाई जाति को पूर्ववत् शूद्र नाई ही सिद्ध किया।

श्रीमान् प० अखिलानन्द जी शास्त्री ने नाइयों के छापे और कहे हुये सूत्रों, ऋचाओं और श्लोकों को अधूरे और आर्ष ग्रन्थों में से पूर्णतया न लिखा जाना सिद्ध किया और उन के ऊट पटांग अर्थों को भी अशास्त्रीक निर्मूल और असत्य सिद्ध किया।¶

अदालत ने चन्द पेशियों में दोनों पक्षों के बयानों और प्रमाणों को सुनकर फैसले में मुद्दई देवी नाई का दावा खारिज करदिया।

---

* आप ही "न्यायी वर्ण निर्णय" नामक पुस्तक के रचयिता हैं तथा आप व इनके पिता दोनों ही श्री ठाकुर साहब बीकानेर की सेवा में बहुकाल रह चुके हैं। (ग्रन्थकर्त्ता)

† इन्हीं के आधारानुसार नाई जाति ने भारतवर्ष की सम्पूर्ण धार्मिक सस्थाओं को शास्त्रार्थ का चैलेञ्ज दिया था और गर्वोन्नित हो विजयपताका प्रकाशित की थी अत अब अदालत के फैसले से शास्त्रार्थ की इति श्री होचुकी। (ग्रन्थकर्त्ता।)

¶ निश्चय पूर्वक ऐसा ही किया गया है कहीं कहीं तो धर्म शास्त्रों के श्लोक के मूल पाठ को ही बदलदिया तथा हमारे लेखों को भी प्रकाशित करने में छल कपट किया है। (ग्रन्थकर्त्ता)

अलीगढ़ के एक नाई के सिवाय अन्य सब नाइयों ने देवी नाई का साथ न दिया। किन्तु अदालत में देवी का जनेऊ पहन ब्राह्मण बनने की कुकृति को धिक्कारा और ऐसे ही और भी कारणों से उसे अपनी बिरादरी से पृथक् बताया।

विशेष वक्तव्य—भारतवर्ष भर के अनेक शास्त्रियों और समाचार पत्रों ने नाइयों के ब्राह्मण बनने और जनेऊ पहिनने की अनुचित शास्त्र विरुद्ध कृति का खण्डन युक्तियों और अकाट्य शास्त्र प्रमाणों द्वारा किया है।

अन्तिम प्रार्थना।

अतः भारतवर्षीय सर्व सनातनधर्मी वर्णाश्रमियों और विशेषकर इस समय कानपुर के श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल के पदाधिकारियों, सभासदों और कानपुर निवासी सर्व हिन्दु सज्जनों और समाचारपत्रों के सम्पादकों से सविनय प्रार्थना है कि वे कानपुर में बड़े दिनों में होने वाली नाइयों की सभा के सनातन धर्म नाशकारी, हिन्दुओं में फूट फैलाने वाले कुत्सित उद्योग और दुस्साहस का एक विशेष महती सभा में और अपने अपने सामयिक पत्रों में प्रबल प्रतिवाद, विरोध और और खण्डन करके समस्त सनातनधर्मियों को नाइयों की नई, अनुचित, घृणित और निन्दनीय लीला से सूचित कर देवें।

प्रकाशक—

जवाहरलाल नागर झा	सभापति श्री स० ध० सभा अलीगढ़	
श्री ज्योति स्वरूप शर्मा	मन्त्री	,,
ब्रजवल्लभ मिश्र कोषाचार्य्य	संयुक्त मन्त्री	,,
अङ्गनलाल वैश्य अग्रवाल	कोषाध्यक्ष	,,

दुर्गाशङ्कर वैंकर
मिट्ठनलाल वैश्य अग्रवाल
राधावल्लभ मेम्बर चुङ्गी
रामचन्द्र वैद्य शास्त्री
श्री वैद्य गङ्गाप्रसाद पाठक
वैद्य भूषण श्रीनिवास शर्म्मा
मुकन्दहरि द्विवेदी शास्त्री, काव्यतीर्थ, साहित्याचार्य्य
निक्कालाल गुप्त (निधीश) मुख्तार आडीटर आ० स० अलीगढ़

(१) नोट -इस ही विज्ञापन की असली नकल श्रीसनाढ्य महामण्डल के मुख्य पत्र सनाढ्योपकारक आगरा मास नवम्बर दिसम्बर सन् १९२२ में छपी है।

(२) नाई जाति के ब्राह्मण बननेकी चालको देख कर कानपुर की जनता ने इस ही विज्ञापन को मर्चेंट प्रेस कानपुर में छपवा कर सर्व साधारण में बटवाया।

——:०:——

अदालत का फैसिला

(बखत उर्दू)

नकल नम्बर ५५२ मामूली।

नकल तजवीज अदालत साहिबान ब्राञ्च मजिस्ट्रेट शहर कोल जिला अलीगढ दरजे दोयम।

नम्बर मुकद्दमा २६७ थाना कोल जुर्म दफा २९०-३२४ ताजीरातहिन्द सरकार फैज हिन्द बहादुर बजरिये देवीपरशाद मुश्तगीस ब नाम गोपीराम ब्राह्मण।

मुनफसला २५ नवम्बर सन् १९२२

(तजवीज)

मुंजानिब मुस्तग़ीस यह वाक़यात ज़ाहिर किये जाते हैं कि एक महीने से दोयक रोज़ पहिले की बात है, आठ या सात दिन के बजे थे मुश्तग़ीस पेटी हजामत बनाने को लिये जाता था, रास्ते में मुलज़िम बैठा हुआ था, उसने कहा हां जनेऊ पहिनता हूं, मुलज़िमने कहा आइना दिखादो, मुश्तग़ीस ने पेटी खोली, मुलज़िम ने पेटी से उस्तरा निकाल लिया और जनेऊ पकड़ कर काट लिया और कहा कि अभी तो जनेऊ काटा है अभी तेरी नाक काट दूंगा उस की नाक के ऊपर को हाथ लाया। उसने हाथ पकड़ लिया और उसके हाथ की छोटी उंगली कटगई, कवल उसके कुछ और वाक़यात तहरीर किये जावें ये मुनासिब मालूम होता है कि यह बताया जाये कि मिन्जानिब मुश्तग़ीस के जो इसरार था, के मजहबी तौर पर उसे इजाज़त साबित करने की दी जावे कि उसने मज़हबन इस्तहकाक जनेऊ डालने का है, मुन्जानिब मुलज़िमान भी यही कोशिश थी, हालां कि यह मामला अदालत दिवानी से ताल्लुक रखता है कि हिन्दु धर्म शास्त्र और वेदों के जरिये इस अमर की तहकीकात कर के आखीर तजवीज़ दी जावे कि कौन शख्स मजाज़ मज़हबन है और इस वजह से बहुत तज़दुल जिरह मज़हबी नुक्तिया खयाल से कही गयीं चूंकि पबलिक को बहुत ज़ियादा दिलचस्पी इस मुकदमेसे थी और हजारों की तादात इजलास में इस मुकदमे के सुनने के लिये पबलिक की होती है अदालत ने भी हालत देख कर यह मुनासिब समझा कि फरीकैन को आजादी के साथ सुबूत सफाई और जिरह की इजाज़त दे ताकि इस अर्से में तबादिला खयाल से पबलिक का जोश भी कम हो जावे बाहालत मौजूदा जब कि मुश्तग़ीस खुद इजहार करके बाद सुबूत खतम हो जाने के अदालत को मजबूर किया कि उनकी नाई पं० रेवतीपरसाद की शहादत लेली जावे—अदा-

बात इस ख्याल से कि उसको किसी किस्म की बुजदिली हो उनके पेश करने की इजाजत देदी मगर यह शहादत निहायत नाकिस मुश्तगीस के लिये साबित हुई और बजाय नफे के उसने और नुकसान मुद्दई को पहुंचाया शहादत सुबूत में मुश्तगीस खुद पेश हुआ है, और गोपाल, रेवतीपरशाद, नन्दा, चोखी पेश किये हैं मुश्तगीस और गवाहान सुबूत के शहादत में बहुत जियादा इखतलाफ हैं और गवाहान जो अव्वल मर्तबा मुश्तगीस ने पेश करने के लिये जाहिर किये थे वे नहीं पेश किये गये और बाजार के दुकानदारों को बताया है, मगर उनमें से किसी को पेश नहीं किया, गोपाल गवाह से जब जिरह हुई तो वह कुल वाकयात जो उसने बयान किये थे कहा है कि उसने महल्ले वालों से सुनी थी—उस्तरा वगैरा मारने का वाका या जनेऊ काटने का वाका उसने अपनी आंखों से नहीं देखा यह सब महल्ले वालों से सुना था, नन्दा गवाह यह मुलजिम का बिरादरी है ज़िरह में कहता है कि उसके साम्हने कोई झगड़ा नहीं हुआ भीड़ भाड़ उसने देखी थी और आकर सुना था यह और मुश्तगीस मामों फूफी के भाई हैं। चोखी यह भी मुश्तगीस का बिरादरी है और ज़िरह में कहता है कि थोड़ी देर यह ठहरा था जिस वक्त मुलज़िम ने कहा आइना दिखावो थोड़ा खड़ा हो कर चला गया—जब कि खुद गवाह कहता है कि डैगंज जहां यह घी लेने गया था दूसरा रास्ता उसके मकान से सीधा और करीब का है तो फिर उसी तरफ आने की क्या जरूरत थी आगे चलकर कहता है आधे घन्टे तक यह खड़ा रहा कुल वाकयात उसके साम्हने हुये, यह वह शख्स है जिसने नाई सभा के होने के इश्तहारात भी खुद तकसीम किये थे—रेवती परशाद गवाह मजहबी मामलात से ताल्लुक रखता है असल वाके का उसे कुछ हाल नहीं मालूम है। मुश्तगीस का फर्ज था कि पुश्त इस्तगासे पर जब उसने बयान लिखाया है अपनी चोटों का मुआइना कराना मगर उसने किसी चोट का मुआइना नहीं कराया इससे

पाया जाता है कि कोई चोट उसकी उंगली में उस वक्त नहीं थी वजुहात मजकूरा बाला अदालत के नज़दीक जुर्म साबित नहीं है लिहाजा हुकुम हुआ कि मुलजिम बरी किया जावे मिसिल दाखिल दफ्तर हो।

दस्तखत हाकिम (अंग्रेजी)

Sd. Shaikh Mohammed Usaf Khan Bahadu M. L. C. Hony. Magistrate 25-9-22

Sd. Dube Lakshmi Narayan Rai Bahadur & Hony. Magistrate 25-9-22

कातिब	मुश्राइना कुनिन्दा	अल्फाज़
Sd.	Sd.	७२०

True copy=Head copiest 26-10-22

—:*:—

❋ विद्वानों की सम्मतियें ❋

❋ श्री धर्ममूर्त्तये नमः ❋

अथ नापितौद्धत्यक्षुरिका

धर्मापत्तिमथो विलोक्य भगवान् भूदेव कष्टप्रदां।
धत्ते यः परिवर्तनं निजतनोः श्रीरामचन्द्रादिभिः॥
तन्देवं जगदीश्वरं प्रभुवरं स्तुन्वन्तु भो! भूसुराः।
ध्वस्तयै यैः परिकल्प्यतेऽधमतमैः शूद्रैश्चवृाह्मीक्रिया॥१

तेषान्तस्य च योऽधिपोऽस्ति सदसो या शूद्रतो विप्रकृत्।
य स्पृष्ट्वा नहि शुद्धिमेति मनुजस्स्नानं विना भूतले ॥
शूद्र शूद्रतम महाधमतम शूद्राधम नापित ।
सोऽयं ब्राह्मणतामुपैति हि महाशूद्रः कलेर्मायया ॥२॥

धूर्तोऽथ धरणीतलेऽथ मथितः शूद्रो महासङ्करः ।
सेव्या यस्य मताश्च सर्वमनुजा नीचोत्तमाख्याश्चये ॥
तस्माद्योविदधाति शूद्रपदतो विप्रक्रिया नापित ।
धिक्तन्मातरमेवतस्यजनक धिक्तम्मुहुर्धिक् च धिक्॥३॥

यस्योक्त मुनिनेतिहासवचनं पौराणकाद्यस्मृतौ ।
प्राप्ते कलियुगेऽतिघोर गहने वर्णा जघन्याश्चये ॥
ते सर्वे निजधर्मकर्मरहिता नैवं लभेरन् पदम् ।
सोऽथ साम्प्रतमागतोऽस्ति भगवान् कालोऽन्ययोभूतले ॥४॥

शूद्रः शूद्रतनोर्वशेन लभते नोविप्रदेह कचित् ।
बाहुल्य तपसो हि चेत्कृतवता शूद्रेण देहान्तरे ॥
देहो लभ्यत एववै त्रिभुवनस्वामी कृपादृष्टितः ।
तस्मात्पूर्णफलेन जन्मसमये जातिव्यवस्था नृणाम् ॥५॥

मातोग्रा जनकोऽथ मागध इतिख्यातिर्यदीयास्ति वै ।
जात्या संकर एव योऽस्ति प्रथितो भूमण्डले सर्वतः ॥
सोऽथ नष्टतरोऽधमोऽधमतमो यो भारवाहस्स्मृतः ।
काको वै नहि नापितोऽथ भविता स्वप्ने ऽपि विप्रक्रियः ॥६॥

रे ! रे ! सकरजातिनापित ! महापाविन् ! महीभारकृत् ! ।
भूम्यै भारमहो ददातु नहि किं ज्ञातस्त्वया पामर ! ॥

भूमीं भारतराम्विलोक्य भगवान् क्षीराब्धिकन्यापतिः।
तद्भारस्य विनाशनाय सकलान् हत्वाऽथवै वंशगान् ॥७

पुत्रान् सोदरबन्धुवर्गसहितान्पापात्मनस्तेऽनुगान्।
उद्धर्तुं निजभक्तविप्रनिवहान् कृत्वात्ममूर्त्तिं नृणाम् ॥
भूमौ स्थास्यति वासरांश्चिरतरान्धर्मप्रचाराय वै।
तस्मात्त्वं निजधर्म कर्मसहितो धर्मे स्वकीये व्रज ॥८॥

रे! रे! पामर! पादजात! जड़धीः! काकस्य किं शुक्लता।
या जातिर्विहिता पुराऽथ विधिना त्वन्मस्तके भूसुजा॥
सर्वेषां नखकेशकर्तनकरी कक्षेप्रधार्य क्षुरं।
नो तस्याः परिवर्तनेऽथ जनकस्याप्यस्ति साध्यन्तव ॥ ९॥

निवेदक—
श्री सत्यदेव शर्म्मा
श्रीराम पाठशाला कानपुर

ब्राह्मण प्रेस कानपुर

—:o:—

ब्राह्मण बनने वाले नाइयों की पुस्तक पर कलकत्ता युनिवर्सिटी के भूतपूर्व संस्कृताध्यापक की

सम्मति

'न्यायी वर्ण निर्णय' नामक लघु पुस्तक दृष्ट्वा मनसि मे पूर्ण घृणोत्पन्ना जाताबहुतरेषु स्थलेषु मन्त्रार्थं विपरीतञ्च कुत्रस्थले प्रमाणा विपरीत। सच्छूद्रौ गोप नापिताविति वचनात् नसन्ति नापिताः ब्राह्मणाः कदापि वै।

सम्मतिरत्र शास्त्रीत्युपाधिसहितस्य सोमेश्वर शर्म्मणः भूतपूर्व कालीयपत्तने सस्कृताध्यापक युनिवर्सिट्याम् —

भावार्थ.—'न्यायी वर्ण निर्णय' नामक छोटी सी पुस्तक मेरे देखने में आयी उसे देख कर मुझे इस कर्तव्य पर पूर्ण घृणा उत्पन्न हो गयी क्योंकि इस पुस्तक में बहुत सी जगह मन्त्रों का अर्थ ही उलटा कर दिया है और कहीं कहीं तो प्रमाण ही विपरीत हैं। 'सच्छूद्रौगोप नापितौ' इस वचनानुसार नाई लोग कदापि ब्राह्मण नहीं हो सकते हैं किन्तु सत् शूद्र हैं।

ह० प० सोमेश्वर शास्त्री
भूतपूर्व सस्कृताध्यापक युनिवर्सिटी कालेज
कलकत्ता

—*—

॥ श्रीः ॥

नापित जातेर्न्यायीवर्ण निर्णय नामकं पुस्तकं दृष्टम् । यद्दर्शनेनास्माभिर्निश्चितम् नापितैः स्व ब्राह्मणत्व समर्थनाय असम्बद्धमेव प्रलपितम् । यतः पुस्तकेऽस्मिन् अप्रामाणिक युक्त्या आडम्बरो रचितः । वेद शास्त्रादि सिद्धान्तानुसारेणेयं जातिः शूद्रवर्णान्तर्गतैवास्ति ।

नापित जातेर्द्विजत्व खण्डने 'नाई वर्ण मीमांसा' नामकं पुस्तकमपि दृष्टम् यस्मिन् श्रोत्रिय पं० छोटेलाल शर्म्मणा अखण्डनीय प्रमाण युक्तिभिर्नापितानां शूद्रत्व साधनेन देशस्य धर्मस्य च महती रक्षा कृताऽतः सर्वैः पण्डितस्याऽस्योपकारो न विस्मरणीयः । सम्मतिरत्र काशीं विहाय पुनर्नसीराबाद निवासिनः पं० चुन्नीलालाचार्य्य शास्त्रिणः ।

भावार्थः—नाई जाति की 'न्यायी वर्ण निर्णय' नामक पुस्तक हमने। देखी जिस के देखने से निश्चय हुआ कि नाई जाति ने अपने को ब्राह्मण सिद्ध करने में असम्बद्ध प्रलाप किया है क्योंकि इस पुस्तक में अप्रामाणिक युक्ति व आडम्बर मात्र है । वेद शास्त्रों के सिद्धान्तानुसार नाई जाति शूद्रवर्ण में है ।

नाई जाति के द्विजत्व खण्डन में 'नाई वर्ण मीमांसा' नामक पुस्तक को भी हमने देखी जिस में श्रोत्रिय पं० छोटेलाल शर्म्मा ने अकाट्य प्रमाणों व युक्तियों द्वारा नाई जाति को शूद्र सिद्ध करके देश व धर्म की बड़ी भारी रक्षा की है अतएव सम्पूर्ण सज्जन पण्डित जी के कृतज्ञ रहें—यह काशी नगरी से आये हुये नसीराबाद निवासी पं० चुन्नीलाल जी आचार्य्य शास्त्री की सम्मति है ।

—*—

धन्यवाद

इस नाई वर्ण मीमांसा के सम्बन्ध में जिन जिन सज्जनों ने सनातन धर्म की रक्षा की वे धन्यवाद के पात्र हैं इन में से विशेष उल्लेखनीय श्रीमान् पं० वृजवल्लभ जी मिश्र कोपाचार्य स्वामी वल्लभ बुकडिपो रेल रोड अलीगढ हैं। आपके धर्मभाव व उत्साह की प्रशंसा अनेकों शब्दों से न करके केवल परब्रह्म परमात्मा से प्रार्थी हैं कि वे अपनी महती कृपा से आपको सकुटुम्ब दीर्घायु करें जिससे आप द्वारा धर्म की रक्षा सदैव होती रहे।

कानपुर, अलीगढ़, लखनऊ, मेरठ और इटावा आदि आदि स्थानों के सम्पादकगण, विद्वान् व सनातन धर्म रक्षक जिन्होंने सनातन धर्म की रक्षा के लिये लेखनी उठाये वे भी धन्यवाद के पात्र हैं।

विनीत सेवक—
श्रोत्रिय प० छोटेलाल शर्म्मा

सत्यमेव जयते

पुस्तक के समाप्त होते होते हमारी दृष्टि अचानक आर्य्य समाज के एक पुराने समाचार पत्र सद्धर्म प्रचारक तारीख २७ अप्रैल सन् १९२३ के अङ्क के पृष्ठ ७ पर पड़ी। यह समाचार पत्र आर्य्यसमाज का ३५ वर्ष का एक प्रतिष्ठित पुराना पत्र है। आर्य्य-समाज व सनातन धर्म के सिद्धान्तों में केवल वर्णव्यवस्थादि पांच सात मन्तव्यों में ही भिन्नता है तदनुसार आर्य्यसमाजिक और सनातनधर्म्मी लोगों में कुछ थोडा सा धार्मिक मतभेद है अतएव यदि प्रसंग वश व अनाभुति कोई बात विपक्षी के मुख से सत्य निकल जाय तो वह बडे ही महत्व की समझी जाती है तदनुसार उक्त पत्र

ने "खाती और नापित क्यों ब्राह्मण न बनें?" ऐसा शीर्षक देकर अपनी टीका टिप्पणी की है। इसका भाव यह है कि खाती और नाई यथार्थ में ब्राह्मण नहीं हैं पर वे ब्राह्मण बनने का उद्योग करते हैं इसलिये सिद्ध हुआ कि आर्य्यसमाज भी नाई जाति को ब्राह्मण वर्ण में नहीं मानती और सनातनधर्मी भी नहीं मानते अतएव प्रतिफल यह निकला कि सत्य बात सत्य ही रहती है और विपक्षी समुदाय भी नाई जाति को ब्राह्मण वर्ण में नहीं मानता। यह अत्यानन्द की वार्ता है

निवेदन

आजकल अनेकों जातियें वेद व शास्त्रों के सिद्धान्तों पर पानी फेर कर मनमानी कार्य्यवाही करती हुई हिन्दु जाति व ब्राह्मणों का अपमान करती रहती हैं व सत्य सनातनधर्म के नाम को कालिमा लगाती हैं अतएव सनातनधर्म के विरुद्ध कहीं पर कोई पुस्तक, पेम्फलेट, लेख आदि आदि किसी के दृष्टि पड़ें तो उसकी एक प्रति तत्काल मण्डल कार्य्यालय को आने से उसका समाधान व उत्तर प्रकाशित किया जायगा और प्रेषक सज्जन का धन्यवाद भी छापा जायगा।

निवेदक

श्रोत्रिय पं० छोटेलाल शर्म्मा

महामंत्री हिन्दु धर्म वर्ण व्यवस्था मण्डल

फुलेरा जि० जयपुर।